संयोग

ई कथासभ कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटामात्र संयोग बूझल जाए ।

संयोग

कथा संग्रह

रबीन्द्र नारायण मिश्र

संयोग
(कथा संग्रह)
रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5701-497-7

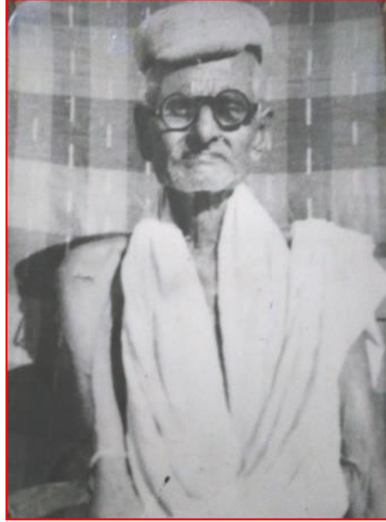
दाम : 300 रूपया

पहिल संस्करण : 2022

लेखक एवम् प्रकाशक : श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No : C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No : 6 Builders Area Greater Noida
District : Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
M-9968502767

संयोग
Collection of Stories
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण



पूज्य पितामह स्वर्गीय श्रीशरण मिश्रक **स्मृतिमे**

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

अनुक्रम

संयोग

पेनसनक बटबारा

दिनमे एगारह बजैत रहल होएतैक । एकाएक बैंकक मुख्यद्वारिपर जोरसँ हल्ला भेल । रामू, आ दुनू भाइ एक-दोसरकेँ फज्झति करैत छलाह। चारूकात लोकसभ जमा भए गेल । असलमे ओहिदिन एक तारिख रहैक आ पेनसन लेबाक हेतु गाम-गामसँ लोकसभ आएल छल । राजकुमार सेहो ओही प्रयोजनसँ बैंक आएल रहथि। हुनका संगे हुनकर दुनू बेटा रहनि । रा जकुमार बैंकसँ टाका लेलाह आ बाहर निकलबाक प्रयास कइए रहल छलाह कि हुनकर दुनू पुत्रमे बाता-बाती होबए लागल । एतबेमे हुनकर छोट पुत्र , दीनू हाथसँ टाका छिनबाक प्रयास केलनि । राजकुमार कटकटा कए टाकाक गड्डीकेँ धेने रहलाह । रामू सेहो हुनकर मदति करबाक प्रयास केलथि । ओहीक्रममे किछुटाका हाथेमे फाटि गेलैक। तकरबाद दुनू भाइमे झंझट होबए लागल । टाकाक गड्डी हाथसँ नीचाँ खसि पड़ल। राजकुमार सेहो संगे खसलाह । हुनका खसैत देखि चारूकातसँ लोकसभ दौड़ल। लोकसभकेँ दौड़ैत देखि राजकुमार हाँइ-हाँइ जमीनपर खसल टाकासभ समटए लगलाह। हुनका टाका समटैत देखि रामू आ दीनू हुनकर गट्टा धेलक आ हाथसँ सभटा टाका छिनि लेलक । ककरो ध्यान पितापर नहि गेलैक जे ओ कुन हालतिमे छथि। दुनू भाइमे जकरा जे टाका हाथ

लगलैक से छिनि कए ओहिठामसँ भागि गेल। राजकुमार ओहिना जमीनपर खसल दर्दसँ चिचिआइत रहि गेलाह ।

एहन घटना कोनो आइ पहिल बेर भेल रहैक से बात नहि छल। प्रायः सभमास एक तारिख कए बैंक पेनसन उठाबए राजकुमार जाइत छलाह । हुनका संगे हुनकर दुनू बेटा सेहो जाइत छलनि । बैंकसँ पेनसन निकालि ओ टाका लए घर नहि पहुँचि पाबथि । रस्तेमे दुनू बेटा हुनकासँ पेनसनक टाका लए लेथि । ओहि क्रममे हुनकासभकेँ आपसमे झंझटो भए जाइत छलनि । शुरुमे राजकुमार अपने दुनू बेटाकेँ पेनसनक टाका बाँटि देथि । किछु टाका अपनो राखि लेथि । मुदा ओकरासभकेँ ई बात पसिंद नहि रहैक । ओकरा सभकेँ सक रहैक जे बाबू किछु टाका नुका कए राखि लैत छथि । तेँ ओ सभ हुनकर पछोड़ धेने बैंके पहुँचए लागल। ओतहि दुनू भाइ टाका बाँटि लेथि । बाँटि की लेथि,लूटि लेथि । राजकुमार टुकुर-टुकुर तकैत रहि जाथि । एकबेर टाका हाथसँ निकलि जानि तकर बाद ओ सभ राजकुमारक कोनो परबाह नहि करैत छल । पनरह-पनरह दिनक दुनू बेटाक फाँट लगैत छल। जे जेना राखनि,जे भोजन कराबनि , ओ चुपचाप सभ सहि जाथि।

राजकुमार दिल्लीमे मिडिल इसकूलमे चौकीदारक काज करैत छलाह । नौकरीक समयमे दुनू बेटा हुनके संगे बेसीकाल रहए । राजकुमार हुनकासभकेँ उत्तम शिक्षाक प्रयास केलथि । मुदा हुनका लोकनिक मोन पढ़ाइमे नहि लागनि । जेठकाभाइ जेना-तेना मैट्रिक पास केलाह । मुदा छोटका सेहो नहि कए सकलाह। डेरामे दिन-राति कलह करैत रहैत छलाह । रामू किछु-किछु काज पकड़लनि । मुदा दीनू किछु नहि करथि। दिन-राति माए-बाबूकेँ तंग कएल करथि । राजकुमार जाबे नौकरीमे रहथि ताबे गाममे

रहबाक मौका कमेकाल होनि । हुनका गाम-घरसँ सभदिन लगाव रहनि । तेँ सोचलथि जे सेवानिवृत्तिक बाद गामे रहब । गाममे किछु जमीनो कीनलथि । मुदा तकर बाद आगू किछु नहि कए सकलाह।

नौकरीक समयमे दिल्लीमे एकटा जनता फ्लैट कीनने रहथि। जाबे नौकरी रहनि ताबे तँ अपने इसकूलेमे सुतथि । नौकरीसँ सेवानिवृत्तिक बादो ओ सएह करैत रहि गेलाह । कारण जनता फ्लैटमे हुनकर जेठका बेटा अपन पत्नीसंगे सुतैक छल । छोटका बेटा बाहर कनीकटा ओसारापर सुतैत छल । तेँ राजकुमारक हेतु फ्लैटमे जगहे नहि रहैत छल । आखिर ओ इसकूलेमे सुति रहैत छलाह । भोर भेने फ्लैटपर जइतथि । ओतए स्नान करितथि आ साइकिलसँ बिदा भए जइतथि । दिल्लीमे नित्य कतहु-ने-कतहु कोनो कार्यक्रम होइते रहैत छल । हुनका लग तकर पक्का सूचना रहैत छल । तदनुसारे ओ साइकिलसँ ओहिठाम समयपर पहुँचि जइतथि । कार्यक्रममे भाग लितथि । ओतहि जलखै-चाह होइतनि। बाँकी समयमे ओ पुस्तकालयमे बिताबथि। ओतहि बैसि कवितासभ सेहो लिखल करथि ।

कैकदिन जखन भोजनक कोनो जोगार नहि होइत छलनि तँ राजकुमार गुरुद्वारा बंगलासाहेब चलि जइतथि । ओहिठाम लंगर खइतथि ओतहि सुति जइतथि । ओढ़बाक हेतु कंबल सेहो भेटि जाइत छलनि । एकबेर दूपहर रातिमे लगमे सुतल केओ जेबीमे हाथ दए मोबाइल चोरबैत रहनि । जगले रहथि । तुरंते साकंछ भेलाह । चोरक गट्टा पकड़ि लेलनि । चोर ने आब देखलक ने ताब। जेबीसँ छूरा निकाललक आ राजकुमारक हाथमे धए मारलक । हुनकर देहसँ खूनक धार बहए लागल । ओ दर्दसँ कराहि रहल छलाह। ताबतेमे गुरुद्वाराक कर्मचारीसभक ध्यान हुनकापर पड़ल।

ओ सभ दौरल । चोरबा तँ ताबे मोबाइल लए निपत्ता भए गेल छल।

एहि तरहें संघर्ष करैत कैक साल बीति गेल । राजकुमार अस्सी सालक भए गेलथि । सरकारी नियमक अनुसार हुनकर पेनसनमे बीस प्रतिशतक बृद्धि भेलनि । ओहिसँ पाँच साल पहिने बेचलाहा पेनसन सेहो वापस आबि गेलनि । एमहर वेतन आयोगक बाद पुरनका पेनसनर सभक पेनसन सेहो बहुत बढ़ि गेलैक । कुलमिला कए राजकुमारक पेनसन दुगुनासँ बेसी भए गेल रहनि । मुदा हुनकर बेटासभक हालति खराबे होइत गेलनि । ओ सभ तरह-तरहक निसाँ करए लगलाह । दिन-राति घरमे खटपट होइते रहैत छल । एहिसभसँ तंग भए ओ सोचलाह जे चुपचाप पेनसन निकालि कए बृंदावन चलि जाएब । ओतहि कोनो आश्रममे रहि जाएब ।

ओहिदिन फेर एक तारिख छल । पेनसन लेबाक हेतु राजकुमार चुपचाप रातिएमे घरसँ निकलि गेलाह । भोर होइते हुनकर दुनूबेटा हुनका ताकए लागल । मुदा ओ कतहु नहि भेटलखिन । राजकुमार गुरुद्वारामे नुका गेल रहथि। ओहिठामसँ सोझे बैंक गेलाह । अपन पेनसन निकालि कए वापस आबि रहल छलाह कि हुनकर छोटका बेटा हुनका देखि लेलकनि । ओ तुरंत रस्ता बदलि लेलनि आ ट्रेन पकड़बाक हेतु आगू बढ़लाह । मुदा दीनू सेहो हुनकर पछोड़ केने रहल ।

राजकुमारकेँ ट्रेन दिस कुदैत देखि प्लेटफार्मपर ठाढ़ सरदारजी लपकि कए हुनकर गट्टा पकड़ि लेलक । राजकुमार जोर लगा कए थाकि गेलाह। मुदा सरदारजी ओकरा कटकटा कए धेने रहि गेलाह। ताबे ट्रेन स्थिर भए गेल छल ।

“की बात छैक? तूँ एना जान किएक दए रहल छह?”

सरदारजीके देखि ओ लजा गेलाह । लगलैक जेना ओ बड़का गलती करए जा रहल छलाह । ओएह सरदारजी राजकुमारकेँ कैक राति गुरुद्वारामे भरि पेट लंगर करओने रहथि । सुतबाक हेतु ओछाओन देने रहथि । जरुरति पड़लापर किछु टाकाक मदति सेहो कए बेर केने रहथि । स्वभाविके हुनका देखि राजकुमार थमकि गेलाह । माफी माङए लगलाह ।

“माफीक बात नहि छैक । आखिर तूँ ई काज किएक करए जा रहल छलह?”

“हमर बेटासभ हमर जीवन नरक कए देने अछि । जीबाक कोनो रस्ता नहि छोड़ने अछि ।” से कहि ओ भोकासी पाड़ि कए कानए लगलाह। सरदारजी राजकुमारकेँ अपना संगे लेने गेलखिन। आब तूँ कतहु नहि जेबह । बाँचल जिनगी गुरुद्वारामे सेवामे लगा दएह । बुझहक जे पहिलुका जीवन समाप्त भए गेल । राजकुमार हँसैत सरदारजीक संगे गुरुद्वारा चलि गेलाह ।

दोबारा बिआह

रानी आ राजन बीएमे एकहि दिन नाम लिखओने रहथि । दुनूगोटेक विषय सेहो एक्के रहनि । दुनूगोटेक गामो लगे-पासमे रहनि । तेँ पहिले मौका भेटितहि ओ सभ दोस्त बनि गेलथि। दोस्ती तेहन करमान चढ़ल जकर चर्चा कालेजमे सालो होइत रहल । ओ सभ आब बीएक अंतिम वर्षक छात्र छथि । परीक्षा भए गेल छनि। किछु दिनक बाद परीक्षाफल निकलत । ताबे ओ सभ छुट्टी मना रहल छथि । किछुगोटे तँ अपन-अपन माता-पिता लग चलि गेलाह। मुदा राजनक माता-पिता विदेश गेल छथिन आ रानीक पिताक स्वर्गबास भए गेल छनि । माए भातिजक उपनयन संस्कारक हेतु नैहर गेल छथिन । हुनकर आग्रह रहनि जे रानी सेहो ओतहि आबि जाथि । मुदा रानीकेँ मामागाम जेबाक मोने नहि होनि। जखन राजन कहलखिन जे ओ अखन दिल्लीएमे रहताह,कतहु नहि जेताह तँ रानीकेँ बहुत नीक लगलनि । ओ बजैत छथि-

“हमहु कतहु नहि जा रहल छी । बहुत दिनक बाद एहन मौका भेटल अछि जे हमसभ आफियतमे छी । पढ़ाइ-लिखाइक झंझटि नहि अछि । एहि अवसरक पूरा उपयोग कएल जाए ।”

“सही कहलहूँ ।”

“हमसभ केमहर जा रहल छी?”

“पुरना किला दिस ।”

“बहुत नीक । हमहु कैकबेर ओमहर जेबाक सोचैत रही । किलाक सटले नहरिमे नाओ खेपल जेतैक । तकर बात ओतहि कोनो बेंचपर बैसि भरि मोन गप्प करब ।”

“सही कहलहुँ । ओना तँ अबिते-जाइते समय बीति जाइत अछि । आपसमे गप्प-सप्प करबाक कोनो मौके नहि भेटैत अछि। बस गेलहुँ-अएलहुँ । ऊपरसँ खूब नीकसँ थाकिओ जाइत छी ।”

“जल्दी-जल्दी तैयार भए जाइत छी ।”

“ठीक छैक ।”

तकर बादे ओ सभ पुरना किला घुमबाक हेतु पहुँचलहुँ । किलासँ सटले नहरिमे ओ सभ नाओ खेबैत छलाह,गप्पो करैत छलाह । ऐ बीच-बीचमे ठहाका सेहो पड़ैत रहैत छल।

“हमसभ छुट्टीमे एहीठाम रहि बहुत नीक काज केलहुँ।”- राजन बजलथि ।

“केहन बढ़िआँ मौज मना रहल छी । कतहु जाइओ कए की करितहुँ? जाबे परीक्षाक परिणाम नहि बहराइत अछि, हमसभ एहिना निश्चिन्त भावे घुमैत-फिरैत समयक सदुपयोग करब ।”

“अबस्स।”

गप्प-सप्पमे दुनूगोटेक मोन ततेक अनुरक्त भए गेलनि जे सामने आबि रहल दोसर नाओकेँ नहि देखि सकलाह । ओ सभ अपना भरि बहुत प्रयास केलक,बहुत चिचिआएल । मुदा दुनूगोटेक ध्यान कतहु आओर रहनि । आखिर दुनू नाओ टकराइए गेल । राजन तँ हेलए जनैत छलाह । मुदा रानी ठामहि पानिमे गोता गेलीह। हुनकर सभक नाओ देखिते-देखिते पानिमे डुबि गेल ।

सामने बला नाओमे सबार लोकसभ सतर्क रहथि । नाओक संतुलन गड़बड़ाइते कुदि गेलाह आ बचिओ गेलाह । रानीक कतहु पते नहि चलि रहल छलनि । आब तँ राजनक हालति बहुत खराब भए गेलनि । लगपासमे आन नाओपर असबार लोकसभ सेहो अपना भरि रानीकेँ तकबामे लागि गेलाह। आखिर रानी भेटलखिन। मुदा ओ होसमे नहि रहथि । बहुत रास पानि पीबि गेल रहथि । हुनका तुरंत अस्पताल पहुँचेबाक व्योंत कएल गेल।

अस्पतालक आपातकालीन विभाग रोगीसभसँ ठसाठस भरल छल । तथापि,डाक्टरसभ रानीक हेतु कोनमे एकटा शायिकाक ओरिआन कए तुरंत इलाज शुरु केए देलाह । डाक्टरसभ दिन-राति एक कए रानीकेँ बचा लेलथि । जाबे रानी अस्पतालमे रहलीह,राजन दिन-राति हुनकर सेवामे लागल रहलाह । कैक राति सुतलाह नहि । मोनमे सदिखन एकटा अपराधवोध रहनि जे हुनके चलते ई घटना भेल। ने ओ नाओपर लापरबाही करितथि,ने एहन दुर्घटना होइत। मुदा जखन रानीक हालति सुधरलनि,ओ गप्प-सप्प करए लगलीह तँ राजनकेँ जानमे-जान अएलनि । चारिम दिन भेने रानीकेँ अस्पतालसँ छुट्टी कए देल गेलनि । तकर बाद ओ सभ छुटले कनाट प्लेसमे हनुमान मंदिर गेलाह। सवा किलो लड्डु चढ़ओलाह । हनुमानजीकेँ बहुत गोहरेलनि। फेर ओहिठामसँ निकलि घर वापस आबि गेलथि ।

ओहिदिनक घटनाक बाद राजन आ रानीक बीचमे अंतरगता बढ़िते गेलनि। कखनहु ओ सभ असगर हेबाक नामे नहि लेथि । एहि बीच परीक्षाक परिणाम सेहो बहराएल । दुनूगोटे प्रथम श्रेणीमे बीए उत्तीर्ण केलथि। तकर बाद आगू की कएल जाए? एहि चिंतामे रहथि ।

“जाबे कोनो आओर रस्ता नहि भेटैत अछि ताबे हमसभ एमएमे नाम लिखा लैत छी ।”

“जतेक पढ़ि सकी से पढ़ि ली । बादमे थोड़बे मौका भेटत ।”

“सही कहैत छी ।”

“काल्हि हमसभ संगे चलब । एमएमे नामांकनक फारम भरि देबैक।”

“ठीक छैक ।”

प्रात भेने दुनूगोटे विश्विद्यालय जा कए एमएमे नाम लिखेबाक हेतु फार्म भरि देलनि । दस दिनक बाद हुनकरसभक नाम नामांकनक हेतु चयनित विद्यार्थीक सूचीमे आबि गेलनि । दुनूगोटे बिना विलंबकेँ एमएमे नामो लिखा लेलनि।

दुनूगोटे एमएमे पढ़िते रहथि कि सरकारी बैंकमे अधिकारीक पदक हेतु विज्ञापन आएल । दुनूगोटे ओहि पदक हेतु आवेदन देलनि । एकहि संगे परीक्षा देलनि आ पासो भए गेलथि । मास दिनक भीतरे दुनूगोटेकेँ नौकरीमे पदभार ग्रहण करबाक हेतु चिठ्ठी आबि गेलनि । दुनूगोटेक प्रसन्नताक अंते नहि छल । मुदा एकटा गड़बड़ भए गेल छल । दुनूगोटेक पोस्टिंग दू सहरमे भए गेल रहनि। राजनकेँ कलकत्ता जेबाक रहनि तँ रानीकेँ बंगलोर । दुनू नीक सहर छल ,मुदा कष्टक बात ई रहैक जे हुनकासभकेँ फराक -फराक रहए पड़ितनि । किछुदिन धरि दुनूगोटे दुविधामे रहलथि। अंततोगत्वा, सोचलथि जे नौकरी छोड़ब ठीक नहि होएत । बादमे स्थानान्तरणक प्रयास करैत रहब । सएह ओ सभ केबो केलनि । आखिर ओ सभ नौकरीपर चलि गेलाह ।

राजन कोलकाता पहुँचि गेलाह आ रानी बंगलोर । दुनूगोटेकेँ सदिखन इएह मोनमे रहनि जे जल्दी सँ जल्दी स्थानान्तरण भए जाए । मुदा से होएत कोना? बैंकसभमे एहन समस्या आम बात छैक । जहाँ ककरो स्थानान्तरणक गप्प कहथिन कि कहि बैसनि-

“अहाँसभ तँ अखन शुरुए केलहुँ अछि । अखन ई सभ बात बिसरि काज करू । अखन नहि काज करब तँ कहिआ करब ।”

मुदा ओ सभ आशा बनओने रहलाह । काज करैत रहलाह आ स्थानान्तरणक प्रयासो । साल भरिक बाद राजनक स्थानान्तरण सेहो बंगलोर भए गेलनि । आब तँ दुनूगोटेकेँ जेना पाँखि लागि गेलनि । बैंकमे काज केलाक बाद जे समय भेटनि से ओ सभ संगे बिताबथि । थोड़बे दिनक बाद एकहि ठाम डेरो भेटि गेलनि । राजन आ रानीक कोठरी आमने-सामने पड़ैत छलनि । कखनहु राजन चलि जाथि तँ कखनहु रानी घुसकि जाथि । एहि तरहें हुनका लोकनिक जिनगी बहुत नीकसँ कटि रहल छलनि ।

किछु समय बाद हुनकासभकेँ आपसमे बिआह कए लेबाक इच्छा भेलनि । दुनूगोटे अपन-अपन परिवारमे चर्चा कएलनि । ओहोसभ तैयार भए गेलखिन । तकर मास दिनक बाद बंगलोरमे हुनकरसभक बिआहक आयोजन भेल । ओहि अवसरपर राजनक माता-पिता आबि गेलखिन । रानीक माए सेहो जेना-तेना पहुँचि गेलीह । आखिर,बहुत नीकसँ हुनका लोकनिक बिआह संपन्न भए गेल । ओ सभ बंगलोरमे नीक ठाम दू कोठरीक फ्लैट सेहो कीनि लेलनि आ ओहिमे चैनसँ रहए लगलाह । पाहुनसभ तँ बिआहक बादे चलि गेलथि । राजनक माता-पिता अमेरिका वापस चलि गेलथि । रानीक माए सेहो अपन गाम चलि जाए चाहथि । मुदा रानी बहुत आग्रह केलखीन-

“किछुओ दिन रहि जो । हमरासभक गृहस्थीकेँ सरिआ दे । गाम वापस जाइओ कए की करबए?”

रानीक माएकेँ ओतए रहबाक मोन नहि रहनि । मुदा रानीक दुराग्रहकेँ टारि नहि सकलथि , रहि गेलथि ।

बिआहसँ पहिने जहिना दुनूगोटेमे एक-दोसरक हेतु आतुरता रहनि से क्रमशः कम होइत गेलनि । बैंकमे काज से बहुत रहैत छल। कैकदिन तँ राजन आ रानी एक-दोसरसँ गप्पो नहि कए पाबथि । फेर दुइए कोठरीक फ्लैटमे रानीक माए सेहो रहथिन । ताहू लए कए निजताक अभाव रहिते छल ।

रानीक माए अपन गाम चलि जेबाक चर्च कए बेर केलनि । मुदा हुनका रानी रोकि लेथि । घरक माहौल देखि रानीक माए बहुत परेसान रहथि । ओ एकदिन निश्चय केलीह जे आब गाम चलिए जाएब ।

“आँखिक पाछू जे हेतैक देखल जेतैक । कम सँ कम सामनेमे ने ने देखबैक?”- से ओ सोचथि । मुदा हुनका गाम पहुँचाएत के? असगरि जा नहि सकैत छलीह आ दुनूगोटेमे सँ किनको कनीको फुरसति नहि होनि। राजन दिन-प्रतिदिन अन्तर्मुखी होइत गेलाह । रानीसँ गप्प केला कैक दिन भए जानि । घर आबथि,सुतथि । भोर होइक,बैंक चलि जाथि । मोटा-मोटी रानीओक सएह हाल रहनि । माएसँ गप्प करबाक मौका नहि भेटनि । यदि कखनहु समय रहबो करनि तँ मूडे खराब रहनि । कहबाक माने जे घरक माहौल तनावपूर्ण रहए लागल । लगबे नहि करैक जे ई ओएह रानी छथि,ओएह राजन छथि।

आखिर एकदिन रानी बैंकसँ छुट्टी लेलनि आ माए संगे गाम चलि अएलीह । राजन किछु नहि कहलखिन। ताहि स्थितिमे रहिओ नहि गेल रहथि । गाम गेलाक बाद रानी मास दिन छुट्टीएमे रहि गेलीह । तकर बाद केना-ने-केना हुनकर स्थानान्तरण भए गेलनि। एहि बेर चेन्नइसँ सए कोस फटकी कोनो ग्रामीण क्षेत्रमे हुनका काज करबाक रहनि। नौकरी तँ करबेक छलनि । तेँ ओ बिना बेसी सोच-विचारकेँ गामसँ सोझे अपन नवीन गंतव्यपर बिदा भए गेलीह । राजनकेँ एहि समाचारसँ कोनो अफसोच नहि भेलनि।

“भने चलि गेलीह । संगे रहिओ कए ओ ततेक फटकी भए गेल छलीह जे हमर सभक सम्बन्ध अर्थहीन भए गेल छल । लगबे नहि करए जे हम सभ पति-पत्नी छी।”

मोटा-मोटी इएह हाल रानीओक रहनि । चेन्नइसँ हटि कए एकटा छोटछीन गाममे एकदम एकांत भए गेल छलीह । तथापि ओ बेसी निचैन छलीह ।

एक-दोसरसँ फराक रहैत-रहैत रानी आ राजनक आपसी संवाद कम होइत गेलनि । कालान्तरमे दुनूगोटेक ध्यान एमहर-ओमहर जाए लगलनि । बात बेसी बढ़ए ताहिसँ पहिनहि ओ सभ आपसी सहमतिसँ तलाक लए लेलनि। तकर किछु दिनक बाद धरि तँ दुनूगोटेक मोन हल्लुक लगलनि । होनि जे एकटा अर्थहीन भए गेल सम्बन्धसँ छुटकारा भेल । दुनिआमे बर-कनिआक कोनो कमी छैक । सएह हेतैक तँ फेर दोसर बिआह कएल जेतैक । मुदा सोचलाहा सदिखन थोड़े होइत छैक । दुनूगोटे एहिबेर तेहन जीवन संगी ताकि रहल रहथि जाहिसँ आगू कोनो समस्या नहि होनि । जाहिसँ फेर तलाक देबाक हालति नहि बनए । दुनूक मोनमे एकटा एहन जीवनसंगीक प्रतिबिम्ब रहनि जे सर्वगुण संपन्न होएत । जे

कहिओ कोनो बात लेल झगड़ा नहि करत,जे ओएह करत जे हुनकर मोनमे हेतनि। मुदा एहन कल्पनाकेँ साकार होएब संभव नहि भए रहल छल ।

सालक-साल बीति गेल । दुनूगोटेक बिआह फेरसँ नहि भए सकल । एहन बात नहि छैक जे कोनो प्रस्ताव नहि अएलनि । मुदा ओ सभ तँ एकटा कल्पनालोकमे जीबि रहल छलाह । मोनमे जे व्यक्तिक चित्र रहनि से पृथ्वीपर नहि भेटनि । एहि तरहें दुनूगोटे एगारह साल धरि बिना बिआहले रहि गेलाह । संयोग एहन भेल जे एतेक सालक बाद दुनूगोटेक भेंट एकटा विभागीय प्रशिक्षणमे भेलनि । भेंट तँ भेलनि,मुदा समस्या छल जे आगूके बढ़त? ओना दुनूगोटेकेँ ई नीकसँ बूझा गेल रहनि जे हुनका सामने विकल्प की अछि? आखिर राजने आगू बढ़ि प्रयास केलनि । दुनूगोटेकेँ रतुका भोजनक समय गप्प-सप्प भेलनि । ओ भेंट ततेक मनोहारी लगलनि जे दुनूगोटे फेर दोसर दिन संगे बजार गेलाह । साँझमे सीनेमा सेहो देखलनि । दू सँ तीन दिनमे पूरा माहौले बदलि गेल । गप्प-सप्प केलासँ आपसी सहमति बनल । ओ सभ निर्णय केलनि जे दुनूगोटे फेरसँ बिआह करताह । भेवो कएल सएह । मास दिनक भीतरे दुनूगोटेक बिआह फेरसँ भए गेलनि। अफसोचक बात एतबे छल जे रानीक माए एहि बेरक बिआहमे नहि रहथिन। ओ किछु साल पूर्वे एहि दुनिआकेँ छोड़ि गेल रहथि । राजनक पिता तँ बाँचल रहथिन । मुदा चलबा-फिरबासँ असमर्थ रहबाक कारणे बिआह समारोहमे नहि आबि सकलखिन । हुनको माएक देहान्त भए गेल रहनि । दुनूगोटेक मोनमे एहि बातक अफसोच रहनि जे अनेरे हुनका लोकनिक माए एहि दुखक संग दुनिआ छोड़ि गेलीह । ओ सभ हिनका लोकनिक पुनर्मिलन नहि देखि सकलीह । ओ सभ

निश्चय केलनि जे आगूक जीवन नीकसँ बिताएब,मिलि-जुलि रहब। इएह हुनका लोकनिक प्रतिए सही श्रद्धांजलि होएत । ओ सभ जतए कतहु हेताह एहि बातसँ हुनकरसभक आत्मा बहुत प्रसन्न होएत ,हमरासभकेँ आशीर्वाद देत आ हमसभ सुखी जीवन जीबि सकब ।

१४.८.२०२२

समाज बदलि गेल

हमसभ दू भाइ-बहिन रही । हमर भाइ शंकर हमरासँ दू वर्षक छोट रहए । हमर बाबू सरकारी नौकरीमे रहथि । माए घर सम्हारथि। हमर परिवार आर्थिक दृष्टिए मजगूत छल । कोनो चीजक कोनो कमी नहि रहैक । अस्तु, नेनामे समय कोना बितए से किछु पता नहि चलल । दिन-राति खेल-धुप होइत रहैत छल । शुरुमे हमरा प्रतिए माए-बाबू संवेदनशील रहथि । मुदा शंकरक जन्मक बाद हुनका लोकनिक ध्यान बँटि गेलनि । ततबा धरि तँ वाजिबे छलैक। मुदा जँ जँ हमरा लोकनिक बएस बढ़ैत गेल ,ई विभेद बहुत स्पष्ट होइत गेल । हमर नाम घरे लगक एकटा सरकारी कन्या विद्यालयमे लिखाओल गेल । जखन की शंकरक नाम इलाकाक नामी पब्लिक इसकूलमे लिखाओल गेल । हमर बाबू एकाध बेर कहबो केलखिन-“एकरो नाम ओही इसकूलमे लिखा दैत छिऐक ।”

“ताहिसँ की होएत? बिआह कालमे कोनो छूट नहि होएत । टाका बचा कए राखब तँ बिआहमे मदति होएत ।” बात एतबे रहितए तखन तँ कोनो बात नहि । घरमे सेहो बात-बातमे शंकरक प्रति निर्णय होइत छल । ओ गलतिओपर रहैत तँ डाँट हमरे पड़ैत। सभ किछु कहि कए अंतमे कहि देल जाइत-“तूँ पैघ छैं । तोरा सम्हारबाक चाही ।”

हमरा मोन पड़ैत अछि जे एकदिन एकटा खेलौनाक हेतु हम दुनू भाइ-बहिन केना लड़ि गेल रही । हम कहिऐक

“खेलौना हमर अछि । हमरा लेल बाबू अनलनि अछि ।”

“हमरे कहलापर बाल-बैट बाबू अनलनि अछि । ई हमरे अछि।”

“तूँ गुड़िआ संगे खेलो । तोरा लेल ओएह खेलौना ठीक छौ ।” हम तइओ अड़ल रही । हमरा एना लड़ैत देखि माए हमरा बहुत जोरसँ चमेटा मारलक । हम जोर-जोरसँ कानए लगलहुँ । लगीचेमे बाबू सेहो रहथि । मुदा ओहो किछु नहि बजलाह । ई घटना हमर मोनकेँ तोड़ि देलक । हम एकरा कहिओ नहि बिसरि सकलहुँ ।

एहिना एकबेर हमर वार्षिक परीक्षा होबए बला छल । एकदिन पहिने साँझमे किछु पाहुनसभ आबि गेलखिन । तखनेसँ माए हमरा हुनकासभक स्वागतमे ओझरेने रहलीह । कतबो कहिअनि जे हमरा पढ़बाक अछि,काल्हि परीक्षा देबाक अछि हुनकापर कोनो असरिए नहि होनि।

“बड़ चललीह अछि पढ़एबाली । घटकसभ आएल छैक से नहि देखाइत छनि । बेटीक जिनगी नीकठाम बिआहसँ बनैत छैक, परीक्षा देलासँ नहि ।”

हम की करितहुँ? हम तैओ परीक्षामे बैसि गेलहुँ । बहुत मोसकिलसँ दोसरदिनका परीक्षामे पास नंबर आएल रहए । हमरा बहुत कष्ट भेल रहए ।

परिवारमे भोजनसँ लए कए कपरा-लत्ता ,पहिरब -ओढ़ब सभबातमे शंकरकेँ प्रमुखता देल जाइक । हमरा ई बातसभ खराब लागए । कैक बेर माएकेँ कहबो करिऐक । मुदा ओ ताहिपर कोनो ध्यान नहि दैक । सरकारी इसकूलमे हम निरंतर नीक करैत रहलहुँ। मैट्रिक प्रथम श्रेणीसँ पास केलहुँ । जखन की शंकर सभसुविधाक

अछैत मैट्रिकमे फेल भए गेल । हमर माए बाबू हमर सफलतापर ध्यान नहि गेलनि । अपितु,दिन-राति शंकरक परीक्षाफलक चिंतामे लागल रहथि । ओकरा हेतु नीक-सँ-नीक कोचिंगक ब्यवस्था कएल गेल । हम मैट्रिक पास केलाक बादो कालेजमे नाम लिखाएब पराभव भए गेल छल । बाबू कहलखिन-

"आब एकर बिआह करा देबैक । कालेजमे नाम लिखा कए की हेतैक?"

मुदा हमर मोन नहि मानलक । हम एकदिन संगी संगे कालेज गेलहुँ आ बिना ककरो पुछने आइएमे नाम लिखा लेलहुँ । जखन साँझमे घर वापस अएलहुँ तँ घरक माहौल खराब छल । हमरा देखिते माए चिचिआ उठलि-

"कालेज जा कए की हेतौक? कोनो बिआहमे मदति हेतौक? घरमे काज करबैं,गुन सिखबैं तँ सासुर बसबैं । जे कहैत छिऔक ताहिपर ध्यान दे । आब तूँ नेना नहि छैं ।"

माएक बात सुनि हम किछु जबाब नहि सकलिऐक । हमर कालेज जाएब हुनका लोकनिकेँ पसिंद नहि रहनि । ओ सभ दिन - राति प्रयास कए हमरा लेल एकटा सुखित परिवारक बर ठीक कए देलाह । हमरा बिना पुछने बिआहक दिनो ठीक कए देल गेल । जखन हमरा पता लागल ताबे तँ बरिआती पुरबारि गाम पहुँचि गेल छल । आङनमे बहुत लोककेँ अबैत-जाइत देखलिऐक तँ माएकेँ पुछलिऐक-

"बात की छैक?"

"आइ तोहर बिआह छौक। काकी लग चलि जो आ नीकसँ तैयार भए जो।"

“मुदा हम अखन बिआह नहि करए चाहैत छी । आगू पढ़ए चाहैत छी ।”

“बड़ा चललीह अछि पढ़ाइ करए । ओहिसभसँ किछु नहि हेतह? संयोगसँ नीक कथा पटि गेल अछि । खूब धनिक छैक । भरि जिनगी मौज करबैं ।”

माएक बात सुनि हम कानए लगलहुँ । हमरा कनैत देखि माए बहुत तमसा गेलि। बाबू सेहो बेरि-बेरि आङन आबथि,फेर दरबाजा चलि जाथि । लगपासक दाइ-माइसभ सेहो हमरा बूझबएमे लागि गेलीह । हारि कए हम बिआहक तैयारीमे लागि गेलहुँ ।

हमर बिआह नीकसँ संपन्न भए गेल । साल भरिक भीतरे द्विरागमन सेहो भए गेल । संगमे नान्हिटा बेटी सेहो छल। बिआहक बादो हम जेना-तेना प्राइबेटेसँ बीए कए लेने रही । शिक्षकक काज सेहो भेटैत रहए । मुदा हमर सासुरक लोकसभ खास कए हमर ससुर अड़ि गेलाह । आखिर,हम घरे धरि सिमटि कए रहि गेलहुँ । दू सालक बाद हमरा फेर एकटा बेटीए भेल। हमर सासुरक लोक बहुत परेसान रहथि । बेटा नहि होएत तँ वंश कोना चलत? बेटी तँ आन घरक लोक भेल । बिआह होइते सासुर चलि जाएत । हम जखन ई बातसभ बहुत सुनलहुँ तँ एकदिन कहिए देलिऐक-

“हमर बेटी सभ कोनो बेटासँ बेसी नीक पढ़त आ जीवनमे नीक सँ नीक स्थान प्राप्त करत ।”

हम शुरुएसँ सोचि लेलहुँ जे हमरा संगे जे भेल से एकरा संगे नहि हेबए देबैक । ओहो एहि बातकेँ समर्थन केलनि ।

मुदा बेटीसभकेँ पढ़ाएब कोनो आसान बात नहि रहैक । अपना भरि ओकरसभक नाम सहरक नीक इसकूलमे लिखा

देलिऐक । पढ़ाइ हतु जे किछु जरूरी छलैक सभटा ओरिआन कए देलिऐक । लड़कीसभक छात्रावासमे रहबाक ब्योंत सेहो कए देलिऐक । मुदा सौंसे माहौलकें बदलि देब तँ हमर वशक बात नहि छल । लड़कीसभक संगे दिन-राति किछु-ने-किछु दुर्घटना होइते रहैत छलैक । ओकरसभक सुरक्षा लए बरोबरि चिंता लागले रहैत छल । तथापि,हम साहस करैत रहलहुँ । ओ सभ बहुत नीक नंबरसँ मैट्रिकक परीक्षा पास केलक । तकरबाद ओकरसभक नाम दिल्लीक नामी कालेजमे लिखा देलिऐक ।

हमर दुनू बेटी अपन पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहल । तमाम असुविधाकें सामना करैत आगू बढ़ैत रहल । पटना,दिल्ली,लंदन धरि अपन पढ़ाइमे औअलि अबैत रहल । गामुघरक लोकसभ खिधांस करबासँ बाज नहि आबथि। जखन जकरा जे मोन होइक से बकि दैत छल ।

“दुर्र! ई सभ आब वापस थोड़े अएतैक ।”

“दुनू बहिन बहकि गेलैक । आब ओ सभ अंग्रेजेसँ बिआह कए ओतहि बसि जेतैक ।”

“आब एकरासभकें अपना समाजमे के जगह देतैक ।”

“एहन काज एकरसभक माए-बापकें नहि करबाक चाहैत छल। बेटीकें एतेक स्वतंत्र छोड़ि देबैक तखन तँ इएहसभ सुनब ।”

एहि तरहें तरह-तरहक बातसभ लोक करैत रहल । मुदा ओ दुनू बहिन अपन काजमे लागल रहल । लंदनसँ पढ़ाइ कए दिल्ली वापस आएलि । एतए सालभरि मेहनत कए आइ.ए.एसक परीक्षा पास केलक । तकरबाद तँ ओकरासभकें जएह देखए सएह प्रशंसा करए लागैत छल । आइ.ए.एसक प्रशिक्षणक बाद ओ दुनू बहिन

पटनामे काज करए लागलि । तकर बाद की कहल जाए? गामसँ ओकरासभक ओहिठाम के-के ने आबि जाइत छलाह । ओकरासँ अपन परिवारक निकटताक वर्णन करैत छलाह। किछु-ने-किछु काजो रहिते छलनि । ओ हुनकासभक सदति आदर करैत रहलनि। साल भरिक बाद माए-बाबू अपने समाजक बरसँ ओकरासभक बिआह ठीक केलाह । एहि तरहें ओसभ अपन जिला-जबारमे चर्चाक विषय बनि गेलथि । तकर बाद तँ कतेको गोटे अपन बेटीकेँ उच्चसँ उच्च शिक्षा देलथि । बेटीक समाजमे सम्मान बढ़ि गेल । जकरे देखू सएह ओकरसभक उदाहरण दैत रहैत छल । देखिते-देखिते समाजक रुखि बदलि गेल ।

23.12.2021

हम गामे रहब

नीरज सभदिन गामे रहलाह । खेती करथि । महीष-बरद राखथि । खाली समयमे मंदिरपर भजन करथि । आमक गाछीमे तरह-तरहक गाछसभ रोपने रहथि । उद्यान-गृहसँ एक-एकटा गाछ चुनि-चुनि कए अनने रहथि । जे आमक गाछ कतहु नहि भेटितए से हुनकर गाछीमे भेटि जाइत । सभसँ पहिने हुनकर कलमक आम पकनाइ शुरु होइत आ अंत-अंत धरि ओहिमे कोनो-ने-कोनो प्रकारक आम रहबे करितए । आमक गाछक अतिरिक्त ओ जामुन,लताम,सरीफा,अनारक गाछ सेहो रोपने रहथि । एकपाँतिसँ गोपीभोगक दसटा गाछ रहए । जखन शुरुएमे गोपीभोगगाछक आमसभ पाकए लगैत छल तँ सभक ध्यान ओहीपर रहैत छल । धिआ-पुतासभ तँ ओतए जाइते रहैत छल । जकरे हाथमे गछपक्कू आम अबैक से तकरे होइक । तैँ जहाँ हवा-बिहारि उठितए लोकसभ गाछी दिस दौड़ैत। सौंसे कलममे आमक पथार लागि जाइत । सभक झोरामे आम भरल रहैत । एहि तरहें आमक मास लोकसभक समय बहुत नीकसँ कटि जाइत छल । नीरज तँ ओतहि दिन-राति रहैत छलाह । स्वभाविके हुनका गाछ-पातसँ बहुत लगाव भए गेल रहनि । ओ अंत-अंत धरि ओतहि रहए चाहैत छलाह । गामसँ बाहर नहि जेबाक एकटा प्रमुख कारण इहो छल।

विकास हुनकर एकमात्र संतान रहथिन । ओ पढ़बामे तेजगर रहथि । कालांतरमे इंजिनीयर भए दिल्लीमे नौकरी करए लगलाह। ओतहि एकटा पंजाबी कनिआसँ बिआह कए लेलाह । हुनकर पत्नी

हुनके संगे पढ़ैत रहथिन। दुनूमे बहुत पटैत छलनि । जकर परिणति बिआहसँ भेल । दिल्लीक वसंतकुंजमे ओ सभ तीन कोठरीक फ्लैट कीनि लेलनि । एहि तरहें ओ दिल्लीमे नीकसँ व्यवस्थित भए गेलथि।

विकास बहुत दिनक बाद गाम आएल रहथि। दिल्लीमे पत्नी दुखिताह छलखिन । असगरे घर सम्हारब मोसकिल भए रहल छलनि । तेँ एहि बेर ओ निर्णय कए आएल रहथि जे बाबूकेँ संगे लेने जेबनि । संगे रहथिन तँ हुनकासभकेँ किछु उसास हेतनि । हुनको मोन लगतनि । गामपर तँ असगरे रहैत छथि । करवनो ककरो संगे तँ करवनो ककरो संगे साझी भए जाइत छथि।

गाममे आठ दिन रहलाक बाद आब दिल्ली वापस जेबाक तैयारीमे छलाह । वापसी यात्राक हेतु अपन पिताक टिकट सेहो लेने रहथि । असलमे आइए दुनूगोटेकेँ दिल्ली जेबाक रहनि । मुदा नीरजकेँ गाम छोड़बाक मोन नहि होनि । बेटा बहुत जोर देलखिन।

“असगरमे एहिठाम अनेरे कष्ट काटि रहल छी । दिल्लीमे सभगोटे संगे रहब । पोता-पोती संगे खेलाएब । गाममे की राखल छैक?”

नीरज मना नहि करथिन । किछु-ने-किछु बहाना बना कए टारि देथिन ।

दिल्ली जेबाक बात सुनि नीरज कलम चलि गेलाह । ओतए गाछ लग ठाढ़ होथि ,फेर बैसि जाथि । करवनो गाछसँ बतिआथि,करवनो गाछमे लटकल आमसभ देखए लागथि । जखन बड़ीकाल धरि ओ एहिना करैत रहि गेलाह आ घर वापस नहि गेलाह तँ गामपर हुनकर पुत्र विकास चिंतामे पड़ि गेलथि ।

“आखिर बात की छैक? ओ कतए चलि गेलाह? हमरा कहलथि जे तूँ तैयारी करह हम कनी घुमने अबैत छी । आब तँ जेबाक समय लगचिआ रहल अछि । मुदा हुनकर कोनो पता नहि बूझा रहल अछि ।”

विकास अपन पिताकेँ तकबाक हेतु चारूकात घुमि गेलाह मुदा ओ नहि भेटलखिन । अंतमे ओ कलम पहुँचलाह। हुनका ई बूझल रहनि जे नीरजकेँ अपन लगाओल गाछसभसँ बहुत सिनेह छनि । बातो सही निकलल। विकास हुनका गाछसँ बतिआइत देखलकनि।

“अहाँक लक्षण ठीक नहि बूझा रहल अछि । अखन तँ लोक हँसीमे कहैत अछि । एना तँ अहाँ वास्तवमे पागल भए जाएब ।”

“हम एकदम ठीक छी । मुदा दिल्ली जेबाक नामे हमर मोन गड़बड़ा रहल अछि ।”

हुनका मुँहे ई बात सुनि विकासकेँ बहुत तामस भेलनि । ओ ओहिठामसँ घुमि गेलाह । घर पहुँचि सामानसभ सरिएलथि आ दिल्ली बिदा भए गेलाह ।

विकासकेँ असगर वापस दिल्ली चलि गेलाक बाद नीरजकेँ दुख होबए लगलनि । कैकबेर होनि जे ओकर बात मानि लेबाक चाहैत छल । कैकबेर अपन निर्णय ठीके बुझाइन । एतेक दिन गाममे रहि गेलाक बाद आब हुनका कतहु जेबामे असुरक्षाभाव होइत छलनि । निःसंदेह एहिठाम केओ नहि रहनि तथापि ओ भीतरसँ मजगूत लागथि । फेर संगे भातिज,ओकर परिवार तँ रहबे करनि । हुनकर कष्ट देखि भातिज कहथिन-

"काका हमरे परिवारमे सामिल भए जाउ । हमरासभकेँ अहाँक कष्ट नहि देखल जाइत अछि ।"

जखन ओ बहुत दुराग्रह करथिन तँ ओ किछुदिन भातिजक परिवारेमे रहि जइतथि । मुदा फेर की होनि की नहि, ओ फराक भए जाथि । असलमे ओ ककरो पामोजी नहि चाहथि । कखन जलखै करब,कखन भोजन करब,कखन चाह पिअब,सभ बात अनकापर निर्भर रहैत छल । असगर रहलापर अपन जखन मोन होनि चाह बना लेथि,जखन जे मोन होनि जलखै कए लेथि । भोजन करथि,नहि करथि कोनो परबाह नहि रहैत छलनि । मुदा स्वतंत्रता तँ छलनि। दिन-राति ककरो मुँहतक्की नहि रहैत छलनि ।

एकसाल बाद फेर गर्मीक छुट्टीमे विकास गाम अएलाह । हुनकर पत्नी आ धिआ-पुतासभ संगे आएल रहथि । दुनू बेकती निर्णय कए आएल रहथि जे एहिबेर बाबूकेँ संगे अनबे करबनि । तेँ हुनको लेल वापसी यात्राक टिकट बना लेने रहथि । गाम अएलाक बाद नीरज बहुत खुस भेलाह । सोचलथि-"एतेक दिनक बाद पोता-पोतीकेँ खेलेबाक मौका भेटत ।" बातो सही । समय कोना बितए लागल से नहि बुझानि । किछुदिनमे विकासक छुट्टी समाप्त भए गेलनि। प्रातभेने हुनका वापस दिल्ली जेबाक रहनि । ओ ई बात अपन पिताकेँ कहलखिन । संगहि इहो आग्रह केलखिन जे ओहो संगे चलथि । जतबे दिन मोन लगतनि ततबे दिन रहिहथि । तकर बाद गाम वापस चलि अएताह । सभगोटे मिलि कए ततेक आग्रह केलखिन जे ओ मना नहि कए सकलाह । प्रात भेने बहुत अछता-पछता कए ओ दिल्लीक हेतु बेटा-पुतहुसभक संगे बिदा भए गेलाह। जाइत काल कलम नहि गेलाह,ने ककरो भेंट केलखिन । से एहि लेल जे कहीं फेर ओ मोहमे नहि पड़ि जाथि । नियत

समयपर कारसँ ओ सभ दरभंगा टीसन पहुँचि दिल्लीबला ट्रेनमे बैसि गेलाह । बच्चासभ बहुत खुस छल । दुनू बेकतीक खुसीक तँ अंते नहि रहनि। भितरिआ बात की छलनि की नहि से के जानए? मुदा स्पष्टतः ओ बाबूकेँ बहुत धन्यवाद दैत रहलखिन । रस्ताभरि हुनकर सेवा करैत रहलाह ।

भोर भेने ट्रेन दस बजे दिल्ली टीसनपर पहुँचि गेल । टीसनसँ डेरा टैक्सीसँ आरामसँ सभगोटे पहुँचि गेलाह। नीरजक रहबाक व्यवस्था अतिथिबला कोठरीमे कएल गेल रहनि । ओहिमे रंगीन टीभी,फ्रीज,सोफासेट सभकिछु राखल छल । ओहि कोठरीमे तरह-तरहक बिजलीक बल्बसभ लागल छल जे साँझ होइते माहौलकेँ रंगीन कए दैत छल ।

नीरज एक-दू दिन तँ नीकसँ रहलाह । मुदा तकरबाद हुनका छटपट्टी धए लेलकनि । असगर फ्लैटक ड्राइंग कोठरीमे बैसल रहथि । बच्चासभ इसकूल चलि जाए । विकास कार्यालय चलि जाथि । पुतहु संगीसभक ओहिठाम चलि जाथि । एहनमे ओ केना रहितथि? मोन परेसान भए गेलनि । कैकबेर देबाल संगे गप्प करए लगितथि । कैकबेर एकालाप करैत रहितथि । कैकबेर घंटो सुन्न भेल ओछाओनपर पड़ल रहितथि । ओ क्रमशः अवसादग्रस्त होबए लगलाह । मोन होनि जे कहुना एहि फ्लैटसँ बाहर निकलि जाइ । फ्लैटसँ बाहर निकलि कए ठाढ़ भए जाथि । जएह भेटि जानि तकरेसँ किछु-किछु बतिएबाक प्रयास करथि । एकदिन एहिना फ्लैटसँ निकलि कए सड़कपर ठाढ़ रहथि कि पाछूसँ एकटा मोटर साइकिल बला आबैत देखेलनि । ओ अचानक ओकर सामनेमे कुदि गेलाह । मोटर साइकिल हिनका पिचैत आगू बढ़ि गेल । ओ ठामहि खसलाह । मोटर साइकिल बला आगू भागि गेल ।

बड़ीकाल धरि ओ सड़कपर ओहिना पड़ल रहलाह । हुनकर देहसँ खून निकलि रहल छलनि । मुदा केओ हुनकापर ध्यान नहि देलकनि । आखिर ओतहि पड़ल-पड़ल अत्यधिक खून निकलि जेबाक कारण हुनकर मृत्यु भए गेलनि ।

बहुत कालक बाद केओ पुलिसकेँ फोन केलकैक । पुलिस हुनकर लासकेँ उठा-पुठा कए सरकारी अस्पताल लए गेल । ओतए हुनका मृत घोषित कए देल गेलनि । हुनकर लासकेँ शवगृहमे राखि देल गेल । एमहर जखन विकास अपन फ्लैटपर अएलाह तँ हुनका कतहु नहि देखि पत्नीसँ पुछलखिन-

“बाबू कतए छथि?”

“से हम की जाने गेलहुँ । हम तँ संगी संगे बजार गेल रही । लौटलहुँ तँ हिनका कतहु नहि देखलिअनि ।”

“तँ हमरा फोन किएक नहि केलहुँ ।”

“से कोनो नव बात थोड़े रहैक । ओ तँ नित्य एहिना बाहर चलि जाइत छलाह आ थोड़े कालक बाद वापसो भए जाथि । हमरा भेल जे आइओ ओहिना वापस अबैत हेताह ।”

विकास चुप्प भए गेलाह । करबे की करितथि? पुलिसमे रिपोर्ट लिखेलथि । दूपहर रातिमे थानासँ फोन अएलनि जे ओ जिला अस्पतालक शवगृह पहुँचथि । ओतए एकटा अज्ञात लोकक लास राखल अछि । नीरज ओतेक राति कए अस्पताल कोना जइतथि? पड़ोसीकेँ फोन केलखिन । मुदा ओ सभ सुति गेल रहए । आखिर असगरे अस्पतालक शवगृह पहुँचलाह । ओतए पिताक क्षत-विक्षत लास देखि ओ बहुत दुखी भए गेलथि । मुदा आब कएले की जा

सकैत छल? रातिभरि लास ओतहि रहल । ओ वापस घर आबि गेलाह ।

प्रात भेने अस्पतालसँ लास आनल गेल । लगपासक बहुत रास लोकसभ जमा भए गेलाह । किछु परिचित लोकसभ सेहो अएलखिन । सभ अपन-अपन संवेदना प्रकट केलनि आ वापस चलि गेलाह । आब की करितथि ? नीरजक जेबीसँ किछु कागज पुलिस बलाकेँ भेटल रहैक । ओहिमे ओ लिखने छलाह-

“हम स्वेच्छासँ मोटर साइकिल बलाक आगू कुदि गेल रही । एहिमे ओकर कोनो दोख नहि छैक । हमर जीवन एहिठाम जहलोसँ खराब भए गेल छल । तेँ हम जा रहल छी । हमर अंतिम संस्कार गामेमे अपने कलममे गोपीभोग गाछक तरमे कएल जाए ।”

नीरजक लास गाम वापस आनल गेल । हुनकर अंतिम इच्छाक अनुसार अंतिम संस्कार गोपीभोग आमक गाछ तरमे कएल गेल । विकास हुनकर चितामे आगि लगओलनि । चिता धू-धू कए जरि रहल छल । ओहिसँ जेना लगातार अबाज आबि रहल छल-

“हम गामे रहब । हमरा नहि लए जाह । हम कतहु नहि जाएब ।”

4.12.2021

खरखाही

देबेन्द्र बाबू सरकारी अस्पतालक निदेशक छलाह । जाहिर छैक जे हुनका आगू-पाछू डाक्टर,नर्स सभक पाँति लागल रहैत छल । जँ हुनका कनीकोटा किछु होइतनि तँ डाक्टरसभ आला लगओने तुरंत पहुँचि जाइत छलाह। निःसंदेह हुनकर ओपीडीमे रोगीक भीड़ जमा रहल होइतैक । मुदा अस्पतालक निदेशकक ओहिठाम हाजिरी लगबए हेतु सभ बेचैन भए जाइत छलाह । एहिसभसँ बचबाक हेतु देबेन्द्र बाबू अपन वा परिवारमे ककरो स्वास्थ्यक समस्याक बारेमे अस्पतालक कोनो डाक्टरक लगमे चर्चो नहि करैत छलाह । जँ किछु भेबो कएल तँ दोसर ठाम चलि जइतथि जाहिसँ इलाजो नीकसँ भए जानि आ अस्पतालो चलैत रहए ।

ओहिदिन संयोग एहन भेल जे मेडिसीन विभागक अध्यक्ष बैसले रहथि कि हुनकर डेरासँ फोन अएलनि। फोन हुनकर बेटी सुकन्या केने छलनि ।

“पापा. पापा... ।”- सुकन्याक अबाज थरथरा रहल छल । ओ परेसान बुझा रहल छलि ।

“की भेलौक?”

“मम्मी. मम्मी ।”

एहिसँ आगू ओ बाज नहि पाबए ।

“की भेलनि मम्मीकेँ से तँ बाज?”

मुदा ओ किछु नहि बाजि सकल । कनैत रहि गेलि । निदेशक महोदय चोट्टे उठलाह । हुनकर सामने कुर्सीपर बैसल मेडिसिन विभागक अध्यक्ष रायजी सेहो उठि गेलाह। निदेशकजी बिना किछु बजने कारमे बैसि गेलाह । डाक्टर राय हुनकर पछोड़ धेने कैंपस स्थित देबेन्द्र बाबूक डेरापर पहुँचि गेलाह ।

लक्ष्मी सोफापर पड़ल छलीह । किछु बाजल नहि होनि । सौंसे देह थर-थर काँपि रहल छलनि । डाक्टर राय सेहो ओतए पहुँचि चुकल छलाह । ओ डाक्टर छलाह नामे मात्रक । बेसी लंद-फंदक काजमे लागल रहैत छलाह । संस्थानमे राजनीति करैत रहैत छलाह। जतए कतहु जेबाक मौका होइक से ओ सभसँ आगूए रहैत छलाह । मुदा विद्यार्थीसभकेँ पढ़बाक काल अपनो काज कोनो कनिष्ठ सहकर्मीकेँ पकड़ा दैत छलाह । परिणाम ई भेल जे ओ डाक्टरी साफे बिसरैत गेलाह । ओना नाटक बहुत करथि । मुदा जखन जरूरी होइक तखन बहुत तनावमे पड़ि जाइत छलाह। डर होनि जे कहीं देखार ने भए जाइ । डाक्टर राय पहुँचि तँ गेल रहथि मुदा इलाज की करी से फुरेबे नहि करनि । ओ तुरंत अपन कनिष्ठ डाक्टर मोहनकेँ फोन कए सभबात कहलखिन । आखिर निदेशकजीक परिवारक बात छल । सभ काज छोड़ि कए डाक्टर मोहन निदेशकजीक बंगलापर पहुँचि गेलाह ।

पत्नीक हालति देखि देबेन्द्र बाबू बहुत परेसान भेलाह । ओ अपन बेटी सुकन्यासँ सभबात बुझिए रहल छलाह कि डाक्टर मोहन आला लगा कए निदेशकजीक पत्नीक जाँच करए लगलाह । डाक्टर साहेबक भाव -भंगिमा कने गंभीर भेल जाइत छलनि । सभ किछु जाँचि लेलाक बाद ओ बजैत छथि-

“हमरा हिसाबे तँ हिनका तुरंत गंगाराम अस्पताल लए जइअनु। कारण हिनकर समस्या बहुत गड़बड़ाएल बुझाइत अछि।”

“हद भए गेल डाक्टर मोहन । हमरासभक अछैत हिनका निजी चिकित्सक सभ लग जाए पड़नि ई कोनो उचित बात होएत?

डाक्टर मोहन चुप्प रहि गेलाह । विभागाध्यक्षक बात कोना कटितथि? आखिर हुनकर इलाज डाक्टर मोहन आ डाक्टर रायक मार्गदर्शनमे शुरु भेल । निदेशक महोदय किछु नहि बाजि सकलाह। ओहुना अपना मामिलामे लोकक बुद्धि बेसी काज नहि करैत छैक। इलाज चलैत रहल । घंटा-घंटा पर डाक्टर मोहन निदेशक महोदयक बंगलापर अबैत रहैत छलाह । मुदा फएदा किछु नहि होइत छलनि । आब की कएल जाए? भोरसँ हुनकर सभक इलाज शुरु भेल छल । दुपहर राति धरि अनवरत चलिते रहल । मुदा लक्ष्मीक हालति सुधरबाक बदलामे बिगड़िते गेलनि ।

डाक्टर राय बेर-बेर घरसँ बाहर जाथि आ अंदर आबथि । लक्ष्मीक हालति बिगड़ैत देखि हुनकर चिंता बढ़ल जा रहल छलनि। अफसोचो होनि जे ओ एहिमे अनेरे टांग अड़एलाह । भने देबेन्द्र बाबू कोनो आन ठाम इलाज करबाक व्योंतमे छलाह । मुदा आब की कएल जाए? कोना हुनकर जान बचतनि? जँ किछु भए गेलनि तखन तँ गेल घर छी । हुनका एते परेसान देखि डाक्टर मोहन हुनका कातमे बजओलखिन आ कहैत छथिन-

“सर! आबो जल्दीसँ हिनका गंगाराम अस्पताल लए जइअनु नहि तँ ई चलि जेतीह ।”

“मुदा ई बात देबेन्द्र बाबूकेँ कहतनि के?”

"हम कहबनि। हम डाक्टर छी । सही परामर्श देब हमर कर्तव्य थिक । एहिमे सोचबाक कोन बात छैक?"

"ठीक छैक तँ तूँ कहि दहुन ।"

डाक्टर मोहन देबेन्द्र बाबूकेँ एकांतमे बजेलखिन आ हुनका सभटा बात कहलखिन । हुनकर बात सुनि देबेन्द्र बाबू कानए लगलाह । हुनका एना कनैत देखि सभ बहुत चिंतामे पड़ि गेल । होइ जे की करी,की नहि?

"आब आओर देरी केलासँ कोन फएदा?"

"बात तँ ठीके कहि रहल छी ।"

सभगोटे लक्ष्मीकेँ रोगी वाहनसँ गंगाराम अस्पताल लए गेलाह। ताबे तँ हुनकर हालति बहुत खराब भए गेल रहनि । हुनका अस्पतालक मुँहथरिएपर सँ वापस कए देल गेलनि। डाक्टरसभ हुनकर पर्चीमे लिखि देलथि-"अस्पताल अएबासँ पहिनहि मरि चुकल छथि ।"

पत्नीक अचानक चलि गेलासँ देबेन्द्र बाबू बहुत दुखी रहथि । हुनका मोनमे बेर-बेर विचार आबनि-

"जँ हुनका सही समयपर गंगाराम अस्पताल अनने रहितथिन तँ साइत ओ बचि जइतथि ।"

मुदा आब ई सभ चर्चा केलासँ कोनो फएदा नहि । खरखाहीक चक्करमे पड़ि ओ सभदिनक हेतु कष्टमे पड़ि गेलाह । कष्टो एहन जकर कोनो निवारण अछिए नहि ।

29.4.2022

एहनो होइत छैक?

हमर इसकूलिआ संगी दीपक ओहिदिन हाटपर भेटि गेल । एक युगक बाद हमरा लोकनिक भेंट भेल छल । गप्प-सप्पक क्रममे परिवारोक विषयमे चर्चा होएब स्वभाविके छल,से भेल । ओही क्रममे हम अपन छोट बेटी मायाक बिआहक चर्च केलिऐक की ओ बातकेँ लपकि लेलक । कहए लागल-

"आब तोरा कतहु नहि जेबाक काज । हमर बेटा अंबरीशक संगे एकर बिआह कए दहक । हमरा एकटा बेटा आ एकटा बेटी अछि । बेटीक बिआह परुका कए लेलहुँ । एकरो बिआह भए जेतैक तँ हम निश्चिंत भए जाएब ।"

"ओ की करैत छथि?"

"बंगलोरमे साफ्टवेएर इंजिनीयरक काज कए रहल अछि ।"

"हमरा दिससँ कोनो हरजा नहि । एकबेर बरो-कनिआसँ पुछि लेल जाए । कारण बिआह तँ ओकरेसभकेँ करबाक छैक ।"

"अगिला सप्ताह हम दुनूगोटे बंगलोर चली । ओतहि इहो काज भए जाएत ।"

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार हमसभ बंगलोर पहुँचि गेलहुं । दीपक सपरिवार ओतए पहिने पहुँचि गेल छल । तकरबाद दू दिनक भीतरे सभ किछु भए गेल । बर-कनिआक सहमतिसँ बिआहक निर्णय भए गेल । हमर दुनूगोटेक गाम लगे-पासमे छल। गामक लगीचेमे मधुबनी बाजार अछि । सभकिछु आसानीसँ ओरिआन भए सकैत छल । तेँ निर्णय भेल जे बिआह गामेसँ कएल जाएत ।

बिआह ठीक भेलाक बाद हमसभ ओकर ओरिआनमे लागि गेलहुँ । देखिते-देखिते मायाक बिआहक दिन लगीच आबि गेल छल । घरमे आनंदक माहौल छल । सभ कुटुंब लोकनिकेँ नोत-हकार देल गेलनि । केओ-केओ आबिओ गेल रहथि । केओ एकाध दिनक बाद अबितथि । घर आङनकेँ खूब नीकसँ सजाओल गेल रहए । प्रायः नित्य गामक लोकसभ हाल-चाल पुछि जाइत छलाह। जकरा जे पार लागनि से मदतिओ करथि । टेंट,भोज-भात,बिआह कालक बिध,सभ वस्तुक ओरिआनमे गौंवासभ योगदान कए रहल छलाह । मुदा एक आदमीकेँ एहिसभसँ कोनो मतलब नहि रहनि । अपितु,ओ तेना फराक-फराक रहैत छलाह जेना किछु बूझले नहि होनि । ओ के छलाह? हमर बहुत लगीचक संबंधी । के? हमर जेठ भाए पशुपति । ओ सभदिनसँ दुष्ट स्वभावक लोक छलाह । बहुत दिनसँ हमरा लोकनिक संबंध ठीक नहि चलि रहल छल । तकर मूल कारण पारिवारिक संपत्तिक बटबारा छल ।

हमर पिता माएक संगे पशुपतिक परिवारमे सामिल रहैत छलाह । हुनका पशुपति मिला लेने छल -से एहि हद धरि जे ओ स्वअर्जित संपत्तिमे हमरा हिस्सो देबाक हेतु तैयार नहि छलाह । एहि बातपर कैक बेर पंचैती सेहो भेल । आपसमे झंझटि तँ होइते रहैत अछि । मुदा हमर पिताक विचार नहि बदललनि। ओ पशुपतिएटाक बात सुनथि । एकदिन तँ ओ जमीन लिखबाक हेतु पशुपतिक संगे निबंधन कार्यालय धरि पहुँचि गेलथि । हमरा पता लागल । हम तुरंत ओतए पहुँचलहुँ । गामक किछु आओर गोटे हमरा समर्थनमे ओतए पहुँचलाह । हमसभ निबंधककेँ अपन बातसभ कहलिऐक । ओ जमीनक निबंधन नहि होबए देलथि । एक बेर केओ बाहरी आदमी सभटा जमीनक अगाउ देए गेल । फेर

हल्ला भेल । पंचैती भेल । तखन जा कए बात रूकल । मुदा हमर पिताक मोन अखनहुँ नहि बदललनि अछि । ओ पशुपतिक पक्षमे किछु करबाक हेतु तैयार रहैत छथि । मुदा हमरा परिवारसँ हुनका कोनो मतलब नहि रहैत छनि । एहि कारणसँ हमरा लोकनिमे आपसी तनाव बनल रहैत अछि । कोनो-ने-कोनो बात लए कए झगड़ा होइत रहैत अछि ।

हुनकर भतीजीक बिआह हेबाक रहनि । हुनका तकर विधिवत नोत-हकारो देने रहिअनि । मुदा ओ दुनू बेकती कथी लेल एकहु बेर हमरा आङन दिस अएबो करताह । कथी लेल हालो-चाल पुछताह? उल्टे तरह-तरहक परेसानी करैत रहलाह । सदिखन अंट-संट बजैत रहैत छलाह ।

“एह! एहनो कथा कहीं कएल गेलैक अछि ।”

“आइ-काल्हि साफ्ट इंजिनीयरकेँ के पुछैत अछि?”

“जखन मंगनीक बिआह करताह तँ केहन कथा हेतनि?”

हमसभ बात अनठेने रहैत छलहुँ । मुदा ओ अपन चालिसँ मजबूर छलाह । हमसभ बेटी बिआहक तैयारीमे लागल रही । ओ तकर फएदा उठबैत एकबेर फेर हमर पितासँ जमीन लिखेबाक हेतु हुनका लेने-देने निबंधन कार्यालय पहुँचि गेलाह । हम कोनो काजे ओमहरे गेल रही । संयोगसँ हिनकासभकेँ निबंधन कार्यालयक बाहर बैसल देखि लेलिअनि । हमरा बात बुझबामे देरी नहि भेल। हमरा हिनका लोकनिक काजसँ ततेक तामस भेल जे सभ किछु बिसरा गेल । इहो बिसरा गेल जे दू दिनक बाद हमरा कन्यादान करबाक अछि।

लगीचेमे बाँसक फट्टा देखाएल । हम ने इएह देखलहुँ ने ओएह। बाँस फट्टा उठओलहुँ आ पशुपतिपर संधान केलहुँ । ओ माथपर हाथ धेने भागल । ओकरा पाछू-पाछू हमर पिता आ गबाह सेहो भगलाह । ओहूदिन निबंधनक काज रूकि गेल । मुदा पशुपतिक तामसक कोनो अंत नहि छल । हमर पिता तँ तमसाएल रहबे करथि।

ओहि दिनक बाद कैकदिन धरि गाममे ई घटनाक चर्च होइत रहल । हमरा तँ कन्यादानक दिन लगीच चल । हम ओहिमे लागि गेलहुँ । देखिते-देखिते बिआहक दिन आबि गेल । हमरा ओहिठाम भोरेसँ चहल-पहल छल । भोर होइते हलुआइसभ अपन काजमे लागि गेल । माहौलमे प्रसन्नता भरल छल । घरमे गीत-नाद भए रहल छल । दूदिन पहिनेसँ मिठाइ बनि रहल छल । भरिदिन कोनो-ने-कोन बिध होइत रहल । साँझ होइतहि बरिआतीक प्रतीक्षा होबए लागल । केओ कहैत-“बरिआतीसभ गामसँ पूब चौबटिआ लग पहुँचि गेल छथि ।”

केओ कहैत-“बरिआतीसभ पोखरिपर सुस्ता रहल छथि ।”

केओ कहैत-“हम तँ हुनकासभक संगे-संगे अएलहुँ अछि ।”

जतेक आदमी ततेक तरहक बात । थोड़े कालक बाद सरिपहुँ बरिआतीसभक आगमन भेल । फटाकासभ फूटि रहल छल । नगारा बाजि रहल छल । क्रमशः बरिआतीसभ दलानपर बनल सामिआनामे पहुँचि गेलाह । गीत-नाद शुरु छल । सभटा व्यवस्था बिल्कुल सही देखि बरिआतीसभ बहुत प्रसन्न रहथि । ओही समयमे किछुगोटे बर लग पहुँचि गेलाह । हुनकासँ तरह-तरहक प्रश्न करए गलाह । बिआहक बिध शुभ-शुभक संपन्न भेल। रातिभरि किछु-

ने-किछु होइते रहल । दोसर दिन दुपहरिआक बाद बरिआतीसभकेँ वापस जेबाक रहनि । तकर व्यवस्था भए रहल छल । संयोगसँ रतुका किछु बाँचल समानसभ पातक संगे उरिआ कए पशुपतिक दलानपर खसि पड़लनि । ओ तँ मौका ताकि रहल छलाह ,से भेटि गेलनि । तकर बाद ओ बरिआतीक सामनेमे नाना प्रकारक गारि पढ़ए लगलाह । गामक लोकसभ जखन मना केलकनि तँ आओर तमसा गेलाह । पशुपति किछुगोटेक संगे आबि ऐंठ पातसभकेँ भोजन सामग्रीक ऊपर खसा देलाह जाहिसँ बनल भोजन बेकार भए गेल । तकर बाद तँ दुनू दिस सँ महाभारत शुरु भए गेल । दुनू दिससँ लाठीक प्रहार प्रारंभ भेल । कैकगोटेक कपार फुटलैक । कैकगोटेकेँ अस्पताल पहुँचाबए पड़लैक । थोड़बे कालमे लगलैक जेना प्रलय आबि गेल होइ ।

पशुपति सिकाइत करए थाना पहुँचि गेलाह । हमरा एहि बातक जानकारी भेटल । हम नेताजीकेँ सभबात कहलिअनि । ओ तुरंत एसपीकेँ फोन केलथि । तकर बाद जे भेल से की कहू? थानेदार सदल-वल हमरा ओहिठाम पहुँचलाह । पशुपतिकेँ सभक सामनेमे दस हजार फज्झति केलकनि । गौंवासभ तँ पशुपतिसँ तमसाएल रहबे करथि । तकर बाद पुलिस पशुपतिकेँ लेने थाना चलि गेल । हमसभ निचैनसँ सभकाज केलहुँ । बरिआतीसभ भोजन कए अपन-अपन घर वापस गेलथि । मुदा कैकगोटेकेँ अनचोके लाठी लागि गेल छल । ओ सभ कैकदिन धरि ओकर इलाज करबैत रहलाह । संगहि पशुपतिक दुष्टताक चर्चा इलाकामे होइत रहल । ई बातसभ सुनि- सुनि लोकसभ एहिघटनापर अफसोच करैत,आपसमे छगुन्तासँ बजैत-“सएह एहनो होइत छैक?”(24.01.2022)

पश्चाताप

बंगलोरक एकटा फ्लैटक बाल्कनीमे ओतेक रातिमे हल्ला सुनि कए लगपासक लोक जमा भए गेल । सभकेँ ओहिठाम हल्ला सुनि बहुत आश्चर्य भेलैक । सालभरिसँ ओहिमे एकटा युवक दंपति रहि रहल छथि । कहिओ कोनो प्रकारक समस्या ककरो नहि भेलैक । तखन अचानक ओहि राति कथी लेल हल्ला होबए लगलैक? सभक मोनमे इएह प्रश्न छल । मुदा फ्लैटमे हल्ला बढ़िते जा रहल छल । ताबतेमे पुलिसक सायरन सुनबामे अएलैक। तीन-चारिटा पुलिस ऊपर चढ़ल आ फ्लैटमे दनादन पैसि गेल । लगपासक लोकसभक ध्यान ओमहरे छलैक । मुदा केओ टस सँ मस नहि भेल । लोकसभ चुपचाप देखैत रहि गेल । केओ नहि बूझि सकल जे आखिर बात छैक की?

थोड़बे कालक बाद पुलिसक जीपमे सबार भए ओहि फ्लैटसँ चारिगोटे बाहर जा रहल छलाह । पुलिसक जीप चारूगोटेकेँ थाना लेने चलि गेल । हुनकासभकेँ सामने राखल बेंचपर बैसाओल गेल। थानेदार हुनका लोकनिकेँ बुझेबाक प्रयास कए रहल छलाह । मुदा ओतहुँ ओ सभ ओहिना हल्ला करए लगलाह ।

“हिनकर बिआह हमरा संगे पहिनेसँ भेल छनि । हमसभ कोलकातामे लगपासमे रहैत छलहुँ । तखने हमरासभक बीचमे प्रेमभाव विकसित भए गेल । क्रमशः हमसभ बहुत लगीच होइत गेलहुँ । बात ततेक आगू बढ़ि गेल जे एकदिन काली मंदिरमे हमसभ बिआह कए लेलहुँ । तकर बाद न्यायालयमे विधिवत आवेदन दए हमरा लोकनिक बिआहक पंजीकरण सेहो भेल अछि । तखन ई

दोसर बिआह कोना कए सकैत छथि?"-ओ बंगाली महिला अंग्रेजीमे धराधर थानेदारकेँ कहैत गेलैक ।

"एकदम सही कहि रहल अछि अपर्णा। साल भरिसँ हमसभ हिनका ताकि रहल छलहुँ । ई दोसर बिआह केलाक बाद कोलकाता छोड़ि देलनि । मुदा इहोसभ कहीं छिपलैक अछि? से आखिर हमरासभकेँ पता लागि गेल । हिनकरसभक बंगलोरक डेराक पता सेहो जेना-तेना लागि गेल । आब अहीं कहू जे हमसभ चुप कोना रहितहुँ? आखिर हमर बेटीक जिनगीक सबाल छैक।" - बंगाली महिलाक पिता, शशिकान्त बाजल ।

"से सभ तँ ठीक छैक, मुदा एहि बातक निराकरण हेतु एना हंगामा करबाक कोन प्रयोजन छल? अहाँसभ पढ़ल-लिखल लोक छी । विधि सम्मत समाधान करबाक चाही ।"-थानेदार बाजल ।

"अहूँ हद कए रहल छी । हमरासभक की गलती अछि, से अहीं कहू? जखन ओ एकटा बिआह कए लेने छलाह तँ दोसर बिआह करबाक की औचित्य छल?"

"सभटा बात थानामे नहि फरिछा सकैत अछि । जँ अहाँ सही बाजि रहल छी तँ गगनक दोसर बिआह गैरकानूनी छनि । अहाँ न्यायालय जाउ, ओतए समाधान होएत।"

"की बात करैत छी? न्यायालय हमसभ किएक जाएब? हमरासभक कोन गलती अछि? जे हिनकासँ दोसर बेर बिआह केलक तकरा ने सोचबाक छलैक जे ओ की कए रहल अछि? ओ जे चाहए से करए। हमसभ तँ हिनका कोलकाता लए जेबनि । ओतहि सभ बातक हिसाब-किताब होएत ।"

ताबतेमे कामिनी बाजि उठलि- “हद भए गेल । बूढ़ भए अहाँ एना झूठ बजने जा रहल छी । हमरा लोकनिक बिआह कोनो गुपचुप नहि भेल अछि । समस्त समाजक उपस्थितिमे दुनू पक्षक सहमतिसँ ई काज भेल । जँ ई किछु छल केलाह तखन हिनका तकर परिणाम भोगए पड़तनि । फेर हमर पेटमे सातमासक बच्चा अछि । तकरा संगे अन्याय बरदास नहि कएल जा सकैत अछि ।”

बात बढ़िते जा रहल छल । केओ चुप रहबाक हेतु तैयार नहि छल । हारि कए थानेदार चारूगोटेकेँ हाजतिमे बंद कए देलक आ अपने कतहु खसकि गेल ।

बड़ी कालक बाद थानेदार वापस आएल । ताबे अपर्णाक पिताक कैकटा जानकार सभ सेहो थाना पहुँचि गेल छल । ओहीमे सँ केओ थानेदारकेँ कातमे लए गेल । दुनूगोटेमे किछु दूटप्पी भेलैक। तकर बाद ओ हँसैत बाहर आएल । अपन मातहत सिपाहीकेँ कहलकैक-

शशिकान्त आ अपर्णाकेँ हाजतिसँ निकाल । ओ सभ तुरंत थानेदारक आज्ञाक पालन केलक । दुनूगोटे हाजतिसँ बाहर भेल । आब हाजतिमे रहि गेल गगन आ ओकर दोसर पत्नी कामिनी ।

बाहर अबिते शशिकान्त मोछपर ताव देलक आ चिकरए लागल-

“अखनो मौका छह । सुधरि जाह । हमरासभकेँ बात नहि बढ़ेबाक अछि । हमर बेटी अपर्णाक भविष्यक सबाल अछि । तूँ संगे कोलकाता चलह । चैनसँ ओतहि नौकरी करिअह आ परिवारोक रक्षा संभव होएत। नहि तँ जहलमे सड़ि जेबह, केओ

पुछनाहर नहि हेतह । हमसभ दमखमबला लोक छी, कोनो मामुली आदमी नहि छी, से नीकसँ बूझि लएह ।”

“हमरा तँ बंगलोरक नौकरी अछि, कलकत्ता कोना जा सकैत छी?” -गगन बाजल ।

ओकरा एना बजैत देखि थानेदार चिकरल-“लाज नहि होइत छह एना बजैत? जखन तोहर बिआह भेल छलह तखन दोसर बिआह करबेक नहि चाहैक छल । गलती तँ तोरे छह । फल के भोगतैक? तूँही बाजह?”

“जेना पहिने ओतए छलह, तहिना आबो रहिअह । फेर अपर्णा तँ अपने डाक्टर अछि । नीक कमा रहल अछि । किछुदिन यदि बैसलो रहबह तँ कोनो भुखले नहि मरबह ।”- शशिकान्त बाजल ।

थानेदार शशिकान्तसँ मिलि गेल । गगनकेँ जबरदस्ती शशिकान्त आ अपर्णाक संगे कोलकाताक हबाइ जहाजपर बैसा आएल ।

एमहर कामिनी एसगरि अपन फ्लैटमे रहि गेलि । ओ सभटा बात अपन माएकेँ फोनपर कहलक । ओकर पिताक देहान्त बिआहक किछुदिन बादे भए गेल रहैक । समाचार सुनि कए कामिनीक माए बहुत चिंतामे पड़ि गेलथि । कैक बेर गगनकेँ फोन करबाक प्रयास केलथि। मुदा ओकर फोन सदिखन बंदे रहैत छलैक । आब की करितथि? गगनक माता-पितासँ संपर्क केलथि । मुदा ओहोसभ किछु नहि कए सकलथि । असलमे हुनकालोकनिकेँ एहि प्रसंगक बहुत बात पहिनेसँ पता रहनि । तथापि गगनपर दबाब दए ओकर दोसर बिआह अपन जातिमे करबा देलथि । हुनकासभकेँ

उम्मीद रहनि जे बिआहक बाद पुरना बातसभ अपने बिसरा जेतैक। गगन अपर्णासँ बिआह कए लेने छल से बात हिनकासभकेँ नहि बूझल रहनि । आब परिस्थिति हुनको सभक हाथमे नहि रहि गेल छलनि । गगनक जान बचाएब हिनकासभक हेतु बेसी महत्वपूर्ण रहनि । कोलकातासँ शशिकान्त गुंडा सभक मारफत धमकबैत रहैत छलनि । एहन परिस्थितिमे कामिनीक माए की करितथि? ओ बंगलोर पहुँचि गेलथि जाहिसँ कामिनीक रक्षा भए सकनि आ परेसानीमे ओ कोनो गलत काज नहि कए लेथि ।

बंगलोरक फ्लैटमे एसगरि कामिनीकेँ बरोबरि बीतलाहा बात सभ मोन पड़ैत रहैत छलनि । केना गगन संगे हुनकर दोस्ती मधुबनीक इसकूलमे शुरु भेल रहनि । केना गगन कोनो-ने-कोनो बहाना बना कए कामिनीसँ भेंट करए हुनकर डेरापर चलि अबैत छल । केना कामिनीक माए-बाबू गगनक व्यवहारसँ प्रभावित होइत गेलाह । केना ओ सभ गगनकेँ कोलकाता चलि गेलापर दुखि भेल रहथि । एक-एकटा बात मोन पड़ैत रहलनि । जखन गगन संगे हुनकर बिआहक चर्च कामिनीक पिता केने रहथि तँ ओ कतेक खुस भेल रहथि । गगनक माता-पिता तँ एकहि बेरमे एहि प्रस्तावकेँ मानि लेने रहथि । गगनक स्वीकृति तँ रहबे करनि । मुदा कामिनीक सभटा स्वप्न ध्वस्त भए गेल छल । ओ दिन-राति बंगलोरक फ्लैटमे सएहसभ सोचैत-सोचैत परेसान भए गेल छलि । माएकेँ ओतए आबि गेलाक बाद ओकरा उसास जरूर भेलैक मुदा मूल समस्या तँ जस-के-तस छल । ऊपरसँ मास दिनक भीतरे ओकरा संतान होनहारी सेहो रहैक । ओकर की भविष्य होएत? ई प्रश्न हुनकर मोनमे बेरि-बेरि उठैत रहैत छल । जबाब किछु फुराइते नहि छलैक? ओ कइओ की सकैत छलि?

कामिनीक माए ओकरा बूझबैत रहैत छलखिन । कैक बेर कहबो केलखिन जे गामे चल । आब एहि ठाम की राखल छैक? मुदा कामिनीकेँ अखनो होइक जे गगन घुरि आएत । साइत ओ अपन बातपर अड़ि सकत । मुदा से सभ किछु नहि भेलैक । मास दिनक बाद कामिनीकेँ एकटा बेटाक जन्म भेलैक । ओ देखबामे अनमन अपन बापे सन छल । नेनाकेँ देखि कए कामिनीकेँ जेना सभ दुख बिसरा गेलैक । दुनू माए-बेटी दिन-राति ओकरे सेवामे लागल रहैत छल । ओ सभ ई समाचार गगनकेँ देबाक बहुत प्रयास केलक । मुदा ओकर फोन करवनो लगबे नहि करैक । हारि कए कामिनीक माए गगनक माता-पिताकेँ फोन केलथि । हुनका संतानक जन्मक सूचना देलखिन । पौत्रक जन्मक समाचार सुनि ओ सभ बहुत प्रसन्न भेलथि । मुदा ताहिसँ आगू किछु नहि कए सकलथि। गगनपर हुनकोसभक कोनो वश नहि चलि रहल छलनि। ओ पूर्णतःअपर्णाक कब्जामे भए गेल रहथि ।

आखिर एकदिन कामिनी अपन माएक संगे नेनाक लेने कोलकाता पहुँचलि । सोचने रहए जे ओतए गगनसँ भेंट भए सकतैक । ओ अपन बेटाकेँ जरूर स्वीकार करत । ओकरा देखितहि ओकर मोन जरूर बदलि जेतैक आ एक बेर फेर कामिनीक गृहस्थी बसि जेतैक । ओ गगनकेँ माफ कए देत। सभ बात बिसरि जाएत आ खुसी-खुसी आगूक जीवन बिता सकत । मुदा से भेलैक नहि । जेना-तेना ओ गगनके कोलकाता डेरापर पहुँचि तँ गेल , मुदा गगन नहि भेटलैक । संयोगसँ लगीचेमे रहि रहल गगनक पुरान दोस्त भेटि गेलैक । ओ कहलकैक- “गगन आ अपर्णा तँ दस दिन पहिने अमेरिका चलि गेल । ओकरा दुनू बेकतीकेँ ओतहि काज भेटि गेलैक अछि ।”

कामिनी माएक संगे चुप्पे गाम लौटि गेलि। गाम अएलाक बाद थोड़े दिन तँ कामिनी बहुत परेसान छलि । फेर बेटाक मुँह देखि-देखि साहस केलक । अपन दरबजेपर छोट-छोट बच्चासभकेँ पढ़बए लागलि । क्रमशः ओकर इसकूलमे विद्यार्थीक संख्यामे इजाफा होइत गेलैक । लगपासक गामसभसँ विद्यार्थी ओहिठाम आबए लागल । ओकर यश इलाकामे पसरि गेल । दिनराति मेहनति कए ओ पूर्ण स्वावलबी भए गेलि ।

समय बीति गेल । कामिनी आत्मसम्मानसँ जीबाक सभटा ओरिआन कए लेलक । ओकर एकमात्र पुत्र कालेजमे पढ़ि रहल छलैक । ओ परीक्षासभमे निरंतर नीक करैत छल । कामिनीकेँ समाजमे बहुत प्रतिष्ठा रहैक । ओकर विद्यार्थीसभ उच्चपदसभपर कार्यरत छल । मुदा गगनक जीवन सभकिछु अछैतो ठहरि गेल रहैक । ओ सभ अमेरिकामे रहि अकूत संपत्ति बनओलक जरूर मोदा एकटा संतान बिना सभ व्यर्थ लगैत छलैक । कामिनीक सभ समाचार ओकरासभकेँ पता लगैत रहैत छलैक । ओकरासभकेँ इहो बूझल रहैक जे ओकर बेटा बहुत मेधावी छैक। सभकिछु अछैतो संतानहीनताक कारण गगन आ अपर्णाकेँ अमेरिकामे आब मोन नहि लगैत छलैक । ओ सभ एकदिन अपन देश घुरि जेबाक निश्चय केलक ।

गगनकेँ अपन व्यवहारपर बहुत पश्चाताप भए रहल छलैक । ओ कामिनीसँ भेंट कए क्षमा मांगए चाहैत छल। कैक सालक बाद गगन विदेशसँ घुरि आएल । अपर्णा सेहो ओकरा संगे छलि । वापस आबि ओ सभ कामिनीसँ भेंट करए ओकर गामो पहुँचि गेल। गगन बहुत प्रयास केलक जे कामिनी ओकरा माफ कए दैक। ओकरा संगे अमेरिका चलैक। अपन बेटाकेँ ओ अमेरिकाक अपन

अकूत संपत्तिक उत्तराधिकारी बना सकए । मुदा कामिनी नहि मानलकैक । ओकरासँ भेंटो करबाक हेतु तैयार नहि भेलैक । ओकर स्वाभिमान एहि लेल कदापि अनुमति नहि देलकैक । आखिर, गगन जहिना आएल छल तहिना अपर्णा संगे खाली हाथ अमेरिका वापस चलि गेल।

8.1.2022

गामक इज्जति

"एहन भइए नहि सकैत अछि ।"

"से की?"

"हमरासभक अछैत अपन समाजक बेटी अजातिमे बिआह कए लेत आ हमसभ मुर्दा भेल देखैत रहब ।"

"तँ एहिमे हम तूँ की करबैक? जखन दुनू आपसमे मोन बना लेने छैक तखन केओ की कए सकैत अछि? जखन मिआ बीबी राजी तँ की करताह काजी? "

"तोरो माथा भसिआ रहल छह? ई कोन गाम छैक से ओकरा जनतबमे हेबाक चाही । लाठीक डरे भूत पड़ाए । चारि लाठी जखने ओहि छौंड़ाकेँ लगतैक,सभ बात अपने बूझएमे आबि जेतैक ।"

"हमरा ई नहि बूझएमे आबि रहल अछि जे केओ ककरो संग दोस्ती करैत छैक, कि स्वेच्छासँ बिआह करैत छैक तँ एहिमे तोरा की परेसानी छह? तूँ अनेरे आमिल किएक पीने छह? एहन-एहन घटना आब कोनो नव बात नहि छैक । आइ-काल्हि तँ ई सभ होइते रहैत छैक। तूँ ककरा-ककरा सुधारबहक ।"

"जतए जे होइत छैक से होइत हेतैक मुदा महारपुरमे ई नहि हेतैक ।"

"शांत माथासँ सभ बात सोचि लएह । समय-साल बहुत खराब भए गेल छैक । कानून ओकरेसभक पक्षमे छैक । एहन ने होअए जे हमहीसभ परेसानीमे पड़ि जाइ । ओना तूँ जे करबह ताहिमे हम संग देबे करबह ।"

हरिनाथ आ मोहन आपसमे इएहसभ गप्प-सप्प करैत छल की चाह आबि गेलैक । दुनूगोटेकैं चाह पीबैत देखि थोड़बे कालमे ओतए किछुगोटे आओर आबि गेलाह । हुनकोसभ लेल चाह आबि गेल। ओना भोरुका उखरा हरिनाथक ओहिठाम दस-बीसगोटेक गोष्ठी होइते छल । पहिनेसँ चाह तैयार रहैत छलैक । लोक अबैत गेल, ओकरासभक हाथमे चाह पहुँचैत गेल। चाहक संगे गप्प-सप्प सेहो होइते छल।

हरिनाथक आइ-काल्हि इलाकामे चलती छलैक । पटना,दरभंगा,मधुबनी जतए जकरा जे काज होइक से ओ फटाक दए करबा दैत छल। मंत्रीसँ लए कए संत्री धरि ओकर जेबीमे छलैक। मंत्रीजी जखन करखनो क्षेत्रमे अबितथि तँ ओकरा ओहिठाम अबिते छलाह । मंत्रीजीक संगे कैकटा हाकिमसभक आवागमन सेहो होइते रहैत छल । आर्थिक रूपसँ सेहो ओ बहुत मजगूत भए गेल छल । किसिम-किसिमक काज-धंधासँ आमदनी करबाक लुरि ओकरा छलैक । एहिसभसँ समाजमे ओकर बहुत धाक छलैक । नीक-बेजाए जे किछु ओ कए दैक, तकर प्रतिरोध करबाक साहस ककरो नहि रहैक ।

मोहन हरिनाथक प्रमुख समर्थक छलैक । लंठै ओकर मूल पेशा रहैक । मंत्रीजी जाबे एमहर रहितथि ताबे मोहन हुनका छाया जकाँ पछोड़ केने रहैत छल । एहिसँ दुनूगोटेकैं फएदा होइत छलनि। मोहनसँ केओ सोझा-सोझी झंझट नहि करैत छल । हरिनाथकैं मोहन आ मोहनकैं हरिनाथ लस्सा जकाँ पकड़ने रहैत छल ।

चाहक चौपाल चलि रहल छलैक । सभ आपसमे तरह-तरहक समाचारक आदान-प्रदान कए रहल छल । एक तँ भोरुका समय

,ताहिपरसँ भफाइत चाहक चुस्की। माहौल आनन्दमय छल । एतबेमे एकटा मोटर साइकिलपर एकटा युवक आ कन्या जाइत देखेलेक ।

“किछु देखलहक?”-मोहन बाजल ।

“से कोनो हम आन्हर छी ।”

“आन्हर तँ गौंवासभ भेल अछि । अजाति छौंड़ा सरेआम एहिटोलक बेटीकेँ उठा लेलक आ सभ देखैत रहि गेल ।”

“से तँ बूझलिऐक मुदा समाधान?”

“समाधान, समाधान चिचिएलासँ थोड़बे काज होइत छैक?”

“तेँ ने पुछलिअह। आखिर हमसभ की करी?”

“करी की?”

“चारूगोटे जो आ ओहि कनिआँकेँ घिचने चलि आबै । आगू हम देखि लेब ।”

हरिनाथकेँ एतेक कहबाक देरी छल । ओहिठाम चाह पीबि रहल लठैतसभ हथिआर उठओलक आ दौड़ल । हरिनाथ थाना पहुँचल आ थानेदारसँ असगरमे किछु बतिआएल । किछुकालक बाद दुनूगोटे एकहि मोटर साइकिलपर बैसि ओही टोल दिस बिदा भेल । पाछू-पाछू किछु आओर पुलिससभ सेहो बिदा भेल ।

मोहन,हरिनाथ किछु गौंवासभक सहयोगसँ कतहुसँ एकटा सजातीय बरकेँ तकलक । बिआह ठीक भए गेल । साँझमे सएसँ बेसीए बरिआती आएल । कोनो बरिआती वा बरकेँ किछु हवा नहि लगलैक । नीकसँ बिआह भए गेलैक । बरिआतीसभक संगे सरिआतीसभक सेहो नीकसँ स्वागत कएल गेलनि । सभगोटे बहुत

प्रसन्न छलाह । हरिनाथ आ मोहनक प्रयास सफल भेल । ताहि हेतु ओ सभ बहुत गौरवान्वित अनुभव कए रहल छलाह । आखिर एकटा स्वजातीय कन्याकेँ अजातिमे बिआह करबासँ बचा लेने छलाह । मुदा कनिआँक मोन बेचैन छल । ओकर आँखिसँ नोर झहरि रहल छल । ओकर ई मनोदशाकेँ देखि बर बहुत चिंतित भए गेल। ओ कनिआँकेँ पुछलकैक-

"बात की छैक? अहाँ एना किएक कानि रहल छी?"

हम एकटा अजाति पुरुषसँ बहुत दिनसँ प्रेम करैत छी । ओ हमर इसकूलिआ संगी अछि । कहि नहि कोना खेल-खेलमे हमसभ एक-दोसरकेँ दोस्त बनि गेलहुँ ? कोना प्रेम करए लगलहुँ? ई सभ कोनो एकदिने नहि भेल । सालक-साल ई सभ चलैत रहल । हम ओकरा ओहिठाम जाइत छलहुँ । ओहो हमरा ओहिठाम अबैत छल। हमरा लेल किछु-किछु उपहार सेहो अनैत छल । हमर माए-बाप कहिओ ओकरा मना नहि केलखिन । अपितु,जखन ओ हमरा लेल मोबाइल फोन अनने रहए तँ सभसँ पहिने हमर बाबूए ओहि फोनसँ गप्प केने रहथि । गामोमे ककरो एहि बातसँ कोनो परेसानी नहि रहैक । मुदा कालक्रमे गामक किछु बलंट लोकसभ हमर पाछू पड़ि गेल । हमरा तरह-तरहक प्रलोभन देबए लागल । मुदा हम ओकरासभकेँ कहिओ मोजर नहि केलिऐक । ताहि बातसँ ओ सभ हमरासँ तमसा गेल आ ओलि चुकेबाक हेतु ब्योंत करए लागल । तकर बाद तँ जे सभ भेल से तँ देखिए रहल छी ।

"मुदा अहाँ चाहैत की छी? "

"हम अपन प्रेमीक संगे रहए चाहैत छी । हम हुनका संगे बिआह कए चुकल छी आ संगे रहलो छी । ई सभ जबरदस्ती हमर बिआह अहाँ संगे करबा रहल अछि ।"

बर नीक लोक छल । एहि फसादमे नहि पड़ल । ओ तुरंत अपन निर्णय सुना देलकैक-

" हमरा दिससँ कोनो आपत्ति नहि अछि । हम स्वयं एहिमे नहि पड़ए चाहैत छी । अहाँ जाहीमे प्रसन्न रही सएह करू ।

अहाँ अपन प्रेमीकेँ बजा लिअनु आ हुनके संगे चलि जाउ ।"

बर अपन मोबाइल फोन देलकैक । कनिआँ ओकरे फोनसँ अपन प्रेमीकेँ बजओलक । ओ तुरंते आबिओ गेलैक । दुनूगोटे रातिएमे मोटर साइकलसँ बिदा भए गेल । जहन फरीछ भेलैक तँ बर असगरे घरसँ बाहर भेल । घरक लोकसभ कनिआँकेँ ताकए लागल । जाबे बात पसरैत ताबे तँ बरो ओहिठामसँ घसकि गेल छल । हरिनाथ आ मोहनकेँ सेहो ई बातसभक पता लगलैक । ओ सभ तामसे आगि भए गेल छल । एक बेर फेर किछु लठैतसभक संगे प्रेमीक घर पहुँचि गेल । अपना भरि प्रेमी कनिआँकेँ दोसर घरमे नुका देने रहैक । मुदा हरिनाथ आ ओकर समर्थकसभ ततेक हल्ला केलक जे प्रेमीक लगपासक लोकसभ डरा गेल ।

पुलिस घरक बाहर ठाढ़ रहल आ लठैतसभ ओकरा घरमे पैसि गेल । जे जेमहर भेटलैक,तकरा धुनैत गेल । मुदा ओ कनिआँ कतहु ने देखेलैक। ओ सभ चारूकात ओकरा तकैत छल । एतबेमे संदूकमे बड़ीजोरसँ केओ छिकलक ।

“पकड़ा गेलौ। एहीमे ओ कनिआँ नुकाएल अछि ।”

कुरहरिसँ सन्दूककेँ तोड़ि देल गेल । ओ कनिआँ वास्तवमे संदूकेमे नुकाओल गेल रहए । मुदा अचानक भेल छिक्का सभटा गड़बड़ा देलकैक । कनिआँकेँ संदूकमेसँ निकालल गेल । ओ बाहर अबिते कहैत छैक-

"हम स्वेच्छासँ हिनका संगे छी । हमरा ई पसंद छथि । हम हिनकेसँ बिआह करब ।"

"यदि जान बचेबाक होउक तँ चुपचाप हमरासभक संगे बिदा भए जो ।"

"हम किन्नहु नहि जाएब । हम एतहि रहब, एतहि मरि जाएब ।"

"निर्लज्ज । केहन थेथर अछि । कनीको लाज-धाक नहि । कनीको अपन समाजक, माए-बापक प्रतिष्ठाक ख्याल नहि ।"

तकरबाद चारि-पाँचटा लंठसभ ओकरा पकड़लक आ जबरदस्ती लगमे ठाढ़ जीपमे बैसा देलक । चारूकातसँ पुलिस बन्दूक तनने छलैक । जीप खुजि गेल । पाछू -पाछू लंठसभ मोटर साइकिलपर बिदा भेल । ककरो साहस नहि भेलैक जे केओ ओकरासभक प्रतिरोध करए,किछु बाजए ।

जीप आगू बढ़ि रहल छल । जँ-जँ जीप आगू बढ़ैत छल तौँ-तौँ प्रेमीक मोनमे आक्रोश बढ़ि रहल छल । मुदा सामनेमे ओकर बाप हाथ जोड़ने ठाढ़ छलैक । नेहोरा कए रहल छलैक । ओकर टोलक लोकसभ सेहो ओकर बापक संग दए रहल छलैक । सभ अपन जान बचबएमे लागल छल । ककरो आओर किछु सोचबाक परिस्थिति नहि रहैक । सभ बेबस छल , लाचार छल । जीप आगू बढ़ैत गेल । प्रेमी बेहोस भए ओतहि ठामहि खसि पड़ल ।

हरिनाथ आ मोहनक हेतु ई घटना आब तँ नाकक सबाल भए गेल छल । ओ सभ कनिआँक माए-बापकेँ बजओलथि । दुनूगोटे सौंसे गौंवाक सामनेमे स्पष्ट कएलनि-

“हमसभ एहि कनिआँक संगे नहि छी । जे समाजक विचार सएह हमरो विचार । गामक इज्जति रहबाक चाही । कोनो हालतिमे अजाति बिआह नहि हेबाक चाही ।”

“सही बात ।” -गौंवासभ एकस्वरसँ ओकर बातक समर्थन केलक । हरिनाथ आ मोहनक संकल्प आओर दृढ़ भए गेलैक । हरिनाथ सभक सामनेमे घोषणा केलक-

“हमरा अछैत अहाँसभ चिंता नहि करू । एकर बिआह अपने जातिमे हेतैक । हमसभ ओरिआन कए लेलहुँ अछि । एहि बेर सभकिछु ठीके रहतैक ।” ओकरसभक बात सही भेल । साँझ होइत-होइत गोवर्धन एहि कनिआँसँ बिआह करबाक हेतु तैयार भए गेल । गोबर्धनक नाम सुनिते कनिआँक बापक रोंआ ठार भए गेलैक । असलमे ओ तँ इलाकाक नामी अपराधी छल । कैकटा खूनी मोकदमामे ओकर नाम छलैक । बहुत मोसकिलसँ ओकरा जमानति भेल रहैक । बहुत दिनसँ ओ बिआह करबाक जोगारमे छल । मुदा केओ ओकरासँ बिआह करबाक हेतु राजी नहि रहैक । जखन मोहन ओकरा ई सभ बात कहलकैक आ कनिआँक फोटो सेहो देखेलकैक तँ ओ तुरंत बिआह करबाक हेतु स्वीकृति दए देलक। मुदा एतेक जल्दी कोना की होइत? बरिआतीक जोगार कोना कएल जाइत? फेर इहो चिंता रहैक जे देरी भेलासँ प्रेमी युगल कहीं किछु आओर तामासा ने कए दैक । तेँ निर्णय भेल जे जनकपुरक जानकी मंदिर परिसरेमे गोबर्धन पहुँचए । ओतहि

आइए रातिमे बिआह भए जेतैक आ प्रात भेने द्विरागमन सेहो भए जेतैक ।

कनिआँकेँ प्रेमीक घरसँ आनि कए ओकरा गाममे गुप्तस्थानमे राखि देल गेलैक । ओकर मोन अत्यंत व्याकुल रहैक । ओ नहि बूझि पाबि रहल छल जे एहि अन्यायक प्रतिकार कोना करए । कानून आ पुलिस सभ व्यर्थ भए गेल छलैक । ई बात नहि छलैक जे ओ अचानक ककरो संगे भागि गेल छलि । ओकर प्रेमी इसकूलिआ संगी रहैक । स्वभाविक रूपसँ ओकरसभक प्रेम अंकरुरित भेल रहैक,पल्लवित-पुष्पित होइत रहलैक । ओकर माता-पिताकेँ सेहो एहि बातक जनतब रहैक । ओहोसभ कोनो प्रतिरोध नहि केने रहैक । बात तखन बिगड़ि गेलैक जखन ओ सभ आपसमे बिआह कए समाजक सम्मुख सीना तानि कए ठाढ़ होबए चाहलक । तखन किछु दबंग लोकनिक अहंपर चोट पड़लनि आ ओहि प्रेमी युगलक संग एतेक अत्याचार कएल गेल । एकटा बालिकाक तीन-तीन बेर बिआह कए देल गेल ।

कनिआँकेँ असगरमे ई बातसभ ध्यानमे अबैत रहल । ओकर मोन तँ होइक जे जहर-माहुर खा लिए । मुदा सेहो नहि भेटैक । फेर इहो फुराइक जे जखन ओ अपन निश्चयपर अडिग अछि तँ केओ की कए लेत? ओ तँ कपलेश्वर स्थानमे अपन प्रेमीक संगे बिआह कए चुकल अछि। ओ से सभ सोचिए रहल छलि की केओ केबार खोललकैक। ओकरा आँखिपर पट्टी बान्हि देलकैक । दुनू हाथ बान्हि देलकैक आ जीपमे बैसा कए गामसँ बाहर लेने चलि गेलैक। जीपक पाछू-पाछू तीन-चारिटा मोटर साइकिलपर लठैतसभ चलि रहल छल । चारि-पाँच घंटाक बाद जीप आ ओकर पाछू-पाछू चलनिहार समर्थकसभ जनकपुर पहुँचि गेल । ओतहि

कनिआँक माए-बाप सेहो पहुँचलाह । एहि तरहें ओहि कनिआँक तेसर बेर बिआह संपन्न भेल । हरिनाथ आ मोहन आपसमे गप्प करैत छल-“ जे भेल,से भेल मुदा गामक इज्जति तँ बाँचि गेल।”

ओमहर हरिनाथ अपन सहयोगीसभक संगे गाम पहुँचल । एमहर द्विरागमनक हेतु कार आबि गेल छल । मुदा बर-कनिआँक कोठरी खुजिए नहि रहल छल । लोककेँ होइत छलैक जे थाकल-ठेहिआएल छैक ,निन्न पड़ि गेल हेतैक । मुदा जखन दस बाजि गेलैक तँ लोकसभकेँ चिंता होबए लगलैक , केबारकेँ खटखटाओल गेलैक । किछु क्रिया-प्रतिक्रिया नहि भेलैक । वारंबार प्रयासक बादो जखन केबार नहि खुजलैक तँ ओकरा जेना-तेना तोड़ल गेल। आखिर केबार टूटि कए खसि पड़ल । मुदा ओकर भीतरक दृश्य देखि सभ छगुंतामे पड़ि गेल। बर-कनिआँ दुनू रक्त रंजित निष्प्राण पड़ल छल ।

जोगार

"खबरदार! जे आगू बढ़लह।"

"एना किएक चिकरि रहल छी?"

"बइमानी करबहक आ लोक बजबो नहि करतह? एहनो कतहु भेलैक अछि? "

"की बैमानी केलिअह अछि? हम अपन काज-धंधामे लागल रहैत छी । तोरा एहिसँ की परेसानी छह? "

"अछि कोना नहि? हम उपमुखिआ छी आ तूँ मुखिआ छह ।"

"तकर माने?"

"माने बूझा जेतह?"

"बेसी जे गुड़गुड़ाइत छैक से किछु करैत नहि छैक । तोरा जे पार लागह से कए सकैत छह।"

असलमे जहिआसँ बिनोद उपमुखिआ बनल ओकर ध्यान राहुलपर रहैत छलैक । ओकर इच्छा रहैक जे कहुना राहुलकेँ कतहु फँसा देल जाए ,जाहिसँ ओ मुखिआ बनि जाए आ एकसरे खूब कमाए । मुदा राहुल छल असली मुखिआ । उपरसँ नीचाँ धरि सेटींग केने रहए । बिनोद चारू कात घुमि आएल मुदा केओ ओकर सिकाइतपर ध्यान नहि देलकैक। बिनोदो चुप नहि बैसल । जकरा-तकरा दरखास दैत रहल । आखिर पटनासँ सतर्कता विभागक जाँच शुरु भए गेलैक । आब तँ बिनोद गाममे मोंछ फरकबैत घुमए । जकरा-तकरा कहने फिरैक

–"राहुल जल्दीए जहल जाएत आ ओकरा जगहपर हम मुखिआ बनि जाएब । ताबे अहाँसभ धैर्य राखू। एकर बातपर नहि जाउ । एकरा घूस नहि दिऔक । हम पूरा इमान्दारीसँ काज कराएब । सभकेँ मगनीमे आवास भेटतैक। कोनो दिक्कति नहि हेतैक । बस थोड़बे दिनक बात छैक ।"

मुखिआजी तँ छल घुटल आदमी । ओ अपन जासूससभकेँ बिनोदक पाछू लगओने रहैत छल । बिनोद कोनो इमान्दार आदमी रहए से बात नहि रहैक । बस ओ चाहैत छल जे मोट आमदनी ओकरा होइक। आर ककरो किएक भेटतैक? राहुलजी कैकबेर ओकरा इसारा केबो केलकैक जे बाँटि-चुटि कए काज चलाबी । मुदा बिनोदकेँ चाही सोलहन्नी ।

किछुदिन तँ राहुल परेसान रहल । ओकरा खिलाफ तरह-तरहक जाँच होइत रहलैक । मुदा ओकर किछु बिगड़लैक नहि । नीचाँसँ ऊपर धरि सभ अधिकारी ओकरे संग भए गेलैक । बिनोद असगर पड़ि गेल । राहुल अपन आदमीसभकेँ बिनोदक पाछू लगा देलक । ओ सभ बिनोदकेँ तरह-तरहक प्रलोभन दैत रहल । आखिर,राहुल अपन षड़यंत्रमे सफल भेल । एकटा मामिलामे सद्यः घूस लैत बिनोद पकड़ल गेल । आब तँ ओकरा किछु फुरेबे नहि करैक । चारूकात ई समाचार पसरि गेल। सभ छिआ- छिआ करए लागल । सभ एतबे कहैक जे बिनोद करवनहु जहल जा सकैत अछि। बिनोदकेँ कोनो उपाय नहि सुझाइक । हारि कए बिनोद राहुलक ओहिठाम पहुँचल । ओकरासँ घटी मानलक । मुदा राहुल ओकरा माफ करबाक हेतु तैयार नहि छल । घटी मानि लेला सँ बात नहि बनलैक । राहुल अड़ि गेलैक । बिनोद राहुलक पैरपर खसि पड़ल ।

"हमरा एक मौका दिअ । हम फेर ओहन काज नहि करब ।"

"यदि जहलसँ बचबाक छह तँ उपमुखीआसँ इस्तिफा देबए पड़तह ।"

"ठीक छैक । जे तूँ कहह ।"

आखिर बिनोद उप मुखिआक पदसँ इस्तिफा दए देलक ।

बिनोद गाममे जे छोट-मोट काज -धंधा करैत छल सेहो नेतागिरीक चक्करमे बैसि गेलैक । गाममे गुजर होएब पराभव भए गेलैक । हारि कए ओ दिल्ली चलि गेल। दिल्लीमे किछुदिनमे ग्रामीणसभक सहयोगसँ काजो भेटि गेलैक । साल बीतति-बीतति ओ दिल्लीमे नीकसँ व्यवस्थित भए गेल । गामसँ परिवारो लए आएल । एहि बीच ओकरा एकटा पुत्रक जन्म सेहो भेलैक । जीवन नीक जकाँ चलि रहल छलैक । किछु टाका बचत सेहो भए गेलैक। मालिक ओकर काजसँ बहुत प्रसन्न रहैत छल । ओकर दरमाहा समय-समयपर बढ़बैत रहल । संगहि जिम्मेबारी सेहो बढ़बैत रहलैक । साल बीतति-बीतति ओ दिल्लीमे नीकसँ व्यवस्थित भए गेल ।

मुदा बिनोदकेँ जल्दीए घमंड होबए लगलैक। एकदिन मालिक कोनो बातपर ओकरा टोकलकैक । बस,ओ बिगड़ि कए कुंजी फेकि तुरंत काजसँ इस्तिफाक एलान कए देलक । मालिक ओकरा बहुत बुझेलकैक । मुदा ओकरापर तँ दरिद्रा सबार भए गेल रहए । ओ मालिकक बातकेँ उपेक्षा कए देलक । ओ अपन बातपर अड़ल रहल । काज छोड़ि देलक । ओकरा अपनापर ततेक गुमान रहैक जे होइक जे एकटा के कहए दसटा काज ओ तुरंत ताकि लेत। मुदा सभटा सोचलहे नहि होइत छैक । ओ मास दिन दिल्लीमे

बौआइति रहि गेल,काज नहि भेटलैक । किछु दिन बचतसँ घरक खर्चा चलओलक । मुदा कतेक दिन? क्रमशः ओहो कम होमए लगलैक । आखिर पाइ-पाइक खर्च भए गेलैक । आब की कएल जाए?

एकदिन दिल्लीएमे रहए कि गामसँ केओ फोन केलकैक।

“की बात?”

“मुखिआजी नहि रहलाह?”

“की भेलनि?”

“आँतमे कैंसर भए गेल रहनि । इलाज लेल कतए-कतए ने गेलाह । मुदा किछु फएदा नहि भेलनि । बिमारी बढ़िते गेलनि ।”

“बहुत अफसोचक बात गाम अएबाक प्रयास करैत छी । तखन विस्तारसँ गप्प करब ।”- बिनोद बाजल ।

बिनोद सोचलक –“इएह मौका अछि । मुखिआक पोस्ट खाली पड़ल छैक । यदि हाथ लागि गेल तँ भाग्य पलटि जाएत ।”

आखिर ओ परिवार सहित गाम घुरि आएल । ताबे तँ बीडिओ साहेब ककरो मुखिआ नामित कए चुकल छलाह । चुनाओ होमए धरि ओएह मुखिआक काज देखत । एहिबातसँ बिनोदकेँ बहुत निराशा भेलैक। मुदा करितए की?गामेमे किछु-किछु करबाक प्रयास केलक । मुदा किछु नहि भए सकलैक । ओकरा देखितहि लोक पीठ घुमा लैत छल ,रस्ता बदलि लैत छल । खगल आदमीसँ केओ किएक दोस्ती करैत? गाममे समय काटब ओकरा बहुत मोसकिल होमए लगलैक ।

आब की करितए? कहुना कए मास-दू मास समय काटलक । थोड़ेक दिन करजापर सेहो समय कटलक । मुदा बादमे केओ ओकरा उधारी देबाक हेतु तैयार नहि होइक । करजा नहि दैक । गाम तँ सहरोसँ खराप लागि रहल छलैक । जाबे जेबीमे टाका अछि ताबे तँ गाममे केओ हालो-चाल पूछि लेत । नहि तँ जे हाल होइत अछि से बिनोद भोगि रहल छल । ऊपरसँ राहुल आ ओकर संगीसभ पुरना ओलि निकालबासँ सेहो बाज नहि अबैत छल ।

बिनोद फेर दिल्ली वापस भए गेल । संगमे स्त्री आ बच्चा सेहो रहैक । दिल्ली टीसनपर ट्रेनसँ उतरलाक बाद ओ गुनधुनमे रहए जे केमहर जाए? ककरा ओतए आश्रय लिअए? एतबेमे गिरीश देखेलैक ।

गिरीशकेँ देखितहि ओकरा जान मे जान अएलैक ।

“गिरीश! गिरीश!”-बिनोद चिकरल ।

गिरीशक ध्यान कतहु आओर रहैक । ओ किछु जबाब नहि देलक । आखिर बिनोद ओकरा लग पहुँचल आ पाछूएसँ बड़ी जोरसँ ओकर आँखि मूनि देलक ।

“के छी? के छी? ”

“तूँही बताबह हम के छी।”

“ओ बिनोद मुदा एहिठाम?”

“गामसँ नौकरीक फिराकमे आएल छी।”

“तोरा तँ दिल्लीमे नौकरी रहबे करउ ।”

“की कहिऔक? कर्म फूटि गेल छल । मालिकसँ झगड़ा कए नौकरी छोड़ि गाम चलि गेल रही । मुदा ओतए जा कए तँ आओर मोसकिलमे पड़ि गेलहुँ।”

“से की?”

“की की कहयौक? फिलहाल कोनो जोगार लगाबै जाहिसँ हम जीबि ली ।”

“तूँ चिंता नहि कर । हमरा ओहिठाम चल । हमरे संगे रहै आ काल्हिसँ हमरे कारखानामे काज शुरु कए दे।”

“सचमुच?”

“तँ आओर की?”

बिनोद बहुत प्रसन्न भेल । गिरीशक संगे थोड़बे कालमे न्यू अशोक नगर स्थित ओकर चारि मंजला मकानपर पहुँचल। स्त्री आ बच्चा संगे बिना कोनो ठेकानाकेँ गाम छोड़ि देने छल । दिल्लीमे कतए रहत,की करत,किछु पता नहि छलैक। दोसर कोनो उपायो नहि रहैक । गाममे ककरापर परिवारकेँ छोड़ैत । तेँ सभक संगे दिल्ली बिदा भए गेल छल ।

गिरीश ओकर इसकूलिआ संगी रहैक । एकहि किलासमे दुनूगोटे पढ़ैत छल । गिरीश पढ़बामे चंसगर रहए । सभदिन नीक रिजल्ट केलक । बीए पास करितहि काज धंधा शुरु कए देलक । क्रमशः अपन कारखाना बना लेलक । न्यू अशोक नगरमे जमीन कीनि मकानो बना लेलक । बिआह से नीक ठाम भए गेलैक । मुदा जल्दीए पत्नीक संगे तलाक भए गेलैक। तकरो साल भरि भए गेलैक। आब नीचाँक तलमे अपने रहैत छल । ऊपरका दू मंजिल किराया लागल रहैक । मकानक चारिम मंजिल खाली रहैक ।

असगर रहैत-रहैत मोन उबिआ गेल छलैक । तेँ बिनोदकेँ आबि गेलाक बाद ओकरा बड़का उसास भेलैक ।

गिरीश बिनोदकेँ अपने कंपनीमे काज धरा देलकैक । अपन मकानक चारिम मंजिल ओकरा रहबाक हेतु दए देलकैक,सेहो बिना कोनो किरायाकेँ । ततबे नहि,जलखैसँ भोजन धरिक सभटा खर्चा गिरीशे वहन करत सेहो कहि देलकैक । बस,ओहो ओकरेसभक संगे खाएत । ओना तँ बेसी काल ओ अपन कारखानाएमे काज करबाक क्रममे दिनुका भोजन ओतहि कए लैति छल । एकहि पाँतिमे मजदूरसभक संगे । गिरीशकेँ एकहि पाँतिमे भोजन केलासँ नीक भोजन परसल जाइक । सभ भरिपेट प्रसन्न भए खाइत । सभ ओकर प्रशंसा करैत । मुदा साँझमे गिरीश घरेमे खाइत । सामान्यतः ओ बिनोदसँ पहिनहि घर वापस आबि जाइत छल । बिनोदक ड्युटी रातिमे आठ बजेक बाद समाप्त होइक । ताबे गिरीश अपन घरमे पुरान भेल रहैत छल । बिनोदक पत्नी रानीसँ गप्प-सप्प करैत छल । दुनूगोटेक समय नीकसँ कटि जाइक ।

गिरीश जेहने देखबामे सुन्नर छल तेहने ओकर स्वभाव मनमोहक छलैक । बजैत काल लगैक जेना मुँहसँ मधु टपकि रहल अछि । रानी तँ ओकरा देखितहि मोहित भए गेलि । मौका भेटितहि ओकरासँ सटि जाइत । गिरीश सेहो रानीसँ बहुत आकर्षित छल । क्रमशः दुनूगोटे लगीच होइत गेल । जखन बिनोद लौटति तँ गिरीश ध्यान करैत रहैत छल । तेँ बिनोदकेँ कहिओ कोनो सक नहि भेलैक।

एहि तरहें साल भरिक समय बीति गेल । बिनोदकेँ प्रोन्नतिपर-प्रोन्नति होइत गेलैक । साले भरिमे ओ सेल्स मैनेजर भए गेल ।

दरमाहा तीनगुनासँ बेसीए भए गेलैक । खर्चा किछु रहैक नहि । आब फेर ओकरा तरह-तरहक बातसभ मोनमे आबए लगलेक ।

“गाममे घर बनाएब जरूरी अछि । एतेक टाका तँ हम गामेमे मुर्गी पालन उद्योगसँ कमा सकैत छी । हमर कैकटा इसकूलिआ संगी अपन-अपन गाममे ई काज कए धनीक भए गेल । हम गिरीशक पामौजीमे किएक रहब? किएक ने स्वतंत्र भए गामेमे अपन काज करब?

एकदिन ओ अपन मोनक बात रानीसँ कहबो केलकैक । मुदा रानी एकदम तैयार नहि भेलखिन ।

“हमसभ कतेक आराममे छी । अहाँकेँ एतेक नीक नौकरी अछि । बड़का हाकिम भए गेल छी । गिरीश अहाँक एतेक इज्जति करैत छथि । तखनो गाम वापस जेबाक विचार मोनमे अबैत अछि? अहाँकेँ दरिद्रा सवार अछि ।”

मुदा गिरीश अड़ि गेल । गाम जेबे करत ।-ओ घोषणा कए देलक। ई बात गिरीशोक कान धरि गेलैक । गिरीश नहि चाहैत छल जे ओ एकबेर फेर असगर भए जाए । ओ बिनोदकेँ बजा कए कहलकैक-

“जखन तूँ गाम जेबे करबह तँ एकटा हमरो बात मानि लएह।”

“की?”

“परिवारकेँ एतहि रहए दहक । गाम जा कए पहिने काज शुरु करह । यदि सभकिछु अनुकूल रहत तँ हिनकोसभकेँ लेने जेबहुन। ताबे हमरो किछु उसास रहत ।”

“कोनो हरजा नहि ।”

बिनोदकेँ गाम चलि गेलाक बाद गिरीशक समय रानीकसंग बहुत नीकसँ कटि रहल छलैक। रानी सेहो बहुत प्रसन्न रहथि । रंगमे भंग तखन भेल जखन रानी एकाएक दुखित पड़ि गेलीह । हल्लुख बोखार,उल्टी कैकदिन धरि होइत रहलनि । रानीकेँ गिरीश डाक्टर लग लए गेलखिन । तरह-तरहसँ जाँच केलाक बाद डाक्टर बाजल-

"बधाइ हो! अपने पिता बनि रहल छी।"

से सुनितहि रानी आ गिरीश एक-दोसर दिस देखैत रहि गेलाह। किछु बजले नहि होनि । ई हालति देखि डाक्टरो केँ कनी अनसोहांत लगलैक ।

थोड़े कालक बाद दबाइ लए दुनूगोटे घर वापस भए गेल ।

"आब की होएत? "-घर पहुँचितहि रानी बजलीह।

"हेबाक की छैक? अहाँ चैनसँ हमरा संगे रहू । जखन बिनोद आएत तँ ओकरा बूझा देल जेतैक । बूझि गेल तँ ठीक नहि तखन हम-अहाँ तँ छीहे।"

रानी गिरीशक मुँहे ई सभ सुनि कए बहुत प्रसन्न भेलीह । ओ आन एको क्षण लेल गिरीशसँ फराक नहि रहए चाहथि। मुदा विनोदो हुनका बेजाए नहि लागनि । मुदा ओकर हालते तेहन होइत रहलैक जे बात एहि हद धरि पहुँचि गेल।

"आब तँ जे भए गेलैक ताहिसँ आगुए ने किछु कएल जाएत।" रानी मोने-मोन सोचथि ।

आखिर एकदिन दुपहरिआमे बिनोद गामसँ आएल । ओकर गामक व्यापार फेर चौपट भए गेल रहैक । जेबी एकदम खाली भए

गेल रहैक । घरमे अंदर होइतहि गिरीश आ रानीकेँ बच्चा संगे खेलाइत देखलकैक । ताबतेमे ओकर बच्चा सेहो दौड़ल अएलैक।

“बाबू! बाबू!”- कहि कए गरा लागि गेलैक ।

बिनोदकेँ बुझेबे नहि करैक जे की बाजए,की करए?

ओकर माथा एकाएक बारी भए गेलैक । लगैक जेना माथक नस फाटि जाएत । ओ ठामहि खसल आ मुँह बाबि देलक । ओकर ई हाल देखि गिरीश आ रानी दौड़ल । ओ सभ बिनोदकेँ हिलबैत अछि । ओकर सौंसे देह हिलि गेलैक । बिनोद सदा-सर्वदाक हेतु एहि दुनिआकेँ छोड़ि चुकल छल ।

30.5.2022

तलाक

“हम कनी बजारसँ आबि रहल छी।”

“जखन देखु अहाँकेँ बजारेक काज रहैत अछि । घरमे की भए रहल अछि कोनो मतलब नहि?”

“से किएक? मतलब अछि नहि तँ सालक-साल जे दिन-राति खटि रहल छी से ककरा लेल? ”

“कोनो अहींटा नौकरी करैत छी की आओरो लोक करैत अछि। सभकेँ घर-परिवार छैक । जखन छुट्टी होइत छैक तँ परिवारके, बच्चासभकेँ समय दैत अछि । मुदा अहाँ घरमे रहैत छी तँ अखबार पढ़ैत रहैत छी । यदि बाहर निकललहुँ तँ बजारमे घुमैत रहैत छी।”

“एहिमे खराब की छैक?”

“खराब किएक रहतैक? जखन अहाँ खाली अपने लेल सोचैत रहबैक तखन कथु खराब लागत किएक? ”

एहि तरहें हिनका लोकनिक आपसी बातचीत कोनो पहिल बेर नहि भए रहल छलनि । अपितु,होइते रहैत छलनि ।

सुमन आ राखी दुनूगोटे इंजीनियर रहथि । दुनूक पिता बिनोद आ मोहन सेहो इंजीनियर रहथि । कालेजेक समयसँ बहुत नीक दोस्त रहथि । दुनूगोटेक बिआह एकहि समयमे भेल रहनि । साल भरिक बाद दुनूगोटेकेँ संतान भेलनि । बिनोदकेँ बेटी भेलनि । ओकर नाम राखी छल । मोहनकेँ बेटा भेलनि । ओकर नाम सुमन राखल गेल । संयोग एहन भेलैक जे बिनोद आ मोहन एकहि

विभागमे काजो पकड़लनि । कैकबेर दुनूगोटेक कार्यस्थान एकहि ठाम भए जानि । तखन दुनू बच्चाक इसकूलो एकहि भए जाइत छल ।

आखिर सुमन आ राखी इंजीनियरिंग पास केलक। तकर बाद ओकरसभक बिआहक चर्च होबए लागल । इसकूलेक समयसँ सुमन आ राखी आपसमे दोस्त बनि गेल रहए । हुनका लोकनिक पिता तँ दोस्त रहबे करथि । एहन परिस्थितिमे बिनोद आ मोहन कैक बेर बाजथि-

“एकरासभक जोड़ी बहुत नीक रहतैक ।”

बातो सही बुझाइक। दुनू परिवार एक-दोसरकेँ नीकसँ जनैत छल। आपसमे बहुत नीक संबंध छलनि । तखन देरी कथीक? आखिर सुमन आ राखीक बिआह निश्चित भए गेल ।

दुनू पक्ष बिआहक तैयारीमे लागि गेलाह । नीकसँ नीक टेंटबलाकेँ बिआहक रातिक तैयारीमे लगाओल गेल। नाना प्रकारक भोजनक व्यवस्था कएल गेल । बरिआतीसभक मनोरंजनक हेतु प्रसिद्ध संगीतमंडलीकेँ आनल गेल। कोनो प्रकारक त्रुटि नहि रहल। सुमन आ राखीक बिआह बहुत धूम-धामसँ संपन्न भेल । इलाकाक नामी लोकसभ ओहि बिआहमे नोतल गेलाह। सात दिन धरि रसनचौकी बजैत रहल । भोज-भात होइत रहल । बिआहक रातिमे जे महफिल सजल तकर तँ चर्च मासोदिन बाद धरि होइत रहल । कहाँदनि मुख्यमंत्री सेहो नोतल गेल रहथि। मुदा ओ अपने कोनो कारणसँ नहि आबि सकलाह तँ हुनकर स्थानमे उपमुख्यमंत्रीजी अएलथि । वर-कनिआकेँ आशीर्वाद दए गेलथि । वर-कनिआ तँ आनंदमग्न रहथि । बरिआतीसभ बहुत प्रसन्न भए वापस भेलाह ।

बिआहक चारिदिनक बाद कनिआक द्विरागमन भेल । अपना भरि सभ सामान कनिआकेँ विदाइमे देल गेल । वर-कनिआ बहुत प्रसन्न रहथि। दुनू परिवारक लोकसभ सेहो बहुत प्रसन्न रहथि।

बिआहक बाद वर-कनिआ हनीमूनपर मालद्वीप चलि गेलाह। दसदिन बाद जखन ओ सभ लौटलाह तखन द्विरागमन भेल । पटनामे कनिआक स्वागत समारोह आयोजित कएल गेल । उपहारक तँ करमान लागि गेल।

बिआहक मासे दिन बितल होएत की राखीक माए वर-कनिआक हाल-चाल पुछबाक हेतु बंगलोर हुनकर डेरापर पहुँचि गेलीह । राखी भोरेसँ हुनकर स्वागतक तैयारीमे लागल रहथि । सुमनकेँ हवाइ अड्डा पठा देलखीन । ओ अपना संगे सासुक हेतु जलखैक समान आ थर्मसमे चाह लेने गेल रहथि जाहिसँ सासुकेँ हवाइ जहाजसँ उतरितहि नीकसँ स्वागत होनि, हुनकर सुगर लेवल नियंत्रित रहनि । हवाइ अड्डापर चाह पिलाक बाद ओ सभ डेरा पहुँचलथि। ओतए राखी माएक स्वागतमे तत्पर छलि । दू कोठरीक फ्लैटमे एक कोठरीमे माएकेँ रहबाक व्यवस्था केलनि । तकर बाद दिन-राति हुनकर सेवामे लागल रहथि । राखीक माएकेँ बहुत नीक लागनि । ओ बहुत आनंदसँ अपन समय बिता रहल छलीह ।

एमहर सुमन परेसान रहए लागल रहथि । राखीसँ असगरमे गप्प करबाक समये नहि भेटनि । सदिखन सासु आगू-पाछू केने रहथिन । कार्यालयमे से काज बहुत भए गेल रहनि । ओतएसँ थाकल आबथि आ अपन कोठरीमे चुपचाप पड़ि जाथि । पता लागनि जे राखी माएक संगे कोनो मंदिर गेल छथि । कहिओ कोनो सिनेमा गेल छथि । कहिओ हुनकर इलाज करबा रहल छथि । एहि

तरहें राखी अपन माएक सेवामे व्यस्त रहैत छलीह । मुदा सुमनक निराशा बढ़िते जा रहल छलनि । ओ घरमे गुम रहए लगलाह । बेसी काल कार्यालयेमे समय बिताबए लगलाह । छुट्टीओ दिन कए कार्यालयक बहाना बना कए कतहु चलि जाथि । मुदा राखीकेँ पलखति नहि होनि जे हुनकासँ किछु पुछतीह,किंवा हुनकर हाल-चाल लेतीह । एहि तरहें दुनू बेकतीमे दूरी बढ़िते गेलनि ।

सुमनक स्थितिक हुनकर संगीसभ नहि बूझि पाबथि । एतेक प्रसन्न रहएबला व्यक्ति एकाएक गुमसुम रहि रहल छल । दिनराति काजमे लागल रहैत छल । घरसँ आनल टिफिन ओहिना धएले रहि जाइत छल । आखिर एकदिन एकदिन हुनकर सहकर्मी दीपिका टोकिए देलकनि-

“की बात छैक? अहाँ आइ-काल्हि बहुत गुमसुम रहैत छी?”

सुमन की बजितथि? मुदा दीपिकाकेँ अंदाज भए गेलैक । ओ बेर-कुबेर सुमनक मोन हल्लुक करबाक प्रयास करए । कखनहु चाहक बहन्ने,कखनहु जलखैक बहन्ने सुमनक लगीच आबि जाए । सुमनकेँ सेहो ओ नीक लागए लगलैक । क्रमशः दीपिका आ सुमन बेसी लगीच अबैत गेल । तकर बाद तँ सुमनक घर वापस जेबामे कोनो रुचि नहि रहि गेलैक । छुट्टिओ दिन कए दुनूगोटे कार्यालय आबि जाए ।

सुमन आ दीपिकाक मित्रताक चर्चा कार्यालयमे सौंसे होबए लागल । ई अंदाज सुमनकेँ नहि रहनि । ओ अपन काजमे लागल रहथि । जखन काजसँ फुरसति होनि तँ दीपिका संगे कैंटिनमे चाह पीबथि,गप्प-सप्प करथि । सुमनाकेँ ई अनुमान नहि रहनि जे हुनकर मोनपर दीपिका कब्जा केने जा रहल छथि । मुदा दीपिका

तँ जेना एहि स्थितिक हृदयसँ स्वागत कए रहल छलि । आखिर,दीपिका एकदिन अपन मोनक बात सुमनकेँ कहिए देलकनि-

"एकटा बात बूझल अछि ।"

"की?"

"हम राति-राति भरि जगले रहैत छी । निन्न हेबे नहि करैत अछि । लाख प्रयास करैत छी मुदा..."

"मुदा बात की छैक? निन्न हेतु अहाँकेँ प्रयास किएक करए पड़ि रहल अछि? "

"सएह तँ नहि बुझा रहल अछि ।"

"एना तँ काज नहि चलत । जाबे असल बात कहबैक नहि तँ हम बुझबैक कोना?"

दीपिका नीचाँ दिस देखए लगैत छथि । मंद-मंद मुस्की दए रहल छथि ।

फेर बजैत अछि-"अहाँ मूर्ख छी ।"

"माने..."

"सएह ने कहलहुँ ।"

दीपिका से कहि हँसि दैत छथि । सुमन आ दीपिकाक दोस्ती आओर मधुर होइत गेल । सुमनकेँ आब घरमे कनीको नीक नहि लगैक । निरंतर एही प्रयासमे रहए जे कखन दीपिकाक लगमे पहुँची। अप्रैलक महिनामे कैकटा छुट्टी पड़ैत रहैक । दुनूगोटे निर्णय केलक जे एहि छुट्टीमे कतहु घुमबाक हेतु चलल जेतैक । घरमे किछु-किछु बहन्ना बना कए ओ सभ अपन योजनाक अनुसार

गोवा घुमबाक हेतु चलि गेलाह । एमहर सुमनक सासुक मोन बहुत खराब भए गेलनि । हुनका दूपहर रातिमे राखी अस्पताल लए गेलथि । तुरंत शल्यकृयाक जरूरी रहैक । आखिर सेहो भेलैक । राखी लगमे टाका घटैत छलैक । अस्पतालबलासभ बिना भूगतानकेँ हुनका छोड़ि नहि रहल छलनि । आखिर, राखीकेँ सभटा बात फोनपर सुमनकेँ कहए पड़लनि । ओहि समयमे सुमन वापसी यात्राक क्रममे हवाइ अड्डापर रहथि ।

“हम साँझ धर पहुँचि रहल छी । मुदा हमरो लग ओतेक टाका नहि अछि।”

“किछु-ने-किछु तँ करबेक होएत ।”

“अहाँ अपन बाबूजीकेँ किएक नहि फोन कए दैत छिअनि?”

राखीकेँ ई बात बहुत खराब लगलनि । ओ अपन गहना बंधक राखि माएकेँ अस्पतालसँ वापस अनलीह आ वापस अपन डेरा नहि आबि सोझे अपन पिता लग चलि गेलीह ।

तकर बाद बहुत दिन धरि राखी नैहरेमे रहि गेलि । ओ सभ प्रतीक्षामे रहथि जे सुमन अपने आबि कए राखीकेँ लए जेथिन । मुदा सुमन तँ दोसरे चक्करमे फँसि गेल रहथि । दीपिका हुनकर हृदयपर कब्जा कए चुकल रहथि । ओ सुमनकेँ जल्दीसँ बिआह करबाक हेतु कहैत रहैत छलखिन ।

“मुदा हम तँ बिबाहित छी । दोसर बिआह कोना कए सकैत छी?”

“अहाँ मूर्ख छी । जखन अहाँक ओ बिआह ठीकसँ नहि चलि रहल अछि तँ ओकरा किएक ढोने फिरि रहल छी? ”

“कहबाक माने...?”

“माने जे ओकरा परित्याग करू आ हमरासँ विधिवत बिआह कए लिअ । जाबे से नहि भेल अछि ताबे हमसभ संगे एकहि डेरामे रहब । कोनो हरजा?”

“हमरा दिससँ कोनो हरजा नहि । कारण राखीकेँ तँ हमरासँ ओहुना कोनो मतलब नहि रहैत छनि । एना कतेक दिन चलत? मुदा कानूनी प्रक्रियामे समय लागत ।”

“अहाँ तँ अनेरे परेसान रहैत छी । कानूनी प्रक्रिया चलैत रहतैक तँ हमसभ कोनो बैसले रहब । हमहुसभ चलिते रहब ने?”

दुनूगोटे भभा कए हँसि देलाह ।

बिनोद आ मोहन एहि संबंधकेँ बचेबाक बहुत प्रयास केलथि। मुदा सफल नहि भेलाह । उल्टे कटुता बढ़िते गेल । आखिर सुमन पारिवारिक न्यायालयमे तलाक हेतु दरखास दए देलनि । सुमनकेँ न्यायालयक दिससँ नोटिस भए गेलनि । मोकदमा चलैत रहल । ओमहर दीपिका आ सुमन दोस्ती बढ़िते रहल । साल भरिसँ बेसीएसँ दुनूगोटे संगे रहि रहल छलाह । दुनूगोटेकेँ साल भरिक बाद एकटा पुत्रो भेलनि । सभ किछु होइत रहल आ तलाकक केसो चलैत रहल । राखीक माए बहुत दुखी रहथि जे हुनके चलते राखीकेँ ई दिन देखए पड़ि रहल अछि । आब ओ अपन व्यवहारपर पश्चातापो कए रहल छलि । मुदा समय बहुत आगू भागि गेल छल। रेखा आ सुमन दुनूगोटेमे सँ केओ पाछू हटबाक हेतु तैयार नहि छल। आखिर दुनूगोटेक तलाकक आवेदन न्यायालय मानि लेलक। रेखा अपन माएक संगे पीजी आवासमे चलि गेलीह ।

ताबे सुमन आ दीपिकाक संतान तँ पहिलामे पढ़ि रहल छल । दुनूगोटे से आनंदमे रहथि । जखन करवनहु सुमन बिआहक चर्च करितथि तँ दीपिका कहतनि-

“केहन बढ़िआँ समय बीतिए रहल अछि । तखन अनेरे फसाद किएक करए चाहैत छी?”

प्रायश्चित

हम सालमे छओ मास दिल्ली आ छओ मास गाममे रहैत छी। दिल्लीमे जहाँ किछु टाका कमा लैत छी की ओकरा खर्च करबाक हेतु गाम बिदा भए जाइत छी । गाममे हमरा पाँच बीघा जमीन अछि । घर अछि । अपन समाज तँ अछिए । तेँ ओकरासभकेँ छोड़ि देब,निठ्ठाह बिसरि जाएब संभव नहि अछि । हमर पत्नी सेहो हमरे संगे दिल्ली अबैत अछि आ हमरे संगे गामो जाइत अछि । हमरा एकटा बेटी आ एकटा बेटी अछि । दुनू हमरासभक संगे रहैत अछि । जखन आवश्यक भेल तँ ओहोसभ गाम जाइत अछि । अन्यथा दिल्लीएमे बेसीकाल रहैत अछि ।

दुपहरिआक समय छल। हम भोजन करए डेरापर आबि रहल छलहुँ । रस्तेमे हमर पड़ोसी देखाएल । हमरा देखितहि ओ बाजि उठल-“जल्दी जाउ ।”

“की बात?”

“अहाँक बेटाक हाथ टूटि गेलैक अछि।”

बिना किछु आओर किछु पुछने हम जल्दीसँ डेरा पहुँचैत छी। ताबे हमर पत्नी रिक्सा बजा लेने छलि । हमदुनूगोटे बच्चाकेँ लेने अस्पताल पहुँचैत छी । रस्तामे मोहल्लाक बच्चासभ अपन-अपन इसकूलसँ वापस जाइत देखाएल ।

“यदि हमरो बच्चा इसकूल जाइत तहन ई घटनासभ नहि होइत।”-हम मोने-मोन सोचैत रही । दिल्लीमे सभक धिआ-पुता इसकूल जाइत छल । ओकरासभकेँ इसकूल जाइत देखि हमर

बच्चासभकेँ सेहो इसकूल जेबाक मोन होइक। मुदा ओ सभ किछु बाजए नहि । जखन ओकर संगीसभ इसकूल चलि जाइत तँ दुनू भाइ-बहिन लगीचक पार्कमे गुल्ली-डण्टा खेलाइत रहैत छल । ने ओ सभ बेकार रहैत ने ओकर हाथ टूटितैक । हमरा मोनमे ई बात बेर-बेर अबैत रहैत छल । सभ बात बूझैत छलिऐक । मुदा परिस्थितिवश टारैत रहलिऐक । परिणाम सामने छल ।

रिक्सा अस्पताल पहुँचि गेल । हमर बेटा(सुनील)क हाथमे पलस्तर लगाओल गेल । महिना दिन आब ओकरा एहिना रहबाक छलैक । तकरबादे हाथ ठीक हेतैक । डाक्टर किछु दबाइ देलक आ कहलक-

“यदि बेसी दर्द होइ तँ खुआ देबैक ।”

“ठीक छैक ।”

हमसभ साँझमे अपन डेरा वासप अएलहुँ । ताबे हमर बेटी असगरे घरमे पड़ल छलि । हमरासभकेँ वापस आएल देखि ओकर जानमे जान अएलैक ।

आखिर जेना-तेना हम अपन दुनू बच्चाक नाम लगीचेक सरकारी इसकूलमे लिखा देलिऐक । शुरुमे ओ सभ इसकूल नहि जाए चाहैत छल । मुदा दू-चारि दिनक बाद ओ सभ नियमित इसकूल जाए लागल । ओतए कैकटा संगीसभ भेटि गेलैक । शिक्षकसभ अपन-अपन काजमे लागल रहैत छल । कैकटा शिक्षक तँ इसकूल छोड़ि कए ट्युशन पढ़बए चलि जाइत छल । इसकूलमे विद्यार्थीसभ बेसी काल खेलाइत रहैत छल । ऊपरसँ दुपहरिआमे भोजनो भेटैक । तेँ आब ओ सभ इसकूल जेबासँ मना नहि करैक। मुदा एकदिन प्रधानाध्यापक कोनो बातसँ तमसा कए सौंसे

किलासकेँ बड्ड मारि मारलकैक । ओकर कैकटा छौंकी विद्यार्थीसभकेँ पिटबामे टूटि गेलैक । ओहिदिनक बाद दुनू भाइ बहिन इसकूल गेनाइ बंद कए देलक । इसकूल हेतु घरसँ बिदा होइत तँ छल ,मुदा रस्तेमे खेलाइत रहि जाइत । समय बीति जाइक तखन अपन-अपन घर वापस जाइत ।

एकदिन हम सबेरे काजसँ घर अबैत रही । हमर दुनू बच्चा धारक कातमे आन बच्चासभक संगे खेलाइत छल । हमरा हिसाबे ओ सभ इसकूल गेल अछि । हम तुरंत ओकरासभकेँ पकड़लहुँ । हम किछु कहितिऐक ताहिसँ पहिने हमर बेटी कहए लागल-

“इसकूलमे शिक्षक बड्ड मारि मारैत छैक । पढ़ाइ नहि होइत छैक । यदि कोनो विद्यार्थी किछु पुछि दैत छैक तँ ओकरा तरह-तरहसँ तंग कएल जाइत छैक । तेँ हमसभ इसकूल गेनाइ छोड़ि देने छी ।”

हम ओकरासभकेँ पकड़ने-पकड़ने घर वापस अएलहुँ ।

“हम तँ पहिने कहैत छलहुँ जे एकरा इसकूल पठेलासँ की होएत? घरमे रहत तँ किछु लुरिओ सिखत । छौंड़ा किछु पढ़ि सकए तँ प्रयास करू ।”

तकरबाद हमहु किछु नहि कलिऐक । हमर बेटी घरक काजमे माएक संग देबए लागलि । मुदा बेटाक चिंता तँ रहिते छल । होअए जे कम सँ कम बीए कए लैत तँ कतहु नीक काज भए जइतैक ।

हम ओकर नाम दोसर इसकूलमे लिखा देलिऐक । क्रमशः ओ पढ़ाइमे नीक करए लागल । मैट्रिकमे प्रथम श्रेणी भेलैक । तकरबाद आइ.ए केलक,बी.ए. केलक । सभदिन ओकरा छात्रवृत्ति भेटैत रहलैक । हमरा कहिओ अपना दिससँ खर्च नहि

करए पड़ल । आब ओ एमएमे नाम लिखओने छल । ओकर पढ़ाइ बहुत नीक चलि रहल छलैक । ओही बीचमे हमर बेटीक बिआह भए गेलैक । ओ सासुर चलि गेल । हम नाना सेहो बनि गेलहुँ ।

हमर पत्नीकेँ रहि-रहि कए पुतहुक सेहन्ता होबए लगलनि । जखन कखनहुँ हमसभ निचैन बैसितहुँ तँ ओ इएह गप्प उठा दितथि-

"भगवान एकटा नीक पुतहु दितथि । सभकेँ पोता-पोती खेलबैत छिऐक । मोन करैत रहैत अछि जे हमरो पोता होइत, पोती होइत ।"

"समयसँ सभकाज हेबे करतैक ।"-से कहि हम बात बदलि दिऐक । मुदा ओहिदिन ओ अड़ि गेलीह । हमर बेटी एकटा कथा अनने छलि । ओकर ससुरक परिचिते परिवार छलैक । कनिआ बी.ए पास केने छलैक । कहाँदनि देखबा-सुनबामे सेहो बहुत पवित्र रहैक । जखन हमर पत्नी बेरि-बेरि इएह बात कहैत रहि गेलीह तँ हम कहलिअनि- "अपन बेटासँ एकबेर पूछि लिऔक । ओ बिआह करबाक हेतु तैयारो अछि कि नहि?"

"हद भए गेल । इहो बात कहीं पुछल गेलैक अछि? जबान भेलैक,पढ़ाइओ केलक आब बिआह नहि करत तँ कहिआ करत? ओकर संगीसभकेँ तँ धिआ-पुता सेहो भए गेलैक ।"

आखिर हम हुनकर बात मानि बिआहक हेतु प्रयास शुरु केलहुँ। हमर बेटी सासुर पहुछलि । ओतए जाइते ओ घटकसभकेँ पठा देलकैक । एकहि बैसारमे बिआह निश्चित भए गेल । हमसभ साँझमे अपन बेटाकेँ ई समाचार देलिऐक । ओ किछु नहि बाजल।

हम सभ ओकर मौनकेँ स्वीकृति मानि काज आगू करबाक निर्णय केलहुँ।

बिआह ठीके भेल छल कि कोरोनाक कारण सौंसे देशमे तालाबंदी भए गेल । आवागमन अवरुद्ध भए जेबाक कारण बिआहक कार्यक्रमकेँ स्थगित करए पड़ल । हमसभ सपरिवार बहुत दिन गामेमे बंद रहि गेलहुँ । दिल्लीक काजसभ ठप्प भए गेल । परिवारक आर्थिक स्थिति खराब होइत गेल । बिआहक हेतु जे टाका बचओने रही से सभ घर चलबएमे खर्च भए गेल । आखिर,चारि मासक बाद कोरोना कम भेल । क्रमश: तालाबंदी खुजए लागल । हमसभ सपरिवार दिल्ली वापस आबि गेलहुँ । हमसभ बिआह नहि हेबाक कारण बहुत दुखी रही । मुदा सुनील बेसीए प्रसन्न रहए । बुझेबे नहि करए जे ओ दिन-राति फिल्मी गाना किएक गबैत रहैत अछि । एना खुस तँ ओकरा कहिओ नहि देखने रहिऐक ।

छओ मासक बाद दोबारा बिआहक दिन ताकल गेल । हमसभ फेर सपरिवार बससँ गाम पहुँचि गेलहुँ । वर-कनिआ पक्षक लोकसभमे बहुत प्रसन्नता छल जे आखिर बिआह कार्यक्रम संपन्न भए रहल अछि । हमसभ निश्चित तिथि कए बरिआती सहित बिआह करबए पहुँचि गेलहुँ । अपना भरि कन्या पक्षबलासभ कोनो कसरि नहि रखलक । हमरासभक बहुत मान-दान भेल । दोसर दिन बिआहक बाद कनिआ लए हमसभ अपन गाम पहुँचलहुँ । सभगोटे बहुत प्रसन्न रही । मुदा सुनीलकेँ करवनहु हँसैत नहि देखऐक । लगैक जेना ओकरा मोनपर कतेको मोन पानि पड़ि गेल होइक । बात बूझब जरूरी बुझाएल । कारण दुइए-चारि दिनमे तरह-तरहक गुलंजरसभ उठए लागल ।

ओहदिन हम मंदिरपरसँ पूजा कए लौटि रहल छलहुँ कि सुनीलकेँ चिचिआइत देखलिऐक । हमरा देखितहि ओ आओर उग्र भए गेल । ओकर उग्र स्थिति देखि घरक लोकक हालति सोचल जा सकैत छल । पाहुनसभ गुम्म पड़ि गेलाह । सुनीलक सार तँ माथ पिटि रहल छलाह । हमरा बुझेबे नहि करए जे की भए गेल ? कनिआक हालति सोचल जा सकैत छल । ओ दिन-राति कनैत रहैत छलि । ककरो बुझेबे नहि करैक जे आखिर एतेक जल्दी एकरासभकेँ की समस्या भए गेलैक? । सुनील तँ बिआहसँ पहिने एकदम ठीक छल । एकाएक एना किएक भए गेल? कनिआकेँ देखिते सुनीलक आँखि लाल-लाल भए जाइत छल । आखिर बात कनिआक पिता धरि पहुँचल । ओ ओहीदिन कनिआकेँ अपना संगे गाम लेने चलि गेलाह । तकरबादो सुनीलक उग्रता कम नहि भेल। ओ निठ्ठाह पागल भए गेल छल । सभ तरहक प्रयास कएल गेल,मुदा ओकर हालतिमे कोनो सुधार नहि भेल । डाक्टरसभसँ सेहो ओकरा देखाओल गेल । डाक्टरक दबाइसँ ओकरामे किछु सुधार भेल ।

हमसभ ओकरा लेने दिल्ली चलि अएलहुँ । सोचलिऐक जे स्थान परिवर्तनसँ भए सकैत अछि ओकर मोन ठीक भए जाइक । से भेवो केलैक । क्रमशः ओकर हालति सुधरलैक । मुदा कनिआक चर्चा करितहि फेर ओएहसभ होबए लगैत छल । आब ई तँ बूझएमे आबि गेल छल जे ओकर एहि हालतिमे जेबाक हेतु बिआहक जरूर योगदान अछि ।

आखिर,हमसभ बात पता केलहुँ । सुनील कालेजक कोनो लड़कीकसँ प्रेम करैत अछि । ओ सभ पढ़ाइ केलाक बाद आपसमे बिआह करैत । मुदा अफसोचक बात अछि जे ओ ई बात

हमरासभकेँ नहि कहि सकल । संभवतः माएक मोन नहि तोड़ए चाहैत छल । ओकर इएह दुविधा ओकरा लए बैसल ।

आब तँ माहौल बहुत खराब भए गेल अछि । हमसभ जहलमे छी । कन्याक पिता हमरासभपर कहि ने कोन-कोन धारामे केस केने अछि । कहि नहि एहि कथाक की अंत होएत? एकटा गलत निर्णयक कारण हमर पूरा परिवार तबाह भए गेल । हमसभ आब तकर प्रायश्चितो करबाक हेतु तैयार छी । मुदा से मौका भेटत तखन ने?

1.1.2022

दोषी के ?

“अहाँ किएक चिंता करैत छी भैया? जाबे हम छी अहाँ निचैनसँ रहू । बस आदेश करैत रहिऔक ।”

“से तँ ठीके । सभटा काज तँ तोरे करए पड़तह आ तुहीं करितहि छह ।”

“ई कोनो अनकर काज छैक? एतेक धर्मात्मा छलाह बाबा । हुनकर काज नीकसँ हेबे करतनि । जेना अहाँ चाहबैक,तेना हेतैक ।”

“काल्हि पाँचम दिन छैक । सभगोटे दनानेपर बैसि जाएब । जेना जे सभक विचार हेतैक से हेतैक ।”

“अवश्य हेतैक । जे अहाँ कहबैक, सएह हेतैक, तहिना हेतैक ।”

गोबिंद आ माधव दुनू सहोदर भाइ आपसमे गप्प-सप्प करैत रहथि । हुनका लोकनिक बाबाक नब्बे सालक बएसमे देहावसान भए गेल छलनि । हुनके श्राद्ध करबाक कार्यक्रम बनि रहल छलैक ।

बाबाक श्राद्ध वास्तवमे बहुत नीकसँ भेलनि । जबारी नोतल गेल । कोनो चीजक कमी नहि रहल । बैदिकी श्राद्ध कएल गेल । कहक माने जे किछु मनोरथ हुनकासभकेँ रहनि से केलनि । कोनो

तरहक त्रुटि नहि रहल । श्राद्धक बाद दुनू भाइ बैसलाह । माधव लग सभटा खर्चाक हिसाब रहनि । आठ लाख टाका खर्चा भेल छल । गोविंद सभक पाइ-पाइ चुका कए गामसँ नौकरीक हेतु बिदा भेलाह ।

एही बेर नहि,अपितु जखन कखनहु गाममे कोनो काज होइत छल तँ गोविंद आ माधवक समन्वय देखएबला रहैत छल । खर्चा गोविंद करैत छलाह आ व्यवस्था माधव । माधवकेँ गामक हिसाब-किताब बहुत नीकसँ बूझल रहनि । केना ककरा काबूमे कएल जाए से ओ बहुत नीकसँ जनैत छलाह । गोविंद नौकरीमे लागल रहैत छलाह । हुनका काजसँ फुरसतिए कहाँ रहैत छलनि जे ओ कोनो बातपर ध्यान देताह । ताहिसभ लेल तँ माधव छलखिनहे । जखन कखनहु इलाकामे ककरो जमीन बेचबाक होइत तँ ओ माधवकेँ संपर्क करैत । माधव ठोकले गोविंदक डेरापर पहुँचि जइतथि । गोविंदकेँ माधवक बातपर बहुत विश्वास छलनि । जे ओ निर्णय कए देथि सएह अंतिम निर्णय भए जाइत छल । गोविंद टाकाक जोगार करथि आ माधवक संगे गाम जा कए जमीनक निवंधन करा लेथि। आगूक काजक जिम्मा माधवक रहैत छलनि । कबालाक कागज निकलबेनाइ,जमीनक नामांतरण केनाइ,रसीद कटेनाइ सभटा काज माधव करथि । गोविंदकेँ किछु करबाक काजे नहि होनि । सभ किछु बनल-बनाओल भेटि जानि । बहुत आफियत बुझानि । एहि तरहें दुनू भाइ मिलि कए गाममे बीस बिघा जमीन कीनलनि।

गोविंदक पत्नी, श्यामाकेँ कखनहु कए चिंता होनि जे पता नहि माधव एतेक जमीन किएक कीनबा रहल छथि? ककरा नामे

कीनबैत छथि? कागज-पत्र सही बनैत अछि कि नहि? ओ अपन चिंता गोविंदकेँ कहबो करथि । मुदा गोविंद हँसि कए टारि देथि ।

“अहाँकेँ तँ खाली उल्टे बातसभ सोचाइत रहैत अछि । यदि माधव नहि रहैत तँ हमरा लोकनि एतेक जमीन कथमपि नहि कीनि सकितहुँ । पते नहि चलैत । ओहुना आब गाम-घरमे बहरिआक के ध्यान करैत अछि? दिन-दिन लोकक हालति सुधरि रहल अछि । सभ चाहैत अछि जे गाममे चास-बास होअए । मुदा जमीन तँ ओतबे छैक। कोनो नमरि तँ नहि जेतैक । ताहि परिस्थितिमे माधव हमरा लोकनिकेँ मदति करैत छथि । समयपर सूचना दैत छथि। हम की करैत छी? मात्र टाका जेबीमे रखलासँ गामक जमीन नहि होइत। देखिते रहि जइतहुँ । यदि माधव नहि रहैत वा मदति नहि करैत तँ से सभ सपने रहि जाइत । आइ गाममे किछु कहबै छी । ककरा बले?”

“ओहिठामक जमीनसँ हमरा लोकनिकेँ फएदे की अछि? हम तँ अखनो कहैत छी जे सहरमे जमीन कीनि घर बना लिअ जाहिसँ सेवानिवृत्तिक बाद हमहुसभ रहब आ बादमे धिआ- पुतासभकेँ सेहो एकटा ठौर भेटितैक ।”

“अहाँक सोच बहुत छोट अछि । माधव आ ओकर धिआ-पुता केओ आन नहि अछि । ओकरो बारेमे तँ किछु सोचबाक चाही कि नहि?”

“बात अपन-आनक नहि अछि । जे जमीन हमसभ कीनि रहल छी से फरिछाएल नहि अछि । काल्हि जा कए ओहि कारणसँ आपसी झंझट भए सकैत अछि। तेँ हम कहैत रहैत छी जे बातकेँ शुरुएसँ फरिछा कए राखू ।”

मुदा गोविंद अपना हिसाबे चलैत रहलाह । दुनू भाइक आपसी सिनेहक चर्चा इलाकामे होइत छल । माधव गाममे निचैन जिनगी बीता रहल छलाह । गोविंद सहरमे नौकरी करैत छलाह । गाममे जमीन किनैत रहैत छलाह । समय-समयपर भोज-भात करैत रहैत छलाह जाहिसँ गाममे हुनकर प्रभाव बनल रहैत छल । लोकसभ कहैत-पता नहि गोविंदकेँ कतेक टाका छनि । ओ तँ जखन चाहथि सौंसे गामक जमीन असगरे कीनि लेथि । एहि तरहक चर्चा गाममे होइते रहैत छल।

गोविंद अपन बेटीसभक कन्यादान केलथि । सभ काजमे वर तकनाइ माधवक काज रहैत छलनि । गोविंद ओएह कथा पसिंद करितथि जे माधव कहितथि । मुदा श्यामा एहि बातसँ प्रसन्न नहि छलीह ।

“अहाँकेँ अपनो माथा लगाबक चाही । आखिर अहाँ बेटीक बाप छिऐक, जन्मदाता छिऐक । काल्हि भेने यदि किछु अनट हेतैक तँ सभसँ बेसी दुख अहींकेँ होएत । हमरा लगैत अछि जे माधव जानि कए हमर बेटीसभक बिआह गरीब घरसभमे करबा रहल अछि ।”

“अहाँक तँ कोनो ठेकाने नहि लागि रहल अछि । धनकेँ माधव अछि जे हमरा लोकनिक कन्याक बिआह एतेक आरामसँ भए जाइत अछि ।”

एहि तरहेँ दुनू बेकतीमे बकझौँ होइते रहैत छलनि । कालक्रमे गोविंदक तीनू बेटीक बिआह संपन्न भेल । सभ सासुर बसि रहल छलि । जखन माधवक बेटीसभक कन्यादानक समय आएल तखन गोविंद अपना भरि मदति केलखिन जरूर मुदा माधव तँ

सोलहन्नी गोविंदेपर भार दए देथि । अपन किछु नहि छलनि । ने नौकरी ने कोनो व्यवसाय । तखन करबे की करितथि? खैर! जेना-तेना इहो काजसभ भेल ।

किछु सालक बाद गोविंदक सेवानिवृत्तिक समय लगीच आबि गेलनि । अखन धरि रहबाक कोनो ठौर नहि छलनि । श्यामाक चिंता बढ़ल जानि ।

"सेवानिवृत्तक बाद हमसभ कतए रहब? एकटा अपन घर तँ हेबेक चाही।"

"बात तँ सही कहि रहल छी । मुदा हम करू की?"

"अपन काज अहाँ नहि करब तँ करत के?"

"माधवकेँ बजा लैत छी । ओएह किछु करत ।"

"फेर ओएह बात । सभ किछुमे माधव-माधव करए लगैत छी।"

"ओ अपन भविष्य देखत की अहाँक कोठा बनाओत?"

"जखन ककरोपर अहाँकेँ विश्वासे नहि अछि तखन हम की कए सकैत छी?"

आखिर जेना-तेना ओ सभ माधवेक सहयोगसँ दरभंगामे घर बनओलथि । गोविंदकेँ तँ नौकरीसँ छुट्टी नहि भेटनि। तेँ सभटा माधवकेँ सुनझा देथि । श्यामा अपना भरि ओतए अबैत-जाइत रहथि जरूर, मुदा किछु चलनि नहि । जे माधव चाहथि सएह गोविंद करथि । टाकाक हिसाब-किताब माधवे राखथि । मकान बनि तँ गेल , मुदा साल भरिक भीतरे ओहिमे सँ चट्टसभ ओदरए लागल । ओसारा दिस एकहाथ मकान धसि गेल । लागए जेना

चार करखनहु खसि पड़त। मकानक हालति देखि दुनू बेकतीमे झंझट होइत रहैत छलनि । मकान बनेबाक हेतु माधव जे टाका मांगलखिन,गोविंद दैत गेलाह । तखनो जे मकान बनल से सामने छल। मकानक हालति देखि गोविंद मोनमे बहुत कष्ट भेलनि। आब हुनका श्यामाक बात बुझएमे आबए लगलनि । मुदा ताबे तँ बहुत देरी भए गेल छल। सेवानिवृत्तिक बाद दुनू बेकती ओहि मकानकेँ नीकसँ मरम्मति करओलथि । तकर बादे ओ सभ ओहिमे रहए अएलाह।

सेवानिवृत्तिक बाद दुनू बेकती दरभंगाक घरमे रहए आबि गेलाह । मुदा समय बिताएब पराभव भए जानि। जेहो परिचित लोकसभ छलनि सेहोसभ कन्नी काटए लगलथि ।

"हिनका लग बैसलहुँ तँ बैसले रहि जाएब ।"

"के दिनभरि हिनकर झूठ-फूस सुनैत रहत ।"

तरह-तरहक बात लोकसभ करैत । दरभंगामे घर बनओने छलाह जे ओतए नीकसँ समय काटि लेताह । मुदा से भेल नहि । दरभंगामे असगर रहैत-रहैत गोविंदक मोन उचटि गेलनि । माधव कहिओ खोजो-पुछारी नहि करथि । गामक जमीनसभ सँ की उपजा होइत छल तकर किछु चर्चो नहि करथि । आखिर एक-दिन दुनू बेकती भोरे-भोर गाम पहुँचि गेलाह । ओहीदिन अपन कीनल जमीनमे भूमि-पूजन केलनि आ ओहीदिनसँ गाममे घर बनाएब शुरु कए देलनि । एहिबातसँ माधव पहुत परेसान भए गेलाह ।

"भने निचैनसँ दरभंगामे छलहुँ । गामक सरल राजनीतिमे दिन-राति परेसान रहब ।"

एहि तरहेँ ओ गोविंदकेँ बुझाबक प्रयास केलाह । मुदा गोविंद तँ निर्णय कए लेने रहथि जे आब गामे रहब । तकर बाद तँ माधव अपन असली रूपमे आबि गेलाह ।

“गामक सभटा जमीन हमर अछि । हम सौंसे जीवन एहीमे लागल रहलहुँ । हम एही द्वारे नौकरी नहि केलहुँ । हमर धिआ-पुता बरबाद भए गेल । तरह-तरहक बातसभ ओ करैत रहलाह । कोनो तरहेँ चाहथि जे गोविंद मकान बनेनाइ छोड़ि दरभंगा वापस चलि जाथि । मुदा गोविंदो अड़ि गेलाह । पाछूसँ श्यामा सेहो जान लगओने रहलीह । आखिर मकान बनि गेल । गृहप्रवेशक दिन माधव सहटि कए मधुबनी चलि गेलाह । हुनकर पत्नी लक्ष्मी सेहो कोनो आन आङन चलि गेलीह । धिआ-पुतासभ सेहो नहि टकसल। तकर बाद जे माहौल खराब भेल से खराबे होइत चलि गेल । दुनू भाइमे नित्य कोनो-ने-कोनो बात लए विवाद होइते रहैत छलनि । एकदिन एहिना जमीनक बटबाराक प्रश्नपर दुनू भाइमे बहस होबए लागल-

“सभटा जमीन हमर कीनल अछि । एहिमे तोहर हिस्सा कतएसँ हेतह?”-गोविंद बजलाह ।

“सभटा जमीन हमर नामे अछि । जा कए कागज देखि लिअ। बेफजुलक झंझट केलासँ किछु होबएबला नहि अछि।”

दुनू भाइमे हल्ला सुनि श्यामा आ लक्ष्मी सेहो ओतए आबि गेलीह । बात बढ़िते गेल । गोविंद तामसे आगि भए गेल रहथि । माधवकेँ किछु अनट बात कहि देलखिन । माधवो ने आब देखलक ने ताब । दरबाजापर एकटा कुरहरि देखेलैक । ओकरा उठा कए जोरसँ गोविंदक माथपर बजारि देलक । गोबिंदक माथ दू फाक

भए गेलनि । माधव ठामहि खसलाह । सौंसे खून बहि रहल छल। गोविंद सभदिनक हेतु एहि दुनिआकेँ छोड़ि कए जा चुकल छलाह। ई दृश्य देखि श्यामाकेँ नहि रहल गेलनि । ओ ओएह कुरहरि उठओलनि आ माधवक माथपर बजारि देलनि। जाबे माधव किछु करितए,किछु बुझितए ताबे ओहो भूलंठित भए चुकल छल ।

देखिते-देखिते भयाओन दृश्य उपस्थित भए गेल । गामक लोकसभ छगुन्तामे छल । सभ एतबे बाजए-

“माधव गलत केलक । गोबिंद सन भाइक संग ओकरा एना नहि करबाक चाहैत छल ।”

थोड़बे कालमे पुलिसक सायरन सुनाएल । पुलिस दनादन पहुँचि गेल । ओ श्यामाकेँ गिरफ्तार करए चाहैत छल । मुदा सौंसे गामक लोक अड़ि गेलैक । श्यामाकेँ धेरि कए बैसि गेलैक । सभ एतबे कहैत –“श्यामा निर्दोष अछि ।”

“के दोषी अछि के नहि तकर निर्णय तँ न्यायालय करत ।”

आखिर श्यामाकेँ पुलिस लेने चलि गेल । बहुत दिन धरि न्यायालयमे मामिला चलैत रहल । सौंसे गामक लोक श्यामाक पक्षमे गबाही देलक। न्यायाधीशकेँ सेहो गबाहसभक बात उचित बुझेलनि । ओ श्यामाक पक्षमे निर्णय देलथि । श्यामा बाइज्जति रिहा कए देल गेलथि । श्यामा लौटि तँ गेलीह मुदा ताधरि ओ डीह साफे उजड़ि गेल छल । मकान ठामहि छल । सभटा जमीन ठामहि छल । मुदा ओकर दाबेदारसभ एहि दुनिआसँ जा चुकल छलाह।

7.2.2022

जहिना छी तहिना रही

हम केबार खोलैत छी । हाथमे आफिसबला झोरा अछि । द्वारिसँ बाहर होइते रही कि बुझाएल जेना पड़ोसीक केबार सेहो खुजि रहल अछि। मुदा ओ तुरंत बंद होबए लगैत अछि । हम सीढ़ीसँ नीचाँ उतरए लगैत छी । जखन घरसँ बाहर सड़कपर पहुँचि जाइत छी तखन हुनकर केबार खुजबाक अबाज सुनाइत अछि । हम आगू बढ़ैत चलि जाइत छी । जखन हम मदर डेयरी बूथ लग पहुँचैत छी तखन हमर पड़ोसी सेहो अपन घरसँ बाहर सड़कपर पहुँचि जाइत छथि । हमरा दुनूगोटेमे दस लग्गाक दूरी अछि । हम कनीके आगू बढ़ैत छी । ओतए रस्ता मुड़ि जाइत छैक । आब पड़ोसी नहि देखाइत छथि । थोड़बे कालमे हम बस स्टैंडपर पहुँचि जाइत छी । ओतए बसक प्रतीक्षा कए रहल छी । बड़ीकाल धरि बस नहि आएल । ताबे पड़ोसी सेहो आबि गेल छथि । ओही बससँ हुनको जेबाक छनि । ओ बसस्टैंडक एकटा कोन दिस सड़कि जाइत छथि । हमहु ओमहरे चलि जाइत छी । कारण हमरा बहुत दिनसँ इच्छा रहए जे हुनकासँ परिचय होअए । हुनकर नाम गुप्ताजी छनि आ सचिवालयमे काज करैत छथि । एतबा तँ बूझल रहए । मुदा सामनेमे गप्प-सप्प नहि भेल रहए। जखन कखनहु मौका अबैत बुझाइत की गुप्ताजी पाछू सहटि जइतथि । लगैत छल जे आइ ओ शुभदिन आबि गेल अछि । आइ पड़ोसीसँ गप्प भइए कए रहत । एही उत्साहमे हम हुनका नमस्कार करैत छी-

“नमस्कार गुप्ताजी!

मुदा ओ दोसर दिस एना तकैत रहि जाइत छथि जेना किछु सुनने नहि होथि ।

हम हुनकर सामने चलि जाइत छी । फेर टोकैत छिअनि- “नमस्कार गुप्ताजी!”

ओ एकदम सकपका गेलाह । “अच्छा,अच्छा । अहाँ सामनेबला फ्लैटमे रहैत छी ने ।”

“हँ, हँ ।”

हम किछु आओर बजितहुँ ताहिसँ पहिनहि बस आबि गेल आ ओ दौड़ि कए आगूए बाटे बसमे चढ़ि गेलाह । हम पाछू बाटे बसमे चढ़लहुँ । बस ठसाठस भरल छल । तकर बाद हमरासभकेँ बसमे भेंट नहि भए सकल । बस ठसाठस भरल छल । हम ठामहि ठाढ़ रहि गेलहुँ । जेना-तेना टिकटक जोगार केलहुँ । तकरबाद संचमंच ठाढ़े रहि गेलहुँ । जखन हमर बसस्टाप आएल तँ आगू जगह खाली भए गेल छल । कहि नहि गुप्ताजी कखन बससँ उतरि गेल रहथि। हमहु अपन बसस्टापपर उतरि कार्यालय दिस बिदा भेलहुँ ।

तकर बाद की भेलैक की नहि,एक दिन गुप्ताजी सरकारी मकान छोड़ि देलाह । जाइतो काल ओ भेंट नहि केलनि । इहो जानकारी अनकेसँ भेटल । मुदा कहबी छैक जे दुनिआ गोल छैक। सएह एतए देखबामे आएल । किछुदिनक बाद गुप्ताजीक कार्यस्थान हमरे मंत्रालयमे भेलनि । संयोगसँ हुनकर बैसबाक ओरिआन सेहो ओही हालमे कएल गेल । कहबाक माने जे गुप्ताजी आब चाहे-अनचाहे नित्य देखाइत रहताह,ओहो एक बेर नहि ,दिन भरि ।

ओहिदिन पहिल बेर जखन गुप्ताजी हालमे बैसलाह तखनहु ककरोसँ कोनो गप्प-सप्प नहि भेलनि । ककरोसँ परिचय नहि केलनि । बस ओतए अएलाह,कुर्सीपर अपन कोट लटकओलाह आ चाह पीबए चलि गेलाह । ओहि समयमे दिनक पौने बारह बाजि रहल छलैक । हमर चपरासी राजन कहलक –"ई तँ हमरे संगे बससँ अएलाह अछि । हमर गामसँ सटले दुधना बसस्टापपर बसमे चढ़ल रहथि ।"

दोसरदिन भेने जखन राजन बसमे चढ़ल तँ दुधना बसस्टापपर गुप्ताजी सेहो ओतए बसमे चढ़लाह । हुनका संगे एकटा महिला सेहो छलनि । ओ महिला आगू जा कए महिला सीटपर बैसि गेलि। गुप्ताजीकेँ जगह नहि भेटलनि । ओ राजनेक बगलमे ठाढ़ भए गेलाह । राजन हुनका प्रणाम केलक । दुनूगोटेमे गप्प-सप्प होबए लगलैक ।

गप्प-सप्पक क्रममे पता लगलैक जे दुनूगोटे लगे-पासक रहनिहार अछि । धारक पूब दुधना आ पच्छिममे मछहिआ गाम अछि । दुनूगामक लोक दुधनेमे बस पकड़ैत अछि । संगे-संगे बसमे अबैत जाइत काल परिचय भेलैक । बादमे तँ कार्यालयमे भेंट होइते रहलैक ।

एकदिन दूपहरमे गुप्ताजी कार्यालय पहुँचले छलाह । कुर्सीपर कोट टांगि सुस्तेबाक प्रयासमे लागल छलाह । ताबे केओ कहलकनि- "साहेब तीन बेर बजा चुकल छथि ।" से सुनितहि मोन धोंछ भए गेलनि। की करी,की नहि करी एही गुनधुनमे लागल रहथि । एतबेमे सन-सन करैत देबकी हाँलमे प्रवेश केलक,सोझे गुप्ताजीक कुर्सी लग गेलि आ हुनकर कालर पकड़ि लेलनि । तरह-तरहक बात बाजए लागलि । कार्यालयमे,सेहो ओते लोकक

उपस्थितिमे एना सरेआम गुप्ताजीकेँ दुर्दशा देखि सौंसे हाँल सकदम छल । केओ बुझिए नहि रहल छल जे आखिर बात की छैक?आखिर गुप्ताजी उठलाह आ ओकरा संगे हाँलसँ बाहर चलि गेलाह । ओना पहिनहु दुनूगोटे भरि-भरि दिन कैंटिनमे बैसि बतआइते रहैत छलाह । मुदा ओहि दिन की विशेष भेल रहैक से लोक अनुमान नहि कए सकल ।

एहि घटनाक बात हमरा गुप्ताजीक बारेमे जानबाक उत्सुकता बढ़ि गेल । कारण ओ बहुत दिन धरि हमर पड़ोसी रहल रहथि । हुनकर व्यवहारमे विचित्रता तँ छलनिहे । तकर कारण आब बुझा रहल छल । ओही समयमे राजन हमरासभक हेतु चाह लए अनने छल । हम चाह पीबैतछी । लगेमे राजन सेहो चाह पीबि रहल छल। गप्प-सप्पक क्रममे ओ गुप्ताजीक प्रकरणमे कहए लागल-

"गाममे तँ गुप्ताजीक बारेमे बच्चा-बच्चाकेँ बूझल छैक।"

"से की?"

"गुप्ताजीकेँ एकटा बिआह पहिनेसँ भेल छैक । ओ पत्नी गामेमे रहैत छनि । एमहर नौकरीमे देबकीसँ सेहो संबंध भए गेल छनि ।"

"देबकी छैक के?"

"पहिने दुनूगोटे एक्के कार्यालयमे रहए । मुदा जखन एकरसभक आपसी घोलफचक्काक चर्चा होबए लागल तँ अधिकारी लोकनि एकरसभक स्थानान्तरण दूठाम कए देलथि । मुदा ई सभ तैओ सटले रहैत अछि ।"

"तोरा ई सभ केना पता लगलह?"

"हमरे गाम लगक छथिन ने। हमसभ नित्य एकहि बससँ कार्यालय अबैत-जाइत छी । रस्तामे सभ तरहक गप्प होइत अछि। हमरसभक गामक लोक हिनकर गाम जाइत-अबैत रहैत अछि । एहिसभसँ बात सौंसे पसरि गेलैक । कहिओ काल हम हुनका ओहि महिला संगे बसमे चढ़ैत सेहो देखैत छिअनि ।"

ओहिदिन सरेआम बैज्जति भेलाक बाद गुप्ताजी वापस हॉंलमे नहि अएलाह । भरि दिन एमहर-ओमहर बौआइत समय काटि लेलनि । बीच-बीचमे कैकबेर हुनकर साहेब बजबैत रहलखिन। हुनकर टेबलपर चश्मा ओहिना राखल छल । हुनकर कोट ओहिना कुर्सीसँ अड़कल छल । साहेबकेँ जखन तामसे नहि रहल भेलनि तँ आखिर अपने हॉंलमे पहुँचि गेलाह । ओहिठाम हुनकर कुर्सी खाली छल । साहेब वापस जाए लगलाह । वापस जाइत काल संयोगसँ गेटेपर दुनूगोटेकेँ भेंट भए गेलनि । गुप्ताजीकेँ देखितहि साहेब चिचिआए लगलाह । मुदा गुप्ताजीक लेल धनसन । आखिर साहेब कतेक चिचिऐतथि? वापस अपन कक्षमे चलि गेलाह । गुप्ताजी अपन सीटपर सँ झोरा उठओलाह आ बसस्टाप दिस बिदा भए गेलाह । बस स्टापपर राजन पहिनहिसँ पाँतिमे ठाढ़ छल । ओएह हिनको टिकट लए लेलक । दुनूगोटे संगे बससँ बिदा भेलाह ।

दिनभरिक घटनाक बोझ गुप्ताजीक मोनपर ततेक भारी पड़ल छलनि जे रस्ताभरि बजबाक साहस नहि भेलनि । चुपचाप बसस्टाप अएलापर बससँ उतरि रहल छलाह । राजन सेहो हुनकर पाछूए उतरि रहल छल । ताबतेमे देबकी सेहो उतरैत देखेलनि । गुप्ताजी पाछू मुड़ि कए देखैत छथि। अखनहु ओकर मुँह तामसे लाल बुझाइत छल । लगैक जेना ओ किछु कहलखिन आ देबकीक चमेटा हुनकर गालपर पड़लनि ।

रस्तामे ने देबकी हुनका टोकनि ने गुप्ताजी ओकरा किछु कहलखिन । राजन पाछू-पाछू चलैत रहए । किछु कालक बाद अपन गामक रस्तापर चलि गेल । ई दुनूगोटे ओहिना आगू-पाछू अबैत -जाइत रहलाह । आखिर चुप्पी तोड़ैत गुप्ताजी बजलाह-

“अहाँकेँ नीकसँ बूझल अछि जे हम बिआहल छी । तखन..”

“तखन की? ई तँ अहाँकेँ तखनो बूझल छल जखन लाख मना केलाक अछैतो हमरासँ सटि रहल छलहुँ ।”

“हमर हालति तँ अहाँ देखिए रहल छी।”

“मुदा हमर हालति के देखत? हम तँ अविवाहिते छलहुँ आ छी। हमरो देह-देह छैक। ई कोनो पाथरक बनल नहि अछि । एहिमे संवेदना छैक , भावना छैक । मात्र गप्प-सप्पसँ एकर समाधान नहि भए सकैत अछि ।”

देबकीक बात सुनि-सुनि गुप्ताजीक मोन बहुत घबड़ाइत छलनि । ओहुना आजुक दिन बहुत खराब बीति रहल छलनि। बसमे चुपचाप समय काटि गाम वापस आबि रहल छलाह । सोचने रहथि जे आब विश्राम करब । घरपर जाइते सूति रहब । सभटा बात बिसरा जाएत । मुदा अखन तँ तेसरे दृश्य शुरु होबए जा रहल छल । दुनूगोटेमे गप्प भइए रहल छल । जहाँ ओ अपन दलानपर पैर रखलाह की हुनकर सार एकटा लठैत संगे तैयार छल । ओ दुनूगोटे हिनकर पाछू-पाछू देबकीकेँ चलैत देखितहि चिकरनाइ शुरु कए देलथि । ततबे नहि । हुनकर सार लठैतक संगे हुनकर गट्टा पकड़लक आ दे दनादन,दे दनादन कैकलाठी हुनकापर चला देलक। गुप्ताजी ठामहि खसलाह । हुनका ओहिना अधमरु छोड़ि कए ओ सभ देबकी लग पहुँचल । ओकरो किछु-किछु अनट

कहलकैक । मुदा देबकी तँ पहिनहिसँ तमसाएल छलि । ओ लाठी पकड़ि लेलक आ चिचिआ उठलि-

"खबरदार यदि आगू बढ़बह तँ नीक नहि हेताह ।"

ओकर कड़क अबाज सुनि दुनूगोटे सहमि गेल,लाठी नीचाँ कए लेलक । ओ सभ सम्हरितए,किछु आगू सोचितए ताबे पुलिसक सायरनक अबाज सुनेलैक । से सुनितहि दुनूगोटे भागल। कनीके आगू गेल होएत की ओकरसभक सामनेमे पुलिसक जीप आबि गेल । जीप रोकि कए पुलिससभ दनादन उतरि गेल आ दुनूगोटेकेँ पकड़लक।

"बातकी छैक? तूँ दुनूगोटे हमरासभकेँ देखितहि एना किएक भागि रहल छह?"

ओ सभ किछु नहि बजलैक । पुलिसक सक बढ़ि गेलैक । दुनूगोटेकेँ जीपमे बैसा ओ सभ घटनास्थलपर पहुँचल । ओतए गुप्ताजी बेहोस पड़ल छलाह । देबकी हुनकर लगेमे ठाढ़ि ककरो फोन कए रहल छलि ।

तकर बाद कैकदिन धरि थाना-पुलिस होइत रहल । जेना-तेना मामिला शांत भेल । गुप्ताजी इलाजक बाद दोसर दिन घर वापस अएलाह । देबकी अपन डेरा वापस चलि गेलि । गामक किछु लोक बीचमे पड़ि कए हिनका लोकनिकेँ सोलह करओलक । ई निर्णय भेल जे गुप्ताजी आब देबकीकेँ गाम नहि अनताह,ओकर पाछू नहि पड़ताह आ अपन गृहस्थीमे नीकसँ लागि जेताह । ताहि हिसाबे किछु दिन गुप्ताजी चलबो केलथि। ओ देबकीसँ साफे कटि गेलाह। किछुदिन कार्यालयसँ छुट्टी लए लेलनि ।

ओमहर देबकी बहुत परेसान रहए । ने ओकरा गुप्ताजीसँ भेंट होइ ,ने फोन लगैक । एसगरि फ्लैटमे रहैत-रहैत तंग भए गेलि । सहरक जीवनमे तरह-तरहक विचित्रता रहैत अछि,किछु परिस्थितिवश,किछु बेसाहल । कोनो महानगरमे ई समस्या आओर विकराल रूप धेने रहैत अछि । कारण एतए लोक अपन पड़ोससँ सालो अपरिचित रहि जाइत अछि । बगलमे रहनिहार मकान मालिक छथि कि किरायेदार सेहो नहि पता लगैत अछि । इएह हाल देबकीक लगपासमे सेहो रहैक।

संयोगसँ एकदिन देबकीक बगलक फ्लैटमे एकटा युवक भेटलखिन । ओहो कैकदिनसँ देबकीकेँ देखि रहल छलाह । मुदा दुनूगोटेमे केओ ककरो टोकथि नहि । एहिना कतेको दिन बीति गेल। एकदिन संयोगसँ देबकीक पेटमे बहुत जोरसँ दर्द उठलनि । ओ अपन फ्लैटमे चिचिआ रहल छलि । हुनकर चिचिएनाइ बगलक फ्लैटमे रहनिहार नरेशक कानमे पड़लनि । ओ तुरंत देबकीक केबार लग पहुँचलाह । ता धरि देबकी स्वयं केबार खोलि बाहर जेबाक उपक्रममे छलीह । स्थितिकेँ बूझि नरेश देबकीकेँ तुरंत अपन कारसँ लगीचक अस्पताल लए गेलाह । राति भरिक सघन चिकित्साक बाद देबकीक स्वास्थ्यमे सुधार भेलनि । भोर होइत-होइत ओ आँखि खोललनि । आँखि खोलितहि सीरमामे नरेश ठाढ़ देखेलखिन । हुनका विश्वासे नहि होनि जे सहरोमे एहन लोक होइत छैक ।

एहि तरहें नरेशक देबकीसँ संपर्क बढ़िते गेल । एक दिन मौका देखि नरेश देबकीकेँ कहलकनि-

“हमसभ दुनूगोटे   एसगरे छी । एक-दोसरकेँ नीकसँ जनैत छी। हमर इच्छा अछि जे हमदुनूगोटे बिआह कए ली आ सुखी जीवन बिताबी ।”

“एहि बातक कोन गारंटी अछि जे हम सभ बिआह कए सुखीए रहब? ओहुना हम बिआह करबका इच्छुक नहि छी।”

“से किएक?”

“की -की कहू? कहि कए हेबे की करत?”

“तखन?”

“आब जिनगी वाँचले कतेक अछि? जहिना छी तहिना रही।”

25.02.2022

संयोग

राजकुमारकेँ अचानक ओहि राति सुतले-सुतल डांड़मे दर्द उठलैक । दर्द असह्य होइत गेलैक । घरक लोकतँ उठिए गेल,लग-पासमे रहनिहार लोकसभ सेहो नहि सुति सकल । सभ अपना भरि प्रयास केलक जे हुनकर दर्द कम होइन । जकरा जे फुरेलैक दबाइ बतबैत गेलैक मुदा किछु असरि नहि भेलैक । भोरे हुनका उठा-पुठा कए अस्पताल लए गेल । डाक्टरसभ अपना भरि बहुत प्रयास केलकनि। मुदा किछु फएदा नहि भेलनि। ओ ओछाओन धेलाह से धेने रहि गेलाह । दिन-राति डाक्टर लोकनि आबति-जाथि । मुदा राजकुमारक हालति खराबे होइत गेलनि । हुनकर बामा कात सुन्न पड़ि गेलनि । कोनो दबाइक फएदा नहि भेलनि । हारि कए हुनका डाक्टरसभ अस्पतालसँ छुट्टी कए देलक । हुनका एही हालतिमे वापस जाइत देखि डाक्टर शंकर बहुत दुखी छलाह । डाक्टर शंकरकेँ बेसी चिंता रजनीक हालतिपर होइत छलनि। ओकरा देखितहि डाक्टर साहेब चिंतामे पड़ि जाइत छलाह । एहन फूल सन कोमल आ सुंदरि महिलाक जिनगी एहि अपाहिज संगे कोना कटत? ओ दिन-राति एही चिंतामे परेसान रहैत छलाह । ओएह हुनकर इलाजक प्रभारी रहथि। अपना भरि कोनो कसरि छोड़ने नहि रहथि। मुदा भाग्यो कोनो चीज होइत अछि ।

युवावस्थेमे राजकुमार अपाहिज भए गेल छलाह । हुनकर इलाजमे रजनी कोनो कसरि नहि रखलथि । अस्पताल आ घर एक कए देलथि । डाक्टर शंकरकेँ हुनका लोकनिक हालति देखि बहुत सहानुभूति होइत छलनि । मुदा ओ बूझैत छलाह जे राजकुमारक

रोग असाध्य छैक । एकर निदान नहि छैक । मुदा एकटा डाक्टर ई बात रोगीकेँ कोना कहि सकैत अछि ? रोगीक संग देनिहारि रजनी तँ आओर तन्नुक रहथि । तथापि डाक्टर साहेब अपना भरि प्रयास करैत रहलाह । कैकबेर अस्पतालमे बहुत देरी भए जाइक तँ डाक्टर साहेब ओकरासभकेँ अपना ओहिठामसँ भोजनक ओरिआन करितथि । कैकबेर ओ स्वयं राजकुमार ओहिठाम चलि जाथि। डाक्टर साहेबक प्रति रजनीक मोनमे क्रमशः सिनेह उत्पन्न होबए लागल । डाक्टर साहेब तँ हुनकासँ प्रभावित छलाहे।

एकबेर जखन दुनूगोटे अस्पताल आएल रहथि तँ अचानक राजकुमारक रक्तचाप बहुत बढ़ि गेलनि । हुनका अस्पतालमे भर्ती कराएब जरूरी भए गेलनि । रजनी एहि स्थितिक हेतु तैयार नहि रहथि । ओ राजकुमारक संगे भोरे अपन घरसँ बिदा भेल रहथि । उम्मीद रहनि जे आन बेर जकाँ साँझ हेबासँ पहिने वापस भए जेतीह। मुदा से भेल नहि । ओ स्नानो नहि केने रहथि । भोजनक कोन कथा । डाक्टर साहेब हुनका परेसान देखि कहलखिन-

“हमर डेरा अस्पताले परिसरमे अछि । अहाँ ओहिठाम चलू । स्नान, भोजन कए सुस्ता लेब । तकर बाद फेर अस्पताल चलि आएब । ओहिबीच हमर स्टाफ हिनकर देखभाल करैत रहतनि ।”

रजनी संकोचवश किछु नहि बजलीह । डाक्टर हुनकर मनोदशा बूझि गेलखीन ।

“अहाँ संकोच नहि करू । डेरापर हमर माए अछि । अहाँकेँ कोनो दिक्कति नहि होएत ।”

डाक्टरक बहुत आग्रह केलाक बाद ओ हुनका संगे हुनकर डेरा हेतु बिदा भए गेलीह ।

रजनी डाक्टर साहेबक डेरापर हुनका संगे पहुँचलीह । संयोगसँ हुनकर माए पूजा करबाक हेतु मंदिर चलि गेल रहथि । रजनी हुनका ओहिठाम बहुत आश्वस्त रहथि । डाक्टर साहेबक आत्मीय व्यवहारसँ ओ पूर्व परिचित रहथि । डाक्टर साहेब तुरंत स्वयं चाह बनबए लगलाह ।

“एना नहि करू । हम चाह बनबैत छी ।”

डाक्टर साहेब हुनकर आग्रह नहि टारि सकलथि । रजनी तुरंत चाह बना लेलेथि । संगे डाक्टर साहेब हेतु किछु जलखै सेहो बना लेलथि ।

“ई तँ हदे भए गेलैक । अहाँ पाहुन छी आ उन्टे हमरे जलखै करा रहल छी ।”

“एहिमे कोन बात भेलैक । अहाँ एतेक थाकल छी । नित्य हमरासभक कल्याणमे लागल रहैत छी । किछु हमरो तँ करए दिअ ।”

डाक्टर साहेब किछु नहि बजलाह । दुनूगोटे संगे चाह पिलाह,जलखै केलाह ।

“अहाँ सेहो बहुत थाकल छी । स्नान कए लिअ । माए अबिते होएत । हमरा दुनूगोटेक भोजन बना देत । तकर बादे अस्पताल जाएब ।”

“एहनो कहीं भेलैक अछि । हमरा अछैत ओ किएक भानस करतीह । हमरा समानसभ देखा दिअ । हम तुरंत भोजन बना लेब । तकर बादे स्नान करब ।”

डाक्टर साहेब की कहितथिन? थोड़बे कालमे ओ भोजन तैयार कए देलनि । एहि बीचमे डाक्टर साहेब भनसा घरमे अबैत जाइत रहलाह । रजनीक हाल-चाल लैत ररहलखिन । दुनूगोटे बहुत प्रसन्न बुझाइत छलाह । लगैत छल जेना ओ सभ एही क्षणक प्रतीक्षा कए रहल छलाह । भोजन तैयार केलाक बाद रजनी स्नानगृहमे चलि गेलीह । एमहर डाक्टर साहेबक माए सेहो पूजा कए आबि गेलखिन । ओ ठोकले भनसा घरमे पहुँचि गेलीह । हुनका भेलनि जे डाक्टर काजपरसँ थाकल ठेहिआएल आएल छथि । जल्दीसँ चाह,जलखैक ओरिआन कएल जाए ।

ओतए एकटा अपरिचित महिलाकेँ देखि हुनका बहुत आश्चर्य भेलनि । डाक्टर सेहो ताबे सहटि कए ओतए आबि गेल छलाह । ओ मायक मोनमे चलि रहल चिंताकेँ बुझलखिन ।

"ई अपने गाम लगक छथिन। अस्पतालमे हिनकर पतिक इलाज हमरे देख-रेखमे चलि रहल छनि । आइ बहुत देरी भए गेलनि तँ हमही आग्रह कए अपन डेरापर लेने अएलिअनि ।"

रजनी स्नानक बाद ओतहि भोजन केलथि । डाक्टर साहेब सेहो हुनकर संगे भोजन कएलनि । तकर बाद दुनूगोटे अस्पताल लौटि गेलाह ।

एकर बाद तँ जखन करवनो रजनी अस्पताल आबथि तँ डाक्टर साहेबक संगे हुनकर डेरापर अवश्य जाथि । एहिमे दुनूगोटेकेँ प्रसन्नता होनि । एहि तरहें हुनका लोकनिक आपसी घनिष्टता बढ़ैत गेलनि । डाक्टर साहेब अविवाहित छलाह । रजनी हुनका बहुत पसिंद रहथिन ।रजनीकेँ सेहो डाक्टर साहेब बहुत पसिंद रहथिन । मुदा समस्या रहैक जे रजनी विवाहित रहथि आ हुनकर पति

जीबितो छलखिन । मुदा अपंग भए गेल छलखिन । हुनकर बिमारी छुटए बला नहि रहनि । तँ की? हुनका छोड़ि देथिन? ई बात ओ सपनोमे नहि सोचि सकैत छलीह । डाक्टर साहेब ई बात बुझथिन । आखिर एकदिन ओ स्वयं बातकेँ आगू बढ़बैत कहैत छथि-

"हम अहाँसँ बिआह करए चाहैत छी । हमर माएकेँ सेहो अहाँ बहुत पसिंद छिअनि ।"

"हम तँ विवाहित छी ।"

"हुनकर हालति अहाँ जनिते छी । अहाँ बहुत प्रयास केलहुँ । हमहु लागले छी । दुर्भाग्यवश हुनकर बिमारी ठीक होबएबला नहि छनि । एहिना जतेक दिन जीबि जाथि ।"

"तकर कोन उपाय छैक । ई तँ हमर दुर्भाग्य अछि । जखन नीक समय हुनका संगे बितओलहुँ तँ खराबो दिनमे हुनकर संग देब हमर कर्तव्य थिक । फेर हमरा एकटा बेटीओ अछि । ओकरो पालन-पोषण करबाक अछि ।"

"जीवनमे व्यवहारिक होएब बहुत जरूरी होइत अछि । की एतेकटा जीवन अहाँ एहिना काटि लेब? यदि काटिओ लेब तँ सुखी रहि सकब से संभव नहि बुझाइत अछि । यदि अहाँ तमसाइ नहि तँ हम एकटा प्रस्ताव राखी ।"

"की?"

"हम अहाँसँ बिआह करब । कानूनीरूपसँ अहाँ हुनकासँ तलाक लए लेब । तकर माने ई नहि जे हुनका हमसभ एहिना छोड़ि देबनि । ओ हमरेसभक संगे हमरे डेराक बाहर बला भागमे रहताह । अहाँक बेटी हमरो बेटी अछि । ओकर पालन-पोषणक

सभटा भार हमर रहत । ओकर बिआह हम अपने संतान जकाँ करब । अहाँ बस एकबेर सहमति दिअ, शेष हमरापर छोड़ि दिअ ।”

“एक बेर हम हुनकोसँ गप्प करए चाहब ।”

“कोनो हरजा नहि । अहाँ हुनकोसँ गप्प कए लिअ । अपनो नीकसँ सोचि लिअ । हमरा विश्वास अछि जे ओ अपन सहमति देबामे कोनो दिक्कति नहि करताह ।”

रजनी अपन पतिसँ सभटा बात कहलखिन । ओ तँ स्वयं अपन स्थिति देखि भविष्यक हेतु चिंतित छलाह । तुरंत अपन सहमति दए देलखिन। रजनी दोसर दिन जखन अस्पताल अएलाह तँ डाक्टर साहेबकेँ सभ बात कहलखिन । दुनूगोटे एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रहथि। रजनी अपन पूर्वपतिकेँ कानूनी रूपसँ तलाक देलाक बाद डाक्टर साहेबसँ विधिवत बिआह कए लेलथि । दुनूगोटे आनंदपूर्वक संगे रहए लगलथि । राजकुमारक देख-रेखमे कोनो कमी नहि रहलनि । रजनी आ डाक्टर साहेब दुनूगोटे हुनकर देखरेख पूर्ववते करैत रहलाह । डाक्टर साहेब आ रजनीकेँ दूटा संतान भेलनि। एकटा बेटी रजनीकेँ पहिनोसँ रहनि । तीनू संतानकेँ एक रंग शिक्षा देल गेलनि । तीनूक बिआह डाक्टर साहेब बहुत उत्साहसँ केलथि । डाक्टर साहेब जीवन भरि अपन वचनक पालन केलथि । एहि तरहें एकटा विषम परिस्थिति सुखद संयोगमे बदलि गेल ।

नियति

हुनकर एकमात्र पुत्र राजा चारूकात हुनका तकने फिरए । मुदा हुनकर कोनो पता नहि चलि रहल छलनि । सौंसे गाममे हल्ला भए गेल। जकरे देखू सएह एतबे बाजि रहल छल- “सएह एहि बएसमे रमण भाइ कतए चलि गेलाह,की भेलनि?” ककरो कोनो अंदाज नहि लगैक जे आखिर बात की छैक?

बहुत काल धरि तँ ओ किछु बाजए नहि,असगरे गाममे सौंसे बौआएल फिरए । मुदा जखन रमण भाइ कतहु नहि भेटलखिन तँ ओकरा नहि रहल गेलैक । ओ पोखरिक महारपर ठाढ़ भए भोकासी पारि कए कानए लागल । ओकरा एहि तरहें कानैत देखि लगपासमे आबि-जा रहल लोकसभक ध्यान गेलैक ।

“की भेलैक? तूँ एना किएक कानि रहल छह?...”सभ एतबे पुछए लगलैक ।

“बाबू कतहु चलि गेलखिन । सौंसे ताकि लेलिअनि । मुदा कतहु नहि भेटि रहल छथि ।”

“ओ तँ कतहु बहराइतो नहि छलाह ।”

“जरूर किछु बात भेल हेतैक । सभटा बात फरिछा कए बाजए।”

“कही घरे-आङनमे ने होथि । एकबेर अपने आङनमे जा कए फेरसँ ताकि लहुन ...।”

जतेक आदमी ततेक तरहक बातसभ होइत रहल । मुदा समाधान ककरो लग नहि रहैक । सभ अपना हिसाबे किछु-ने-

किछु परामर्श दैत गेलैक,आगू बढ़ैत गेलैक । एहि तरहें बात सौंसे गाम पसरि गेल । राजा बौआइत-बौआइत थाकि गेल । आब की करए? ककर-ककर बात सुनए । हारि कए ओ घर वापस आबि गेल । घर वापस अयलाक बाद ओ असोथकित भए ओसारापर बैसि गेल । किछु कालक बाद दू-तीनटा छौंड़ा ओकरा लग आएल-

"हमसभ हुनका अखने कलम लग बैसल देखलिअनि । पुछबो केलिअनि- एतए असगरे की कए रहल छी? मुदा ओ किछु नहि बजलाह । अपितु,विचित्र जकाँ हमरासभ दिस ताकए लगलाह । लागल जेना हुनकर आँखि उनटि गेल छनि । पैर सेहो उनटल बुझाएल। हमसभ बहुत डरा गेलहुँ आ इएह- ले ओएह- ले भगलहुँ से एतहि आबि कए ठाढ़ भेलहुँ अछि । ओ सभ बाजिए रहल छलाह कि पोखरिपर वापस अबैत किछुगोटे बाजए लगलाह--

"ओतए किछुगोटे रमण भाइकेँ महादेवक मंदिरसँ बहराइत देखलकनि । ओ सभ हुनका रोकबाक प्रयास केलाह । मुदा ततेक जोरसँ झटका लगलनि जेना बिजलीक खंभासँ सटि गेल होथि। एहि तरहक विचित्र घटना गाममे कैकगोटे देखलक-सुनलक । मुदा रमण भाइ घर वापस नहि अएलाह । राजा छटपटाइत रहि गेलाह। मुदा किछु कएल नहि होनि । सौंसे दिन एहिन झंझटिमे बीति गेल। बात गाम-गाम पसरि गेल । तरह-तरहक गुलंजरसभ उठैत रहल । मुदा ककरो लगमे पक्का समाचार नहि रहैक । के की देखलक,के की सुनलक तकर हिसाब-किताबसँ किछु फएदा हेबाक नहि छलैक । आखिर राति भए गेलैक । हारल-थाकल राजा ओसारापर ठामहि बैसल रहि गेल । आङनमे पत्नी भरिदिन उपसाल एहि जिज्ञासामे बैसल रहथि जे राजा किछु नीक समाचार अनताह। मुदा जखन ओ ओहिना वापस आबि दरबाजापर हाकरोस करैत

भेटलखिन तँ ओहो अपनाकेँ नहि रोकि सकलीह । भोकासी पाड़ि कए कानए लगलीह। रातुक बात रहैक । दूर-दुर धरि एकरसभक करुण क्रंदन पसरि गेलैक । मुदा केओ की करैत?ककरो वशमे किछु नहि रहैक । राति बितैत गेल । गाममे सभ घरे-घर सूति रहल। ओकरसभक दुनू नेना सेहो सूति गेलैक। बस राजा आ ओकर पत्नी ओहिना बैसल हाकरोस करैत रहि गेलि।

राजाक मोनमे रहि-रहि कए पश्चाताप होबए लगलैक । मोनमे तरह-तरहक बातसभ घुमि रहल छलैक । भोरक घटना ध्यानमे अबैत रहलैक। ओकरा होइक जे रमण भाइ संभवतः ओकरे बातसँ बहुत बेसी आहत भए गेलैक आ तेँ किछु कए लेलकैक । ओकर स्थिति एहनो नहि रहैक जे बहुत दूर धरि जा सकए । मुदा ओ गेलैक कतए? यदि कतहु गेलैक नहि तँ ओ कतए नुकाएल छैक? भेटि किएक नहि रहल छैक?कहि नहि ओ राति कतेकटा भए गेल रहैक। कटने नहि कटाइक । दुनू बेकती राति भरि जगले रहि गेल । राजाकेँ रहि-रहि कए भोरुका घटनाक बात मोन पड़ि रहल छलैक।

असलमे राजा पछिला एकसालसँ अपन घरसँ सटले मुखिआजीक ओहिठाम काज करैत छल । काज की करैत छल,एक हिसाबे ओ हुनकर मनेजरे भए गेल छल । जहिआसँ मुखिआजी खसलाह,ओएह घरसँ बाहर धरिक सभटा भार उठओने रहए । भोरे उठि-सुठि हुनका लग चलि जाइत । ओतहि चाह पीबैत। हुनकासभकेँ दिनचर्यामे सहयोग करितनि आ तकरबाद हुनका ओहिठामक हेतु जरूरी समानसभ आनए बजार चलि जाइत। बजारसँ लौटलाक बाद मुखिआजी आ हुनकर पत्नीक संगे गप्प-सप्प करैत । हुनका लोकनिक हेतु जलखै ,भोजनक ओरिआन करैत । घरक सफाइ करैत । ओछाओनसभ ठीक

करैत। एहिसभ करबामे ओकरा दुपहरिआक एक बाजि जाइत छलैक । तकर बाद हुनका लोकनिकेँ भोजन करबैत । तकर बादे अपना ओहिठाम अबैत । स्नान,भोजन करैत आ चोट्टे मुखिआजी लग पहुँचि जाइत । मुखिआजीक बस चलनि तँ ओकरा एको मिनट लेल नहि छोड़ितथि । मुदा कनीको काल लेल तँ ओकरा अपन दिनचर्या करहि पड़ैक । ओतबे कालमे मुखिआजी परेसान भए जाइत छलाह । कतेको बेर ओकर नाम लए चिकरैत रहैत छलाह।

मुखिआजी बहुत पहिने गामक मुखिआ रहथि । सर्वसम्मतिसँ हुनकर चुनाओ भेल रहए । पनरह वर्ष धरि ओ गामक मुखिआ बनल रहलाह । ओहि अवधिमे मुखिआक चुनाओ नहि भेलैक । तँ जे जतहि छल,से बनल रहल । मुदा हिनका मुखिआ रहलासँ इलाकाक लोक प्रसन्न रहए । कारण ओ जाबे मुखिआ रहलाह,ताबे गामक एकोटा विवाद गामसँ बाहर नहि गेल । कोट कचहरीक तँ केओ नामे नहि लैत छल । जे मुखिआजी कहि देथिन से ब्रह्मवाक्य भए जाइत छल । लोककेँ हिनकर न्यायपर अटूट विश्वास छलैक । ई छलाहो तेहने । बिना कोनो लाइ-लपेटकेँ सही बात कहबाद,करबाक साहस हिनकामे छलनि । एहि बातसँ किछुगोटे हिनकासँ बिमुखो भेलाह मुदा हुनकर किछु नहि बिगारि सकलाह। मुखिआजीक सभ धिआ-पुता बाहरे रहैत छलखिन । संगमे एकटा वाल-विधबा बेटी बहुत दिन रहलखिन । मुदा की भेलैक,की नहि एक दिन ओ हिनका छोड़ि कए कतहु चलि गेलि । तकर बाद ओकर किछु पता नहि चललैक । किछु दिन धरि तँ मुखिआजी बहुत परेसान रहलाह । मुदा एकरे नियति बूझि क्रमशः शांत भए गेलाह । अपनाकेँ समाज सेवामे झोंकि देलाह । बिना कोनो स्वार्थकेँ दिन-राति जन कल्याणमे लागल रहैत छलाह । परिणाम

भेल जे मुखिआक पदसँ हटिओ गेलाक बाद लोक हुनके मुखिआ मानैत रहल । इलाकामे हुनके डुगडुगी पिटाइत रहल । एहि तरहें सालक-साल ओ लोकक हृदयपर राज करैत रहलाह ।

मुदा समय बलवान होइत अछि । ओकर प्रहारसँ आइ धरि के बाँचल? एकदिन दुपहरिआमे गाममे बहुत हल्ला भेलैक । हल्ला जखन बढ़िते गेल आ सौंसे गामक लोक ओमहरे जाइत देखेलनि तँ मुखिआजी सेहो बिदा भेलाह ।

“देखा चाही बात की छैक? एतेक हल्ला किएक भए रहल अछि?”

ओतए पहुँचलाक बाद देखैत छथि जे दुटा सहोदर घराड़ीक बटबारा लए आपसमे भिड़ल छथि । केओ किछु,केओ किछु बाजि रहल अछि । दुनू दिससँ हँसेरीसभ फरसा भाँजि रहल अछि । मुखिआजी सोझे आपसमे लड़ैत दुनू भाइ लग पहुँचि गेलाह । अपना भरि बुझेबाक प्रयास केलनि । की एही बीचमे केओ पाछूसँ हुनकर जाँघपर तीन-चारि लाठी मारलक । ओ ठामहि खसलाह । चारूकातसँ लोकसभ दौड़ल । हुनका उठा-पुठा कए अस्पताल लए गेल । हुनकर जाँघक हड्डी चूर-चूर भए गेल छलनि । मास दिन ओ अस्पतालमे इलाज करबैत रहि गेलाह । मुदा हुनकर जाँघक हड्डी नहि जुड़ि सकलनि । ओ सदा-सर्वदाक हेतु विकलांग भए गेलाह। एहि दुर्घटनाक समाचार सुनि बेटासभ अएलनि,किछु दिन संगे रहबो केलनि । मुदा बहरिआसभक अपन मजबूरी छलैक,कतेक दिन धरि रहि सकैत । हारि कए अपन-अपन काजपर वापस चलि गेल । मुखिआजी फेर असगर भए गेलाह । ताही समयमे राजा आगू आएल । ओ बीस हजार रूपया मासिकपर मुखिआजीक

सेवामे लागि गेल । ओकरा मासिक आमदनी होबए लगलैक आ मुखिआजीक समय सेहो नीकसँ बितए लगलनि ।

मुदा कहबी छैक जे विपत्ति असगरे नहि अबैत अछि । सएह मुखिओजीक संगे भेलनि । किछुदिनक बाद हुनकर पत्नी स्नाननघरमे खसि पड़लखिन । हुनकर दहिना टांगक हड्डी निठ्ठाहे टूटि गेलनि । अस्पतालमे डाक्टर हाथ बारि देलक । कारण हुनका कतेको तरहक बिमारी पहिनेसँ रहनि । खूनमे सर्करा बहुत बेसी बढ़ि गेल रहनि । हृदय रोग सेहो रहनि । जेना-तेना कच्चा पट्टी बान्हि वापस कए देलकनि। ओहो घर वापस आबि गेलीह । तकरबाद दुनू बेकती लाचार भए गेलथि। हारि कए राजाक पत्नी हुनकर सेवामे लागि गेलथि । अखन धरि तँ रमण भाइक सेवा ओ कए दैत छलखिन । मुदा आब तँ राजा आ हुनकर पत्नी दिन-राति मुखिआजीक ओहिठाम व्यस्त भए गेलाह । रमण भाइक देखनिहार केओ नहि रहैत छल। ओ असगरे ओसारापर पड़ल रहैत छल । ने जलखैक ठेकान ने भोजनक । आओर बातक तँ चर्चे छोड़ू ।

रमण भाइकेँ एहि बातक बहुत तकलीफ रहैत छलैक जे ओकर बेटा पैसाक लालचमे ओकरा छोड़ि अनकर सेवामे लागल रहैत अछि आ ओकरासभकेँ अपन माता-पिताक हेतु समय नहि छैक । यदि कखनहु घरपर अएबो करत तँ चुपचाप । कखन वापस चलि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि । एहि तरहें रमण भाइ अपने घरमे निरंतर उपेक्षित अनुभव करैत छल । एकदिन एहिना बारह बाजि गेलैक । बिना चाह,बिना जलखैक ओसारापर एसगर पड़ल रहए । भूखसँ पेटमे दर्द भए रहल छलैक । मुदा कतहु केओ देखा नहि रहल छलैक जे ओकर सुधि लितैक । आखिर ओ जोरसँ चिकरल--

"राजा! राजा!"

राजा ओहि समयमे अपने घरमे छल । मुदा ओ सुनिओक अनठा देलक । मोसकिलसँ मुखिआजीसँ छुट्टी भेटल रहैक । घर आबि स्नान कए जलखैपर बैसले छल कि रमण भाइ चिचिआए लागलैक । एक बेर,दू बेर, तीन बेर राजा..राजा बजैत रहि गेल । मुदा जबाब नहि भेटलैक । रमण भाइ तामसे घोर भए आङन दिस बिदा भेल । ताबे राजा जलखै कए ओसारा दिस आबि रहल छल। दुनूगोटेकेँ घरक फटक लग भेंट भेलैक । रमण भाइ किछु बाजए ताहिसँ पहिने राजा चिकरि उठलैक -

"की दिन-राति चिकरैत रहैत छी? कनीको ई सोचबामे नहि अबैत अछि जे हम कोना दिन काटि रहल छी । नान्हिटा नेनासभक पेट कोना भरतैक? अहाँ हमरासभ लेल की केने छी? कथी बले हमसभ जिअब? ने धन अछि ने विद्या? चारि आदमीक हमर अपने परिवार अछि । ताहिपरसँ अहाँ दुनू बेकती छी । ई तँ संयोग अछि जे हमरा मुखिआजी काजपर राखि लेलनि जाहिसँ गुजर भए रहल अछि। नहि तँ की हाल छल से हमही जनैत छी । अहीं कहू एहन हालतिमे हमसभ की करू? अहाँक सेवा करू की नान्हिटा नेनासभक मुँह देखू?"

तामसे रमण भाइक मुँह लाल भए गेलैक । ओ कहैत अछि-

"तूँ टाकापर बिका गेलह? ने माएक ध्यान छह,ने बापक । कोन-कोन कष्ट सहि कए तोरा पोसलहुँ से हमही जनैत छी। एहिना जबान नहि भए गेलह। मानलहु जे हम तोरा लेल संपत्ति उपार्जित नहि कए सकलहुँ । मुदा तोरा पढ़ेबाक हेतु की नहि केलहुँ। ओहनो हालतिमे तोरा ट्युशन लगओलहुँ । मुदा तूँ पढ़ाइ छोड़ि भरनपर

बौआइत रहैत छलह । संगीसभक संगे तमाकुल खाइत रहैत छलह। इसकूल जेबाक समयमे कलममे गोटरस खेलाइत रहैत छलह । एहनमे कोनो बाप की करैत? तोरा बदलामे केओ आन तँ नहि पढ़ि दैत । मुदा आब तोरा हमही दोषी बुझाइत छिअह। जे हेबाक छल से भए गेल । तूंही कहह जे एहि बएसमे हमसभ की करू? कोन भरोसे जीबैत रहू?”

“के अहाँकेँ कहैत अछि जे जीबैत रहू । अहाँ सन-सन लोक पृथ्वीक भार अछि ।”

तकरबाद रमण भाइ किछु नहि बाजल । राजा अपन काजपर चलि गेल । रमण भाइ वापस अपन चौकी पर बैसि गेल । बड़ीकाल धरि किछु-किछु सोचैत रहल । फेर एकाएक उठल । देबालक काते-काते धारक कात लग पहुँचि गेल । एक मिनट धरि किछु सोचैत रहल। फेर आगू बढ़ल आ जोरसँ धारमे कुदि गेल ।

भोर भए रहल छल । गामक लोकसभ अपन-अपन काजमे लागि गेल छल । जन-बोनिहारसभ काज करबाक हेतु खेत दिस बिदा छल । मुदा राजा राति भरि जगले छल । भरि राति पटिआपर करोट बदलैत रहि गेल छल । चाहक बेर बितल जा रहल छलैक । ओकरा लगलैक जेना केओ बजा रहल अछि । ओ आङन दिस बढ़ल । आङनक फाटके लग पत्नी भेटलखिन। ओ किछु नहि बाजलि। राजाकेँ घिचने आङनक पछुअतिमे धारक कात लग लेने गेलि । राजा धारक कात दिस देखलक । किछु नहि देखेलैक। ओकर पत्नी धारक दहिना कात दिस इसारा केलथि। ओ देखिते रहि गेल । रमण भाइक लास पानिमे दहा रहल छल ।

रमण भाइक देहान्तक समाचार बिजली जकाँ इलाकामे पसरि गेलैक । लोकसभ तरह-तरहक बात बजैत रहल । केओ किछु,केओ किछु कहैत रहल । मुखिआजीकेँ सेहो ई समाचार पता लगलनि । ओ एहि घटनासँ बहुत आहत रहथि । बुझेबे नहि करनि जे आब कोना की होएत? केना समय कटत? के देखभाल करत?आखिर किछुगोटे ओकर लासकेँ पानिमे सँ बाहर केलक । अंतिम संस्कारक ओरिआन केलक । राजा ओकरा मुखाग्नि देलक। देखिते-देखिते रमण भाइ पंचत्तत्वमे विलीन भए गेल ।

रमण भाइक अंतिम संस्कारक बाद राजा अपन ओसारापर पड़ल छल । ओकरा आँखि लागि गेलैक । सपनामे अपन बाबूकेँ विचित्र भेषमे देखैत अछि । ततबे नहि,ओ मुखिआजी आ हुनकर पत्नीकेँ रमण भाइ अपने संगे घिचने जा रहल अछि । रहि-रहि कए ठहाका सेहो पाड़ि रहल अछि । तबातेमे लगीचेमे भए रहल हल्लासँ ओकर निन्न टूटि गेलैक । सपना विलुप्त भए गेलैक । मुखिआजीक दलानपर लोकक करमान लागल छल । मुखिआजी आ हुनकर पत्नीक प्राणहीन शरीरकेँ लोकसभ बहार कए रहल छल । राजाक सपनाक दृश्य एकदम सही साबित भए रहल छल । मुखिआक कोनो पुत्र लगमे नहि रहनि । दुनू बेकतीक लास दिनभरि पड़ल रहल । हारि कए लोकसभ बर्फक ओरिआन केलक । दुनू लासकेँ बर्फमे राखि देलक । लाससभ अंतिम संस्कारक हेतु प्रतीक्षा करैत रहल । सभक मोनमे एतबे चिंता छल-“आगिके देतनि?”

३१.१०.२०२१

भूतहा गाछी

"बउआ छैं?"

"हँ माए!"

"कोना छैं?"

"ठीक छी। अपन हाल कहै?"

"हमर हाल की रहत?"

"से किएक?"

"दिन-राति तोरेपर ध्यान रहैत अछि?"

"हम तँ ठीके छी । तोरासँ भेंट होइते रहैत अछि । तखन परेसानी कथीक छौ?"

"तूँ सभ बात अखन नेने बुझबही ।"

"से किएक?"

"अखन तूँ बहुत छोट छैं ने।"

"हम तँ कतेक पैघ भए गेलहुँ । आब तँ असगरे इसकूलो चलि जाइत छी । कबड्डीओ खेलाइत छी ।"

"तोरा ने लगैत छौक जे असगरे जाइत छैं । मुदा..."

"मुदा की...? हम तँ कतेको बेर असगरे जाइते छी। ओहू दिन बरखामे भिजैत हम असगरे इसकूल पहुँचल रही ।"

"सौंसे रस्ता हम छत्ता लगओने रहिऔक नहि तँ भिजितैं नहि?"

“बात तँ सही कहि रहल छैं। हमरो आश्चर्य लागल रहए जे एतेक पानिमे भिजि किएक नहि रहल छी?”

“हमही भरि रस्ता तोरा बचबैत रहलिऔक ।”

“मुदा तूँ तँ कतहु देखवाएल नहि रहए ।”

एहि बातक ओ किछु जबाब नहि देलक ।

एकदिन एहिना रघु कलममे मचान लग ठाढ़ छल । बड़ी काल धरि ककरो कनबाक अबाज ओकरा सुनाइत रहलैक। कतहु केओ देखाइत नहि रहैक । ओ चुपचाप कलममे मचानपर बैसि गेल । सोचैत रहि गेल जे आखिर ओ के कानि रहल अछि? कहीं हमर माए तँ नहि कानि रहल छथि? हमर माए एना कलम लग किएक प्रकट होइत छथि । गाममे घरपर किएक नहि रहैत छथि?

मचानपर रघु बैसले रहए कि लगलैक जेना ओकर माए बगलमे बैसल छैक । रघुक हेतु लंच बाक्स अनने रहैक । लंच बाक्स रघुक हाथमे दैत ओ कहलकैक-

“जखन ककनहु भूख लागौ तँ एहिमेसँ निकालि कए जलखै कए लिहैं । एहिमे सभ तरहक जलखैक ओरिआन छैक।”

बातो सही रहैक । रघु लांच बाक्स खोललक । ओकरा मोन भेलैक जे जिलेबी आ सिंघारा खइतहु। बस सोचबाक देरी रहैक । लंच बाक्ससँ टटका जिलेबी आ सिंघारा भरल देखेलैक । ओ लंच बाक्ससँ निकालि-निकालि भरि पेट जिलेबी आ सिंघारा खा लेलक। तकर बाद पानि पिबाक इच्छा भेलैक। ताबतेमे मचानपर पानिक सीसी देखेलैक । सीसी खोलि कए पानि पिलक । तकर बाद ओकरा औंघी लागि गेलैक । ओ ठामहि मचानपर सुति रहल।

साँझ पड़ि गेल । मुदा रघु घर वापस नहि आएल । ओकर बाबा आ बाबी बहुत परेसान रहथि ।

“कहि नहि कतए रहि गेल?”

“इसकूलसँ तँ सभटा बच्चा वापस आबि गेल । मुदा रघु कतए अटकि गेल ।”

चिंतासँ दुनू बेकती परेसान रहथि । आखिर रघुक बाबा ओकरा तकबाक हेतु बिदा भेलाह । ओ चारिए डेग आगू गेल हेताह की रघु अबैत देखेलनि । जान मे जान अएलनि ।

“कतए रहि गेल छलह?”

“कलममे निन्न पड़ि गेल रही?”

“से किएक? घर वापस आबि जाइ तखन आराम करी। हम सभ बहुत चिंतामे पड़ि गेल रही ।”

“हम तँ किछु नहि बुझलिऐक जे केना की भेलैक? ने हमरा किछु मोन पड़ि रहल अछि । कलम लग अबितहि बहुत निन्न लागि गेल रहए। चलले नहि होअए । खोपड़ीपर सुति रहलहुँ । निन्न टूटितहि बिदा भए गेलहुँ ।”

“आगूसँ एना नहि करब । सदिखन अपन दोस्तसभक संगे इसकूलसँ आएल करब । ओ कलम बहुत भूतहा छैक।”

“से की भेलैक?”

“ओहिमे भूतसभ बौआइति रहैत छैक।”

एहि तरहें समय बितैत रहल । रघु इसकूल अबैत-जाइत रहल। ओकरा ओहि कलम बाटे जेबामे कोनो परेसानी नहि होइक। कलममे ओकरा अपन माएसँ भेंट होइ रहैत छलैक । माए ओकरा

हेतु तरह-तरहक चीज-वस्तु अनैत छलैक । किताब-कॉंपी सेहो आनि दैत छलैक। क्रमशः ओ छेटगर भेल जा रहल छल । ओकरा अपन माएक भेंट-घाँटक रहस्य बुझबाक इच्छा होइत रहैत छलैक।

"आखिर, ओकर माए एना किएक बौआइत रहैत अछि? गामपर किएक नहि अबैत अछि?ओकरा सभक संगे किएक नहि रहैत अछि?"

अपन बाबा-बाबीसँ सेहो ओ सबाल करैत रहैत छल? अपन माएक बारेमे पुछैत रहैत छल । मुदा ओ सभ गबधी लादि दैत छलखिन । किछु जबाब नहि देथि । प्रयास करथि जे रघुक मोन कतहु आन ठाम चलि जाए । मुदा दिन-प्रतिदिन रघुक जिज्ञासा बढ़िते गेल । आखिर ओ एकदिन कलममे अपन माएसँ पुछिए देलक-

"तूँ एना किएक बौआइत रहैत छैं । अपन घरमे किएक नहि रहैत छैं? सभक माए तँ अपन-अपन घरमे रहैत छैक । तोहर ई हाल किएक भेल छौक?"

मुदा ओकर माए एतबे कहैक –

"समय अएलापर तोरा अपने सभकिछु पता लागि जेतौक ।"

रघु की करितए? चुप भए जाए । मुदा ओकरा कोनादनि तँ लगिते छलैक?

एकदिन ओकर माए कलममे नहि भेटलैक । ओ बड़ी काल धरि ओकर बाट तकैत रहल आ हारि कए घर वापस चलि गेल । दोसर दिन भेने सेहो ओ नहि भेटलैक । जखन कैकदिन ओ नहि भेटलैक तँ एकदिन रघु खोपड़ीपर घंटो कनैत रहि गेल । एहिसँ ओकर माएकेँ नहि रहल गेलैक । ओ सामने आएलि । ओकरा

देखितहि रघु रुसि गेल। कतबो माए कहैक ओ किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि होअए । आखिर ओ बाजलि-

“हम आब किछु दिन कलममे नहि भेटबह।”

“तखन आब हमरासँ भेंट कतए होएत?”

“पोखरिक पूबरिआ महारपर साँझक समयमे चलि आएल करिहैं । हम ओतहि रहब । कारण आइ-काल्हि हमरा बहुत पिआस लागि रहल अछि।”

“ठीक छैक ।”

“मुदा हमरा अहाँ अपन बातसभ कहिआ कहब?”

“कनिक छेटगर भए जाह ने ।”

“हम तँ आब छेटगर भइए गेल छी।”

“जहिआ तूँ कालेजमे चलि जेबह हम तोरा सभ बात अपने बता देबह । अखन तूँ सभटा ध्यान पढ़ाइपर लगाबह । पढ़नहि कल्याण अछि। तखने हमर उद्धार भए सकत।”

“ठीक छैक ।”

आखिर रघु प्रथम श्रेणीमे मैट्रिकक परीक्षा पास केलक । सभसँ पहिने ओ ई समाचार माएकेँ देबए चाहैत छल । मुदा ओकरा माए भेटतैक कतए? बहुत दुखद रहैत छलैक ओकर माएसँ भेंट-घाँट । आब ओ किछु-किछु अनुमान लगा पाबि रहल छल । ओकरा बुझा रहल छलैक जे ओकर माए अनकर माए जकाँ सदेह नहि अछि । ओकर सभकिछुमे किछु विचित्रता रहैत छलैक । मुदा ओहनो हालतिमे ओ रघुक प्रतिए छलैक बहुत संवेदनशील। यदि कहिओ रघु नहि देखेतैक तँ दोसर दिन बहुत उपराग दैत छलैक ।

बहुत कनैत छलैक । ओहि दिन जखन रघु माएकेँ अपन सफलताक समाद कहए गेल तँ माए पहिनेसँ भरि झोरा मधुर लेने ठाढ़ि छलैक। रघुकेँ देखिते ओ झोरा रघुक आगूमे राखि देलकैक ।

"तँ तोरा पहिनेसँ बूझल छलौक की?"

माए किछु नहि बजलकैक । बस हँसि देलकैक । आइ रघु माएकेँ अपन पुरनका बात मोन पाड़ि देलकैक ।

"आइ तोरा सभ बात कहहि पड़तौक । हम से बिना बूझने वापस घर नहि जाएब । ततबे नहि, आइ हम तोरा अपने संगे घरो लइए जा कए रहब ।"

माए हँसि देलकैक ।

"तूँ सभ दिन अज्ञानीए रहि गेलह । हम कोनो मनुक्ख छी जे हमरा तूँ अपना संगे घर लए जेबह?"

"तँ तूँ की छैं।"

"अतृप्त आत्मा-लोक ओकरा प्रेतो कहैत छैक।"

"मुदा तोहर ई गति भेलौक केना?"

माए से सुनि कानए लगलैक । बहुत मोसकिलसँ रघु ओकरा सम्हारलक । आखिर,ओ रघुकेँ एकटा डायरी देलकैक आ कहलकैक-

"एकरा असगरमे पढ़िअह । एहिमे सभटा बात लिखल छैक।"

"ठीक छैक ।"

राति भए रहल छलैक । आकाशमे तारासभ देखा रहल छल। गामपर रघुकेँ ओकर बाबा-बाबी ताकि रहल छलखिन। तखनहि रघु मधुरक झोरा लेने हुनकासभक लग हाजिर भए गेल ।

आश्चर्यक बात रहैक जे ओ झोरा रघु छोड़ि कए ककरो आओर नहि देखाइत छलैक । जखन मोन होइक ओहिमेसँ मधुर निकालि-निकालि खाइत रहल। मुदा अनका ककरो किछु नहि देखाइक । रघुकें आएल देखि ओकर बाबा-बाबी बहुत खुस भेलाह। प्रसन्नतापूर्वक परीक्षाफलक समाचार सुनलनि । भगवानकें धन्यवाद देलखीन ।परिवारमे सभ खुस छल ।सभगोटे नीक-नीक भोजन केलनि ।तकरबाद रघु अपन कोठरीमे चलि गेल ।बाबा-बाबी सेहो अपन कोठरीमे विश्राम करबाक हेतु चलि गेलाह ।

रघुकें माएक देल डायरी पढ़बाक बहुत उत्सुकता रहैक ।रघु दूपहर रातिमे उठि गेल। माएक ध्यान केलक आ ओकर देल डायरी पढ़ए लागल। डायरी कैक अध्यायमे बाँटल छल। सभ अध्यायक शुरुमे एकटा हाथसँ बनाओल गेल चित्र छल ।लगैत छल जे चित्र सभ आब बाजत कि ताब ।डायरी खोलैत देरी रघुक आँखिसँ नोर खसए लगैत छलैक। डायरीपर नोर नहि खसैक तेँ ओ हटि जाइत छल। बहुत काल धरि ओ चित्र दिस देखैत रहैत छल । पहिले अध्यायक चित्रमे ओकर माए माटिपर पड़ल छलि ।बामा हाथमे पलस्तर लागल छलैक। ओहनो हालतिमे ओकर सासु-ससुर ओकरा फज्झति कए रहल छलैक ।तरह-तरहक उपराग दए रहल छलैक ।ओकरासभक मोनमे कनीको एहि बातक विचार नहि छलैक जे एहन हालतिमे ओ कोना चाह बनाएत? कोना काज करत? रघु डायरीक पन्ना उलटबैत अछि ।ओहिमे साफ-साफ लिखल छल जे कोन हालतिमे ओकर हाथ टूटल रहैक ।केना ओ भारी- भारी समान उठा कए राखि रहल छलि। ओहीक्रममे समानसँ भरल बाकस ओकर हाथपर खसि पड़ल रहैक ।के डाक्टर लग जाएत?के इलाज करओत? कैक दिन ओ ओहिना पड़ल रहलि ।

कैकदिनक बाद ओ कनी-मनी ठीक भेलीह । मुदा हुनकर ओ हाथ कहिओ नीकसँ सोझ नहि भए सकलनि । ओहने टेढ़ हाथसँ ओ काज करैत रहलीह ।

एहिना रघु रातिमे डायरीक पन्नासभ उनटबैत रहल । एकटा पन्ना उनटओलक तँ देखैत अछि जे ओकर नाना-नानी ओकर घरक आगूमे ठाढ़ छथि । ओहिदिन रघुक छठिहार रहैक । ओ सभ बिन बजओने उत्साहमे आबि गेल रहथि। मुदा ओकर बाबा-बाबी हुनकासभसँ झगड़ा करए लगलखिन । तरह-तरहक उपराग देबए लगलखिन । बात बढ़िते गेल । ओ सभ कतबो कहलखिन जे हमसभ अपन नातिकेँ आशीर्वाद देबए अएलहुँ अछि। तकर बाद चोट्टे चलि जाएब । मुदा हुनकासभकेँ घरमे नहि आबए देलखिन । आखिर,हमर नाना-नानी हमरा बिना देखने वापस चलि गेलाह । माएकेँ एहि बातसँ बहुत दुख भेलैक । ओ राति भरि कनैत रहि गेलि। मुदा हमर मुँह देखि सभकिछु सहि गेल ।

डायरीक पन्नासभमे कतेको हृदय विदारक दृश्यसभक वर्णन छल । केना हमर बाबी माएकेँ कष्ट दैत छलखिन । तरह-तरहसँ परेसान करैत छलखिन । ओकर नैहरक लोकसभक नाम लए कए गारि पढ़ैत छलखिन । एतेक होइतहुँ ओ सभ किछु सहैत रहलि । ओकरा होइक जे हम छेटगर भए जाएब तँ ओकर सभ दुख समाप्त भए जेतैक। मुदा ओ दिन कहिओ नहि आएल । हमर माएसँ गलत-सलत काज करेबाक प्रयासमे हमर बाबीकेँ कतेको बेर माएसँ झंझटि होइत छलनि । बहुत बात तँ ओ डायरीमे नहि लिखलथि । लिखने छथि जे तेहन-तेहन काज करबथि जे लिखल नहि जा सकैत अछि ।

एक राति एहिना हम ओ डायरी पढ़ैत रही । अंतिम पन्नापर बनल चित्रकेँ उलटेलहुँ । देखैत छी जे माए बहुत दुखी अछि । हमर पितासँ कहि रहल अछि-

“हम आब जा रहल छी । एहि नरकमे आब रहब बरदास नहि भए रहल अछि ।”

मुदा हमर पिता ओकरा बुझाबक,बचेबाक किछु प्रयास नहि केलखिन आ हमर माए एहि दुनिआकेँ छोड़ि गेलि ।

डायरीक ओ पन्ना पढ़लाक बाद हमरा सौंसे देहमे आगि लागि गेल । भेल जे तुरंत अपन पिता आ बाबीक गला दबा दी। हम आगू बढ़बो केलहुँ । मुदा देखैत छी जे सामनेमे माए आबि कए हमर रस्ता छेकि लेने अछि । कहि रहल अछि-

“नहि, नहि । अहाँ ई सभ नहि करू । हमरा तँ जे लिखल छल से भेल । हमर आब एकहिटा अभिलाषा अछि जे अहाँ नीक लोक बनू । खूब पढ़ू आ बड़का आदमी बनू । तखनहि हमरा मुक्ति होएत।”

रघु हुनकर पैरपर खसि पड़ल । माए ओकरा उठा कए अपन छातीसँ साटि लेलखिन । रघु बाजल-

“हम जरूर करब, अहाँक स्वप्नकेँ साकार करब । मुदा एहि घरमे नहि रहब । आइसँ हम सहर जा रहल छी । ओतहि अपन आगूक पढ़ाइ करब। जा धरि अहाँक इच्छाक अनुरूप नहि बनि जाएब ताबे एहि गाममे पैर नहि देब ।”

माए हुनका भरिपोख आशीर्वाद देलखिन । रघु अपन झोरा उठओलक आ रातिएमे सहर दिस बिदा भए गेल ।

रघुकेँ ओहि घरसँ गेलाक बाद ओकर माए चंडीक रूप धए लेलक । तामसे ओकर देह जरि रहल छलैक । एतेक दिन तँ ओ रघुक कारणसँ चुप छलि । रघुकेँ घरसँ निकलिते ओ एक क्षण नहि रुकलि । तीनूगोटेकेँ घिचने-घिचने कलम लए गेलि आ ओतहि तीनूकेँ जौरसँ बान्हि गाछमे लटका देलक । भोर भेने कलममे चरबाह सभ रघुक बाबा-बाबी आ बापक लास गाछमे झुलैत देखलक। सौंसे गाममे हल्ला भए गेल ।

“ई की भेल? ई के केलक ?”

सभ रघुकेँ ताकि रहल छल । मुदा रघु कतहु नहि देखाइक । एतबहिमे ऊपरसँ अबाज सुनेलैक-

“हम छी रघुक माए । एकरसभक पाप डिरिआ रहल छलैक । तकरे फल भेटलैक । जहिना हमरा तरपा-तरपा कए मारलक तहिना एकरो सभक गति भेलैक । आगू ओ किछु बजैत ताहिसँ पहिनहि सभ इएह-ले, ओएह-ले ओहिठामसँ जान बचबैत भागल ।

कहाँ दनि बहुत दिन धरि ओहिगाछपर तीनटा लास जौरसँ लटकल रहल । रातिमे ओहिठाम केओ महिला ओतए ठहाका पाड़ैत सुनाइत । आखिर,गामक लोक ओहि बाटे आएब-जाएब छोड़ि देलक । यदि केओ गलतीसँ ओमहर जाइत देखाइत तँ गौंवा रोकि दैक-

“खबरदार! भूतहा गाछी बाटे नहि जाएब ।”

14.5.2022

अन्हड़

रातिमे बड़ी जोर अन्हड़ आएल । कैकटा घरक चार एमहर-ओमहर भए गेल । सड़कसभपर गाछ-बृच्छ खसि पड़ल । रस्तासभ जाम भए गेल । आम,जामुन,तार,नारियलक बड़का-बड़का गाछसभ टूटि कए खसि पड़ल। सरीफा,नेबो,दारिमक गाछसभकेँ सेहो जरब पड़लैक,मुदा ओतेक नहि । कैकटा अपन-अपन जरिसँ हीलि गेल छल। तीमन-तरकारीक गाछसभ जस-के तस छल मुदा झंझटिमे तँ पड़िए गेल छल। सभसँ सुरक्षित रहि गेल माटिक तरक अल्लु,मुर,अल्हुआ आ एहने-एहने आन-आन तरकारीसभ । ओकरासभ लेल न हर्षो न विष्मयः। भोर होइत-होइत सभकिछु शांत भए गेल छल। मुदा सभठाम रतुके प्रसंगक चर्च भए रहल छल।

चारूकात पसरल मौनकेँ भंग करैत भांटाक गाछ बाजल-

"हम भुट्ट छी तेँ की। एहन भयाओन अन्हड़मे ठामहि बाँचल छी ।"

सामनेमे नेबोक गाछ छल । ओ जोरसँ ठहाका पाड़लक ।

"बात तँ तूँ लाखटकाक कए रहल छह ।"

"से की?"

"देखैत नहि छहुन तारक गाछकेँ। की गति भेल छनि। हरदम घमंडसँ फुटैत रहैत छलाह जे हमरासँ पैघ केओ नहि । कनीको हवा बहैत छल की हन-हन करए लगैत छलाह, दोसरसँ आँखिओ नहि मिलबैत छलाह । आब लेथु। बीचेसँ टूटि कए खसल पड़ल

छथि । ओएह हाल कमोबेस आम, जामुन, नारिकेर सन-सन पैघ-पैघ गाछसभक भेल छनि ।”

“भाइ! तूँ बड़ बुधिआरीक बात कए रहल छह । यदि हमहु सभ तारे गाछ जकाँ नमगर रहितहुँ तँ कोन गति रहैत आइ?

“एहिना कतहु टूटल पड़ल रहितहुँ।”

“सही... ।”

दुनूगोटेमे गप्प भइए रहल छल की आलू भाइ आठ-दस कप चाह लेने अएलाह। चाहसँ भाफ निकलि रहल छल ।

“एतेक रास चाह? कोनो विशेष बात.....”-भाँटा बाजल ।

“से अहाँकेँ नहि बूझल अछि? पोखरिक पूबरिआ महारपर आलूभाइक अध्यक्षतामे अपन समाजक बैसार छैक ।”

“वजह?”

“देखि नहि रहल छी? चारूकात प्रलयक दृश्य उत्पन्न भेल अछि। बड़का-बड़का गाछसभ भूलंठित भेल अछि । एहनो हालतिमे हमहीसभ बाँचल छी । ईश्वरक एहि असीम कृपाक हेतु सभगोटे मिलि कए भगवानक पूजा करबाक निर्णय केलनि अछि। ताही प्रसंगे सभगोटे एतहि आबि रहल छथि ।”

“ओ आब बुझलहुँ ने असली बात । मुदा ई समय किछु करबाक हेतु उपयुक्त तँ अछि नहि । पहिने माहौल ठीक तँ भए जाए?"

“सभगोटे बैसब तखने सभ बातपर विचार करब । एही बहन्ने एक-दोसरक जानकारी भेटत, दुख-सुखपर चर्चा होएत आ भविष्यक योजना सेहो बनाओल जा सकत ।”

थोड़े कालक बाद पोखरिक महारपर भुटकुनसभ जमा भेलाह। आलू,कोबी,टमाटर,पतकोबी,नेबो,समतोला, सन-सन तरह-तरहक तीमन तरकारीसभ एकपाँतिमे बैसलाह । सामनेक पाँतिमे फूलक गाछसभ अपन समस्त सौंदर्यक संग विराजित भेलाह । गेना,गुलाब,सुर्यमुखी,लिली,कुमुदनी,चमेली,बनफूल आदि,आदि बेरा-बेरी अपन-अपन स्थान ग्रहण केलाह ।वातावरण मह-मह कए रहल छल ।सभ एक-दोसर दिस विजयी मुद्रामे देखि रहल छलाह ।कहबाक माने जे एहनो संकटमे हुनका लोकनिक किछु नहि बिगड़लनि ।ओ सभ जहिना छलाह,तहिना छथिहे । अन्हड़ आएल गेल मुदा हुनका लोकनिक हेतु धन-सन ।

चाह आएल ।बेरा-बेरी सभगोटेक हाथमे चाह पहुँचा देल गेल। तकर पाछू-पाछू बहुत स्वादिष्ट जलखै लेने बानर भाइ अएलाह ।कुदैत-फनैत ,बीच-बीचमे अपनो खाइत ओतए आबि जलखैक पोटरी फेकि देलनि । जलखैक ओरिआन देखि लग-पासमे कुकुरसभ आबि गेल आ तरह-तरहक ध्वनि निकालए लागल ।असलमे रातुक अन्हड़क बाद जानबरसभ जहाँ-तहाँ भागिए रहल छथि ।किनको आफियत नहि भेलनि जे जलखैओ करी,की चाहे पीबि ली ।एहिठाम जखन पहुँचलाह आ जलखैकक सुगंध लगलनि तँ ठमकि गेलाह ।फेर तँ तरह-तरहक जानबरसभ ओतए आबए लागल ।देखिते-देखिते ओहिठाम भीड़ लागि गेल ।

केओ एकघोट चाह पीलथि,केओ हाथ ऊपर लइए गेल छलाह, जिलेबी हाथमे उठा कए मुँहमे धेनहि छलाह की महारक कोन दिससँ करूण क्रंदन सुनबामे आएल ।क्रमशः ओ अबाज लगीच अबैत गेल ।सभक ध्यान अनायासे ओमहरे चलि गेल । स्वभाविके ।

तारक गाछ,आमक गाछ,जामुनसभ एक पाँतिसँ छाती पीटि रहल छल । कुहरि रहल छल । आब हमर बच्चासभक की होएत? के देखत ओकरासभकेँ ? हमरसभक तँ अंग-प्रत्यंग टूटि-फूटि गेल अछि। तरह-तरहक परेसानीमे पड़ल छलाह । मुदा समये तेहन छल जे के ककर सुधि लैत? चिड़ै-चुनमुनसभक खोंता उजड़ि गेलैक। ओ सभ राति-भरि भिजैत-तितैत समय बितओलक । भोरसँ कतहु गेल नहि । चारूकातक भयावह दृश्य देखि ओकरासभकेँ उड़बाक साहस नहि भए रहल छलेक । सभ अपन-अपन अंडाकेँ सेवने छल । एतबहिमे महारपर चाह-पानक ओरिआन देखि ओ सभ उड़ि कए ओतए पहुँचि गेल । पहुँचि तँ गेल मुदा ओहिठाम बड़का गाछसभकेँ बफारि तोड़ैत देखि ठमकि गेल । ओतेक भूखक बादो आ सामनेमे भोजन देखितो ओ सभ आगू नहि बढ़ल । बड़ीकाल धरि आकाशमे घुरिआइत रहल । सुनैत रहल ओकरसभक दुखक गप्प-सप्प । फेर अपनेमे बतिआएल-

“भाइ! एकरसभक दुख तँ देखल नहि जाइत अछि।”

“बात तँ सही कहि रहल छह। मुदा हमसभ कइए की सकैत छी? हमसभ ठहरलहुँ छोट-छीन प्राणी । दिन-भरि सौंसे बौआइत छी,अपन भोजनक जोगार करैत छी आ साँझ होइतहि अपन खोंतामे वापस आबि जाइत छी।”

“रतुका अन्हड़मे गाछसभ खसि पड़ल, हमरसभक खोतो उड़िआ गेल । कहि नहि आगूक समय कोना बीतत?

“जे सभक गति हेतैक सएह हमरोसभक होएत । जखन सौंसे पृथ्वीपर प्रलये भए गेल माने जे सभकिछु उजड़िए गेल तखन हम-

अहाँ कोना बाँचल रहि सकब । तेँ धैर्य राखू । समय बदलतैक । सभ ठीक भए जेतैक ।"

"सही कहि रहल छथि ई । पहिने तँ ई बड़का गाछसभक दुख कम करबाक प्रयास कएल जाए । यदि ओ सभ फेरसँ ठाड़ भए जेताह तखन हमरोसभक खोंता बनबे करत । हमहुसभ फेरसँ सुखी हेबे करब ।"

चिड़ै-चुनमुनसभकेँ एना गप्प-सप्प करैत देखि तीमन-तरकारीसभक कान ठाढ़ भेलैक ।

"ई सभ की गप्प कए रहल अछि?"

"से की जाने गेलिऐक?"

"अपनासभमे कुम्हर भाइ एकरसभक भाषा बूझि सकैत छथि। हुनके पुछिअनु ।"

कुम्हर भाइ सभसँ पाछूक पाँतिमे छलाह । चारपरसँ अन्हड़मे खसि जेबाक कारण बहुत चोट लागल छलनि। तथापि आब आश्वस्त भए रहल छलाह । कहलखिन्-

"हमरा कनेक समय दिअ । हम एकरसभक बात सुनबाक-बुझबाक प्रयास करैत छी ।"

"हँ, हँ कोनो जल्दी नहि छैक । हमसभ तँ उत्सुकतावश कहने रही । ई चिड़ैसभ जा किएक नहि रहल अछि? हमरे सभक ऊपर किएक मड़रा रहल अछि?"

आपसमे ओ सभ एहि तरहें चर्चा करैत रहल ।

एहि तरहें बड़कासँ छोटका धरि सभ लग-पासमे जमा भए गेल। चिड़ै-चुनमुनसँ लए कए तीमन तरकारी,जमा भए गेल । बात

एतबे रहितए तखन तँ साइत सम्हरि जाइत । मुदा थोड़े कालक बाद एकसँ एक विषधरसभ लगपासमे देखा रहल छल । आब की होएत?

सभकेँ परेसान होइत देखि विषधर बाजल-

“भाइ लोकनि! अहाँसभ अनेरे घबड़ा रहल छी । हम तँ स्वयं परेसान छी । हमर बिलमे पानि चलि गेल अछि। हमर छोट- छोट बच्चासभक जान खतरामे अछि । मोसकिलसँ बाहर निकलि सकलहुँ अछि । अखनहु हमर बच्चासभ बिलक अन्दरेमे अछि । बाहर अबाज सुनलिऐक तँ भेल जे देखी बात की छैक? एतए अएलहुँ तँ देखैत छी जे हमरा देखितहि सभ भागि रहल अछि । अहाँसभ निचैन रहू । हम ककरो किछु नहि कहब । हमरा कात बाटे जाए दिअ । यदि कोनो गर लागि जाएत तँ हम अपन बच्चोसभकेँ बजा लेबैक ।”

विषधरक बात सुनि कए महारपर एकत्रित सभ जीव-जन्तु स्थिर भेल । विषधर कात लागि ओकरसभक बात सुनए लागल । बड़का-बड़का गाछसभ सेहो जेना-तेना शांत भेलाह । मुदा ओ सभ ततेक डरा गेल रहथि जे टस सँ मस नहि भए पाबि रहल छलाह । ककरो डांर टूटि गेल छल , तँ ककरो पैर । साइते केओ दुरुस्त बाँचल होअए।

माहौल जखन कनीक शांत भेल तँ तीमन-तरकारीक छोट-छोट गाछ सभ बाजल-
“भाइ लोकनि! ई संकटक समय अछि । के बाँचल,के उजरल तकर कोनो ठेकान नहि अछि । जरूरी अछि जे हमसभ आगूक रस्ता पकड़ी । एक-दोसरक मदति करी । पैघ-छोटक विचार छोड़ि दी ।

जे पैघ-पैघ गाछसभ काल-कलवित भए गेलाह,हुनकासभक अंतिम संस्कार ससम्मान कएल जाए । जिनकर अंग-भंग भए गेलनि तिनकर इलाज कराओल जाए । जे सभ स्वस्थ छी,जिनकामे शक्ति अछि से संपूर्ण सामर्थ्यसँ एहि संकटसँ सभकेँ उबारबाक प्रयास करी । बिसरि जाइ जे काल्हि हमरा संगे के केना केलक आ कि आगू के की करत? जकर जे प्रवृत्ति छैक से करबे करत । तैँ की हमसभ विपत्तियोक समयमे अपन कर्तव्य विसरि जाएब?”

सभ एकस्वरसँ एहि विचारक समर्थन केलनि । जकरा जे पार लागल से सेवा केलक । देखिते-देखिते चारूकातक माहौल बदलि गेल । सौंसे गामक लग-पासमे फेरसँ हरिअरी पसरि गेल । माहौलमे अचानक भेल एहि परिवर्तनसँ गामक लोकसभ चकित रहथि ।

छोटसँ पैघ सभ जीव-जन्तु एक-दोसरक मदति केलनि । बड़का-बड़का गाछसभकेँ यथासाध्य सभगोटे मदति केलनि । नित्य नियमित सेवा आ पुष्टाहारसँ ओ सभ फेर हरिआ गेलाह । गाछसभमे नव-नव ठारि-पात विकसित भए गेल । सभ गाछ-बृच्छ अपन-अपन दिनचर्यामे लागि गेल । चिड़ै चुनमुन भोर-साँझ करलव करए लगलाह । ओ सभ फेरसँ अपन-अपन खोंता बना लेलाह । विषधरसभ अपन-अपन बिलमे चलि गेलाह । पोखरिक महारपर एकबेर फेर पूर्ण शांति छल । लगबे नहि करए जे किछु दिन पूर्व एतहि एहन महाविनाशक आहट भेल छल। सर्वत्र खुसीक वातावरण स्थापित भए गेल । सभ निश्चिंत छल जे चलू आब निचैन भए जिअब । एहनेमे एकबेर तीमन-तरकारीसभ फाग गाबि रहल छलाह । लगपासमे बहुत रास फलक गाछसभ फागक आनन्द लए रहल छलाह। एही बीचमे कहि नहि करवन विषधर अपन बीहरिसँ

बहराएल आ कैकटा तीमन-तरकारीकेँ अपन सिकार बना लेलक । विषक प्रहारसँ ओ सभ बफारि तोड़ि रहल छल । विषधरसँ विनती करए लागल-

"भाइ। एना नहि करह। हमसभ तँ तोहर जान बँचओने रही।"

"से जे केलह । मुदा हमरा तँ अपन स्वभाव आ जरुरतिक हिसाबसँ भोजन ताकए पड़त । कतेक दिन तोहर मुँह देखैत रहब। से कहि विषधरसभ तीमन-तरकारीकेँ डसि लेलक । ऊपर नारियल,तार आ आन-आन बड़का-बड़का गाछसभ ठहाका पाड़ैत रहल ।

देखिते-देखिते विषधरक विषक प्रभावसँ समस्त तीमन-तरकारीसभ सुखा गेल । ओकरसभक ई हाल देखि सरीफा बाजल-

ठीके कहल गेल अछि जे दुष्ट संग मित्रता नहि करबाक चाही। ओ अपन दुष्टता करबे करत चाहे अहाँ ओकर कतबो उपकार करिऔक ।

....

6.3.2022

समर्पण

“कोनो अहींटा बूढ़ छी जे सभसँ पहिने अहींके आगू जाए दिअ? एहिठाम जबानसँ बेसी बूढ़ेक जनसंख्या छैक । ककरा-ककरा आगू जगह देल जाएत? तखन तँ बँकिए लोक ठाढ़े रहि जाएत ।”

“की बात कए रहल छी? अहाँसभ हमरापर कोनो कृपा नहि कए रहल छी । ई हमर कानूनी अधिकार अछि ।”

“बड़ चललाह अछि कानूनी अधिकार लेबए? अहाँ यदि नहिए जिअब तँ कोन उनटन भए जेतैक । हमसभ तँ काजो करैत छी । परिवार पालि रहल छी । आ अहाँ? एहिठामसँ वापस जाएब आ भरिदिन घरमे पड़ल रहब । भने किछु काल पाँतिमे कटि जाएत.. ।”

ताबतेमे पाछूसँ किछुगोटे धक्का मारलक आ हम पाँतिसँ बाहर भए गेलहुँ । ई हाल छल सरकारी अस्पतालक जतए हम भोरेसँ छातीमे भए रहल दर्दक निवारण करए गेल रही । संगमे केओ नहि रहए । तँ अपने पाँतिमे ठाढ़ रही । सुनने रहिऐक जे वरिष्ठ नागरिकसभकेँ खातिर कएल जाइत छैक । ओकरा पाँतिमे ठाढ़ नहि होबए पड़ैत छैक । मुदा आइ जखन काज पड़ल आ अस्पताल गेलहुँ तँ सभ बात झूठ बुझाएल । केओ सुनबाक हेतु तैयार नहि । जकरे देखू सएह झगड़ा करबाक हेतु तैयार अछि । तेहन हालतिमे हम असगर की करितहुँ? चुप्प रहि गेलहुँ ।

हम पाँतिमे ठाढ़े रही की छातीमे फेर जोरसँ दर्द भेल । दर्द क्रमशः बढ़िते गेल । ओहिठाम ककरा की कहितिऐक? कनीके काल पहिने तँ एहीठामसभ बकझौँ करैत छल । हम ठाढ़ नहि पाबि

रहल छलहुँ ,ठामहि खसलहुँ । हमरा खसैत देखि सामने खिड़कीपर काज करैत सरकारी बाबू चिकरल-

“हिनका की भेलनि?”

लगीचेमे ठाढ़ कैकगोटे किछु नहि बाजल,सहटि गेल । सभ एक-दोसरक मुँह ताकि रहल छल । पाछूसँ एकटा महिलाकेँ नहि रहल गेलैक । ओ चिकरि उठलि- “केहन पाथर छी अहाँसभ । लगमे एकटा वृद्ध खसल पड़ल छथि आ अहाँसभ तमासा देखि रहल छी । धिक्कार अछि अहाँसभकेँ ।”

“बेसी फटर, फटर नहि करू । अहाँकेँ बहुत चिंता अछि तँ लेने जइअनु अस्पताल । हमसभ घंटोसँ पाँतिमे लागल छी । यदि आबो हटि जाएब तँ फेर जगह के देत?”

आखिर ओएह महिला फोन कए एम्बुलेंस मंगओलथि । पुलिसकेँ सेहो फोन कए देलखिन । थोड़बे कालक बाद एम्बुलेंस, आ पुलिस ओतए एक्के संगे ओतए आबि गेलथि । ओ सभ उठा-पुठा कए हमरा अस्पतालक आपत्तिकालीन विभागमे लए गेलथि । ओतए पहुँचति-पहुँचति हमर हालति बहुत खराब भए गेल छल । संयोग रहैक जे अस्पतालक डाक्टरसभ तुरंत सक्रिय भेल आ हृदयक शल्यक्रिया कए हमर जान बचा देलक । हमरा संगे घटल ई घटना हमर भावी जीवनक हेतु मार्गदर्शक भए गेल । हम बिमारीसँ ठीक भेलाक बाद नित्य भोरे अस्पताल चलि जाइ आ ओहिठाम बृद्ध रोगीसभक मदति करी । सरकारी नियमक अनुसार हुनका लोकनिक हेतु अलगसँ पाँति लगेबाक व्यवस्था करी । डाक्टरसभसँ संपर्क कए जरुरतिमंद रोगीसभक मदति करबाक व्यवस्था करी । एहि बातसँ हम बहुत प्रसन्न रही जे हमर कनीकटा

प्रयाससँ कतेको बृद्ध असहाय रोगीसभकेँ मदति भए जाइत छलनि।

क्रमशः एहिबातक चर्चा सौंसे होबए लागल । किछु आओर लोकसभ हमर काजमे सहयोग करबाक हेतु आगू आबए लगलाह। हम नित्य अस्पताल अबैत छलहुँ आ साँझ धरि रोगीसभक सेवामे लागल रहैत छलहुँ । ओतहि एकदिन ओएह महिला अस्पतालक काजसँ अएलीह । हुनका केओ हमरा बारेमे कहलकनि । ओ पुछैत-पुछैत हमरा लग पहुँचि गेलीह । हमरा लगमे चारूकात लोकसभ भरल छल । ककरो किछु पुछबाक रहैक तँ ककरो किछु। हम यथासाध्य सभकेँ संतुष्ट करबाक प्रयत्न करैत रहैत छलहुँ । ओ महिला घंटाभरि ठामहि ठाढ़ि रहि गेलीह,हमर काज देखैत रहलीह। मुदा ने ओ हमरा किछु पुछलथि ने हम हुनका किछु कहलिअनि । साँझ भेलैक । हम अपन घर दिस वापस भेलहुँ । किछु काल पहिने ओहो ओहिठामसँ चलि गेलथि । दोसरोदिन एहिना हुनका देखलिअनि । भरिदिन ओ हमरा लग ठाढ़ि रहथि । चुपचाप सभकिछु सुनथि आ साँझ होएबासँ पहिनहि चलि जाइत । ई क्रम कैकदिन धरि चलैत रहल। आखिर हमही एकदिन हुनका पुछलिअनि-“अहाँ के छी आ एहिठाम नित्य किएक ठाढ़ि रहैत छी?”

ओ कहैत छथि-“हमर नाम अछि कमला । हमरा अहाँकेँ पहिने एकबेर अस्पतालमे भेंट भेल रहए । तखन अहाँक मोन खराब छल। हमही अहाँकेँ अस्पतालमे भर्ती करओने रही ।”

“हमरा तँ किछु मोन नहि रहल । कारण दर्दसँ ततेक व्याकुल रही जे किछु आओर सुझबे नहि करए ।”

"हम अहाँक काजसँ बहुत प्रभावित छी आ एहिमे हमहु योगदान करए चाहैत छी ।"

"ई तँ बहुत बढ़िआ विचार अछि ।"

तकर बाद कमला अस्पताल आबैत रहलि आ हमरा संगे काज करैत रहलीह । एकदिन गप्पे-सप्पक क्रममे ओ महिला कहैत छथि-

"यद्यपि हमरा पासमे अकूत संपत्ति अछि, जीवनमे शांति नहि अछि । दिन-राति बेचैन रहैत छी । भरल-पुरल परिवारो अछि । तथापि, असगरे रहैत छी । दिन-राति हम एही चिंतामे रहैत छी जे आगू कोना की होएत?"

"से किएक?"

"की कहू? कहिओ हमरा ओहिठाम चलब तँ अपने बूझा जाएत। कमला अपन बात बेर-बेर दोहरबैत रहलि । आखिर एकदिन हम ओकरा संगे ओकर घरपर पहुँचलहुँ ।"

हम कमलाक मकान देखि आश्चर्यचकित रही । ओ सही मानेमे बहुत धनिक लोक बुझाएलि । हमरा ओतए पहुँचतहि ओ अपन नौकरकें बजओलक। हमरा लेल रंग-विरंगक जलखै-चाहक ओरिआन कए देलक । हम थाकल तँ रहबे करी,भूखो बहुत लागल रहए । भरिपेट जलखै केलहुँ,चाह पिलहुँ । बीच-बीचमे कमलासँ गप्पो करैत रहलहुँ ।

हम ओकरा पुछलिऐक-"अहाँक परिवारमे आओर के सेभ छथि?"

"सभ छथि- पति, पुत्र, पुत्री ।"

"मुदा ओ सभ छथि कतए?"

“हमर पुत्र आ पुत्री लंदनमे रहैत छथि । ओहीठाम पढ़ाइ पूरा केलाक बाद हुनका लोकनिकेँ काज भए गेलनि । कालांतरमे ओतहि ओ सभ बिआह कए अपन-अपन घर बसा लेलथि ।”

“आ अहाँक पति?”

“ओ सेवानिवृत्त भए गेल छथि । मुदा... ”

“मुदा की?”

“जखन कखनहुँ एतए अबैत छथि तँ दुनूगोटेमे झगड़े होबए लगैत अछि ।”

“से किएक?”

“से की कहू? कोनो विशेष बात रहैत तखन ने कहलो जाए । बिना बातेकेँ झंझटि होइत रहैत छैक । कखनहु कहताह जे अहीं चलते धिआ-पुता बाहर चलि गेल । कखनहु किछु ..। एहि बातसभसँ तंग हमहु रहैत छी आ ओहो ।“

“मुदा एहि तरहेँ अहाँसभक जिनगी कोना चलत?”

“मुदा हम कइए की सकैत छी?”

हम कमलाक बात सुनि कए गुम्म पड़ि गेलहुँ । हिनका लोकनिक समस्याककिछु समाधान नहि फुराएल । हमर अस्पतालक काज चलिते रहए । संयोगसँ एकदिन कमला अपन पति मदनक संगे अएलीह । मदनक मोन खराब रहनि । रहि-रहि कए पेटमे दर्द होनि । हम तुरंत हुनका नीक डाक्टरसँ देखाबक जोगार केलहुँ । किछु कालक बाद हुनकर मोन हल्लुक भेलनि । दुनूगोटे हमरा लग बैसि गेलथि । हमरा इएह मौका बुझाएल ।

थोड़े काल तँ ओ सभ संचमंच बैसल रहलथि । मुदा कनीके कालक बाद ओ सभ अस्पतालेमे शुरु भए गेलथि ।

हम मदनकेँ चाहक दोकानपर लए गेलिअनि । दुनूगोटे संगे चाह पिलहुँ । गप्प-सप्पसँ ओ बहुत नीक लोक बुझेलाह । बहुत स्वाभिमानी आ स्वावलंबी व्यक्ति । मुदा ततबे भावुक । यदि कनीको अनट बात केओ कहि देलक की शुरु भए गेलहुँ । एही स्वभावक कारण हुनका अपन पत्नी संगे नहि पटैत छलनि । अन्यथा ओ अपन परिवारक प्रतिए बहुत संवेदनशील रहथि । परिवारक प्रति अपन कर्तव्यक नीकसँ पालन केलथि । मुदा आब जखन सेवानिवृत्त भए घर वापस अएलाह तँ समय काटब मोसकिल भए गेलनि । पत्नी संगे दिन-राति कलह होइत रहलनि । बाहर कतेक काल घुमैत रहताह । किछु दिन तँ कतहु नौकरी पकड़ि लेलनि । मुदा ओतहु आब ओ मान-सम्मान नहि होनि । सेवानिवृत्तिक बाद काज पकड़लासँ ओ शक्ति तँ रहैत नहि अछि जे नौकरीकालमे रहनि । तखन ओतहु कोनादनि लागए लगलनि । किछु दिनक बाद ओहो काज छोड़ि देलाह । धिआ-पुतासभ लग गेलाह । ओ सभ अपन-अपन काजमे लागल छल । केओ समय नहि दए पाबनि । आखिर ओतहुसँ वापस आबि गेलाह । ई सभटा खिस्सा ओ हमरा कहलनि । हम बड़ीकाल धरि सोचैत रहि गेलहुँ जे आखिर हिनकर समस्याक समाधान की भए सकैत अछि ? फेर हमरा फुराएल जे हिनका अपने संगे अस्पतालक सेवामे जोड़ि लिअनि । कमला तँ लागले छथि । यदि ई व्यस्त भए जेताह तँ समयो बीति जेतनि आ घर वापस गेलाक बाद साइत दुनूगोटेमे पटबो करतनि । कारण जे ने ओ सभ खाली रहताह आ ने झंझट करबाक समय भेटतनि ।

हम अपन मोनक बात मदनकेँ कहलिअनि । ओ तुरंत मानि गेलाह । दोसरे दिनसँ हमरासभक संगे अस्पतालक सेवामे लागि गेलाह । क्रमशः किछु आओर लोकसभ एहि काजमे लागि गेलाह। मदनक संगीसभ सेहो आबि जाथि । हमरा लोकनिक समय बहुत नीकसँ कटि जाइत छल । संगहि बहुत रास रोगीसभकेँ मदति सेहो भए जाइक । ककरो पुरजी बनेबाक रहैक ,ककरो दबाइ कीनबाक रहैक,ककरो कोनो जाँच करेबाक रहैक । ओ सभ हमरा लोकनि लग आबि जाइत । हमसभ ओकरासभकेँ रस्ता देखा दिऐक । यथासंभव आर्थिक मदति सेहो कए दिऐक । एहि तरहें सालक-साल बीति गेल । समय कोना बितल से पता नहि चलल । मदन आ कमलाक आपसी संबंध सेहो बहुत सुधरि गेलनि । जखन कखनहु हुनका ओहिठाम जइतहुँ तँ दुनूगोटे बहुत स्वागत करितथि। लगबे नहि करैक जे ओहीठाम गेल छी ।

मदन आ कमलाक कैकटा संगीसभ सेहो हमरा संगे अस्पतालक सेवा काजमे लागि गेलाह । क्रमशः एहि बातक चर्चा सौंसे होबए लागल । हमसभ मिलि कए समर्पणक नामसँ एकटा संस्था बना लेलहुँ । हमरा सन-सन कतेको बृद्धसभ एहि संस्थासँ जुड़ैत गेलाह । मदन बाबू आ कमला अपन सभटा संपत्ति एहि संस्थाकेँ दान दए देलनि । आओर कतेको गोटे यथासाध्य एहि संस्थामे योगदान करैत रहलाह । एहि तरहें मदन बाबू आ कमलाक जिनगी तँ आसान भइए गेलनि,एहन-एहन कतेको बृद्धलोकनिक जीवनमे नूतन आशाक संचार भेल आ ओ सभ अपन जिनगीक उत्तरार्ध बहुत आनंदपूर्वक खेपि लेलनि ।

22.1.2022

बूढ़क जिनगी

हरीश अपन पिताक एकमात्र संतान रहथि । हुनकर पिता गामक उच्च विद्यालयमे गणितक शिक्षक रहथि । जाबे जीलाह विद्यार्थीसभकेँ पढ़बैत रहलाह । हुनकर विद्यार्थीसभ एक सँ एक पदपर पहुँचि गेलाह । हरीशकेँ पढ़ेबाक सेहो ओ बहुत प्रयास केलाह । मुदा सफल नहि भए सकलाह । ओ मैट्रिकक परीक्षामे कैकबेर असफल भए गेल । तखन जेना-तेना हुनका संस्कृत विद्यालयसँ उत्तर मध्यमा पास कराओल गेल । मास्टर साहेब सेवानिवृत्तिक बाद गाममे मकान बनओलाह । मुदा मकानक सुख ओ बेसी दिन नहि भोगि सकलाह। एकदिन अचानक रातिमे भोजनक बाद बहुत जोरसँ हृदयाघात भेलनि। जाबे केओ बुझितए ताहिसँ पहिने ओ एहि दुनिआसँ जा चुकल छलाह ।

मास्टर साहेबक देहावसानक बाद हुनकर संपत्तिक मालिक हरीश भए गेलाह । माएक पेनसन सेहो ओ नहि छोड़ैत छलाह । ओना शुरुमे ओ माएक ध्यान राखथि । कहिओ काल कपिलेश्वर,उच्चैठस्थान,जनकपुर हुनका घुमा देथिन । बहिनसभकेँ सेहो स्वागत करथिन । मुदा साल बितैत-बितैत हुनकर व्यवहार साफे बदलि गेलनि । सासु-पुतहुमे नित्य कलह होइत रहैत छल । बूढ़ी एहिसभसँ बहुत दुखी रहथि। मुदा करितथि की? बेटीसभक ओहिठाम जाए नहि चाहथि । बेटीसभ नैहर आबि नहि पाबथि । बूढ़ी नितांत असगरि भए गेलथि। लग-पासक लोकसभ जे अबैत छल से हुनकर पुतहुक कोपभाजन भए जाइत छल । ओ सभपर तरह-तरहक लांछन लगाबथि।

“सभ बुढ़िआकेँ ठकैत छैक । कोनो उपायसँ किछु टाका झिटलक आ घसकि गेल।”

एहन-एहन उपराग सुनि ओहिघरमे के पैर दैत? सएह भेबो कएल । बूढ़ी ई बात बुझथिन मुदा किछु कएल नहि होनि ।

एतेक कष्टक बादो ओ कहिओ ककरो अपना बारेमे कोनो सिकाइत नहि केलखिन । होनि जे बेटा-पुतहुक बारेमे अधलाह बजलासँ परिवारक प्रतिष्ठा घटत । इहो आशा रहनि जे कहिओ-ने-कहिओ ओसभ स्वयं सोचतैक । फेर ओ सभ अछि तँ हमरे संतान। से सभ सोचि ओ चुप रहि जाइत छलीह । दिन-राति भजन-कीर्तन करैत समय काटि लैत छलीह ।

“से की ई हमर जगह नहि अछि?”

“नहि अछि । अहाँ ओसारापर अपन आसन-बासन लए जाउ। काल्हिसँ ओतहि भानस बनाएल करब। ओतहि रहबो करब।”

“एहनो कतहु भेलैक अछि? अस्सी वर्षसँ हम एहि गामे एही घरक सेवामे लागल छी । एही लेल? हमर घरबला एहि घरक निर्माण केने रहथि आ हमही घरसँ बाहर भए जाउ। ई कतक न्याय छैक ?”

“ई सभ बात हम नहि जनैत छी । हम तँ जहिआसँ एहि गाम अएलहुँ सभदिन अहाँसभकेँ घटबीएमे देखि रहल छी ।”

“झूठकेँ कोनो हाथ-पैर होइत छैक । जे मोन होअए बाजि लिअ । केओ रोकनाहर तँ अछि नहि । जखन हमर अपने संतान एहन भए गेल तँ ककरा की कहबैक?”

"आइ भोरेसँ अहाँ फटर-फटर कए रहल छी । यदि आबो चुप नहि भेलहुँ तँ जे लिखल होएत से हएत । हम की करब? ओ आबिए रहल छथि।"

वास्तवमे हरीश ओही कालमे आबि गेलैक । ओ माएकेँ अपन पत्नीक संग विवाद करैत देखि माएपर चिकरए लागल । जे नहि बाजबाक चाही सेहोसभ बाजए लागल । बेटाक अपमानसँ आहत बूढ़ी जोर-जोरसँ कानए लगलीह । मुदा ककरो दया नहि अएलैक। उल्टे हुनकर पुतहु व्यंग करए लगलीह –

"बेटाकेँ देखेबाक हेतु एतेक नाटक केलासँ किछु होबए बला नहि अछि । ओ सभ बात बुझैत छथिन । कोनो दुधपीबा नहि छथिन जे जएह अहाँ चाहब सएह करैत रहताह ।"

एकदिन बूढ़ी ओसारासँ नीचाँ उतरैत काल पिछड़ि कए खसि पड़लथि। ओ बड़ीकाल धरि अबाज दैत रहलीह । मुदाकेओ घरसँ बाहर नहि भेल । केओ हाल-चाल नहि पुछलकनि । संयोगसँ केओ गौंवा जा रहल छल । ओ हुनकर हालति देखि ठमकि गेल । हुनका लग आएल । बूढ़ीकेँ उठाबक प्रयास केलक । मुदा हुनकर तँ जांघक हड्डी टूटि गेल छलनि । तेँ उठि नहि सकलीह । दर्दसँ बफारि तोडैत रहलीह । हुनकर ई हालति देखि ओ हरीशकेँ अबाज देलक। हारि कए हरीश घरसँ बाहर भेल । माएकेँ कनैत देखि चिकरए लागल-

"एकर तँ इएह छिज्जा छैक । तूँ बेसी परेसान नहि रहह । हम स्वयं एकरा लेल पर्याप्त छी ।"

हरीशक बात सुनि ओ गौंवा ओतएसँ चलि गेल । बूढ़ी चिचिआइत रहलीह । मुदा हरीश हुनका अस्पताल नहि लए गेल ।

साइकिलपर चढ़ि कतहु चलि गेल । घरमे बूढ़ी दर्दसँ छटपटाइत रहि गेलि । गौंवासभकेँ नहि देखल गेलैक । ओ सभ बूढ़ीक छोटकी बेटीकेँ खबरि कए देलकैक। आखिर छोटकी बेटी गाम अएलैक आ माएकेँ लेने दरभंगा अस्पतालमे भर्ती करबा देलकैक । अस्पतालमे ओ दिन-राति माएक सेवा केलक । क्रमशः बूढ़ीक हालतिमे सुधार भेलनि । मुदा डाक्टरक गलतीसँ हुनकर हड्डी गलत जुड़ि गेलनि । दुनू पैरमे चारि इंचक अंतर भए गेलैक । परिणामतः ओ सभ दिनक हेतु विकलांग भए गेलीह । आब की करितथि ? केओ-ने-केओ हुनकर सेवाक हेतु निरंतर चाही । ओमहर हरीश आमिल पीने रहए । कतबो बहिन समाद दैक,ओ टससँ मस नहि होअए ।

“जखन बिना हमरासँ पुछने बेटी संगे चलि गेल तँ आब ओतहि रहओ वा जतए जाओ । हम ओकरा अपना संगे किन्नहु नहि राखि सकैत छी ।”

ओ मौका पाबि कए माएक कोठरीकेँ तोड़ि देलक आ खाली जगहमे भांटा रोपि देलक ।

बूढ़ी मासक -मास दरभंगा नर्सिंग होममे पड़ल रहलीह । ओकर बिल मोट होइत रहलैक । चारूबेटी आपसमे ओहि खर्चाकेँ पूरा करबाक प्रयास करैत रहल । मुदा एना कतेक दिन चलैत । नर्सिंग होममे हुनका रखलासँ कोनो फएदा नहि छलैक । मुदा गाम वापस जेबाक रस्ता हरीश बंद कए देने छल । कतबो केओ कहैक ओकरा पर कोनो असरि नहि होइक । उल्टे किछु-किछु लोकेसभकेँ बुझबए लागए । जेना सभटा गलती बूढ़ीएक होइक । नर्सिंग होमक बिल बढ़ैत रहलैक । तकर भूगतान नहि भए पबैक । हारि

कए बेटीसभ जेना-तेना अस्पतालक बाँकी बिलक भूगतान केलक आ हुनका लेने-देने गाम पहुँचि गेलि ।

गाममे अपन दरबाजापर जीपसँ उतरि बूढ़ी बड़ीकाल धरि ह्वीलचेयरपर बैसल रहलीह । हुनकर छोटकी बेटी लगमे ठाढ़ि रहनि। मुदा घरसँ केओ बाहर नहि भेल । केओ बैसए नहि कहलकनि । माएकेँ देखि तेना सन कए लेलक जेना हुनका चिन्हितो नहि होनि, जेना ओ केओ आन होथि । थोड़े कालक बाद हरीश साइकिलपर चौक दिस चलि गेल । बूढ़ी बड़ी काल धरि मकान दिस तकैत रहलीह । जेना ओ पुछि रहल होथि-“हमर घर कतए गेल?”मुदा अपन कोठरी कतहु नहि देखाइनि । रहि-रहि कए हुनकर आँखिसँ नोर बहि रहल छलनि। बितल बातसभ एक-एक कए मोनमे आबि रहल छलनि । केना-केना कए ओ एहि घरकेँ बनओने रहथि । कतेक मोसकिलसँ हरीशक पालन केने रहथि । ओकर स्वास्थक हेतु कतेको बेर कबुला-पाती केने रहथि । सएह हरीश आइ एहन भए गेल । ओ आकाश दिस तकैत रहलीह । लगमे ठाढ़ि छोटकी बेटी हुनकर आँखिकेँ पथराइत देखलकनि । ओकरा नहि रहल गेलैक । ओ भोकासी पारि कए कानए लागलि। ओकर चित्कार सुनि कए गौंवासभ दौड़ल । चारूकातसँ ओहिठाम पहुँचए लागल। ओहीमेसँ केओ हुनकर नारी देखलकनि । कतहु किछु नहि भेटलैक । ओ बाजि उठल-" बूढ़ी चलि गेलीह ।” बूढ़ी ठामहि बामा कात टगि गेलीह । ताबतो हरीश नहि आएल । लोकसभ बड़ी काल धरि ओकर बाट तकैत रहल । गौंवासभ आब कनीको विलंब करबाक पक्षमे नहि छल । ओएहसभ बूढ़ीक लासकेँ ह्वील चेयरसँ उतारलक आ जमीनपर उत्तर मुँहे पाड़ि देलक। बूढ़ीक छोटकी बेटीकेँ नहि रहल भेलैक । ओ आगू आबि बाजि

उठलि –“हम माएकेँ आगि देब।” ओ आगू-आगू आ गौंवासभ पाछू-पाछू बूढ़ीक लास लेने हुनकर अंतिम संस्कार हेतु बिदा भए गेल।

11.11.2021

****

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)
https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।